विचार चिंतामणि

डॉ० लक्ष्मण झा

मिथिला मण्डल, दरभंगा

विचार-चिंतामणि

डॉ० लक्ष्मण झा

पी-एच०डी० (लण्डन)

संकलन एवं सम्पादन

डॉ० सुरेश्वर झा

प्रकाशक

मिथिला मण्डल

दरभंगा

प्रकाशक :
मिथिला मण्डल
दरभंगा

प्राप्ति स्थानः
डॉ० सुरेश्वर झा
2/बी, राज कुमार गंज
दरभंगा - 846004

प्रथम संस्करण
प्रकाशन वर्ष : 2002
प्रति : 500

मूल्य : 75.00

अक्षरांकन एवं मुद्रण :
एकेडमी प्रेस
दारागंज, इलाहाबाद
फोन नं० : 500970



डॉ० लक्ष्मण झा

जन्म : 5 सितम्बर, 1916

निधन : 23 जनवरी, 2000

प्राक्कथन

जखन हम केन्द्रीय साहित्य अकादेमीक सदस्य रही, ओही समयमे प्रो० रामदेवझा आओर डॉ० भीमनाथ झाक विचार भेलनि जे डॉ० लक्ष्मण झा मैथिली गद्य मे जेकिछु लिखने छथि तकर एक गोट संकलन प्रकाशित कऽ पाठकक समक्ष प्रस्तुत हैब अत्यन्त आवश्यक अछि। ओ मैथिली गद्यसाहित्यक एक गोट अपूर्व निधि साबित होयत। साहित्य अकादेमीक कार्यमे हम पाँच वर्ष 1993 सँ 1997 धरि तेतक अधिक व्यस्त रहलहुँ जे ओहि अवधिमे ओ कार्य सम्पादित नहि कऽ सकलहुँ। परञ्च एतेक अवश्य कयलहुँ जे डॉ० लक्ष्मणझाक गाम रसियारी जाकय उक्त संकलन करबाक एवं ओकरा प्रकाशित करबाक अनुमति हुनकासँ 9 जनवरी 1996 इ० कैं लऽ लेलहुँ। एहि सम्बन्धमे हुनक स्वीकृति लेब एहि लेल आवश्यक छल जे ओ अपन जीवन-कालमे अपन कोनो पोथी, पाछाँ आबिकए, प्रकाशित नहि करबय चाहैत छलाह। एहि सम्बन्धमे जखन कहियो पुछने हेबनि तँ कहथि जे ''हमर देहान्तक बाद पोथी सबहक प्रकाशन हमर 'ट्रस्ट' करत।'' एहि विषयमे हुनका संग तर्क-वितर्क करब संभव नहि छल। प्रस्तावित संकलनक हेतु हम हुनकासँ निवेदन केलियनि जे ओकर भूमिका लिखि देथिन। कहलनि जे अहाँ अपनहि भूमिका लिखि देबैक। हम पुनः कहलियनि जे अपने लिखा देबैक, हम लिपिबद्ध कऽ देबैक। ताहि पर डॉक्टर साहेब चुप भऽ गेलाह। हम पुनः कहलियनि जे कम सँ कम अपन संस्मरण जे अंगरेजी मे लिखने छियैक से हमरा दऽ दीअ। ओकर प्रकाशन बहुत आवश्यक आ महत्वपूर्ण छैक। कहलनि जे जखन मैथिली गद्यवला संकलन प्रकाशित भऽ जाएत तखन अपन 'मेम्याअर्स' (संस्मरण) सेहो दऽ देब।

ई अत्यंत खेदक विषय अछि जे ई कार्य हम हुनक जीवन कालमे नहि कऽ सकलहुँ। ई आशा नहि छल जे ओ एतेक शीघ्र अपन अनन्त यात्रापर विदा भऽ जयताह। हुनक देहावसानक बाद दरभंगामे साम्यवादी दलक विख्यात नेता श्री भोगेन्द्रझा ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालयक शिक्षकेतर कर्मचारी संघक कार्यालयक प्राङ्गण मे एक गोट शोकसभा आयोजित कयलनि, जकर अध्यक्षता करबाक लेल हमरा कहल गेल। हम अपन भाषणमे बजलहुँ जे डॉ० लक्ष्मणझाक लिखल गद्य साहित्यक एक संकलन हमरा शीघ्र करबाक अछि। एहि ठाम उपस्थित दरभंगाक लोकप्रिय राजनीतिक ओ सामाजिक नेता आ कार्यकर्ता लोकनिक सहयोग ओकर

प्रकाशनक लेल अपेक्षित अछि। तत्कालीन सोशलिस्ट पार्टीक उमीदबारक रूपसँ 1952 इ०क प्रथम आमचुनाव मे दरभंगा पूर्वी संसदीय क्षेत्रसँ चुनाव हारि गेलाक बाद डॉ० लक्ष्मण झा 1952-53 इ० मे चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे किछु समय धरि इतिहास विभाग मे व्याख्याता पदपर रहलाह। ओही अवधिमे ओ 1952 इ०क 15 दिसम्बर सँ 1953 इ० क 10 अगस्त धरि 'मिथिला' नामक मैथिली साप्ताहिक प्रकाशित ओ सम्पादित कयलनि। दरभंगामे हुनके द्वारा संगठित 'मिथिला मण्डल' ओकर प्रकाशक छल।

एहि संकलनमे 'मिथिला' मे प्रकाशित ओ डॉ० लक्ष्मणझा द्वारा लिखित समस्त सम्पादकीय, टिप्पणी एवं अन्य आलेख तथा हुनका द्वारा लिखित किछु आओरो मैथिली निबन्ध संकलित अछि। विभिन्न स्रोत सँ खोज कयलाक बादो हमरा एकर अतिरिक्त हुनक मैथिली गद्यक कोनो रचना उपलब्ध नहि भेल। हुनक ई सभ मैथिली गद्यक रचना आइयो ओतबे प्रासंगिक अछि जतेक बीसम शताब्दीक पाचम दशकक प्रारंभिक कालमे छल। ओ सभ शिक्षाप्रद, टटका ओ स्फूर्तिदायक तँ अछिहे, संगहि ओहि सँ एक गोट नव स्वाद एवं सुगंध पाठक कें प्राप्त होइत छैक जे दोसर ठाम भेटब असंभव। डॉ० लक्ष्मण झा मैथिली मे अधिक नहि लिखलनि अछि, मुदा जेकिछु लिखलनि ताहिमे हुनक गद्य विलक्षण छनि। एहि आलेख सभक अतिरिक्त ओना हुनक पाण्डुलिपिक सूची मे मैथिली मे छौ गोट पोथीक नाम भेटल अछि, मुदा ओकरा देखबाक अवसर नहि भेल अछि। ओहि पांडुलिपिक नाम परिशिष्ट मे देल गेल अछि।

'मिथिला'क प्रवेशांक मे प्रकाशित 'निवेदन' मे डॉ० लक्ष्मण झा एहि पत्रक उद्देश्य कें फरिछबैत लिखैत छथि;-

> **'मिथिला'क कार्य रहत समाजक हेतु उपयोगी समाचारक निष्पक्षरूपें संग्रह ओ प्रकाशन; विज्ञान साहित्य ओ कला सम्बन्धी ज्ञानक प्रसार; भाषाक आधार पर भारतक प्रान्त-विभाजनक हेतु आन्दोलन; दुर्गत भारत मे पर्याप्त अन्न, वस्त्र, घर आदि भेटै ताहि हेतु समाजवादक आधारपर राजकीय व्यवस्था हो तकर प्रयास; एवं एहि संघर्षशील विशाल संसारमे भारतीय जीवन स्वस्थ, सबल ओ निर्भय हो तदर्थ महान चीन, रूस आदि भूस्वर्ग जनराज्यक संग मैत्री-बन्धनक सतत आयोजन।''**

एहि पत्रक उद्देश्यमे मिथिलाक उत्थानक संग-संग सम्पूर्ण राष्ट्रक आर्थिक,

सामाजिक, राजनीतिक ओ वैदेशिक नीतिक विकास तथा विश्व मे भारत कें सबल ओ महान बनेबाक परिकल्पना अछि। 'मिथिला'क प्रकाशनसँ पूर्व मैथिली भाषा मे प्रकाशित कोनो दोसर पत्र-पत्रिकाक उद्देश्य एतेक व्यापक एवं महिमामंडित नहि भटैछ। एहि पत्रक प्रकाशनक लेल डॉ० लक्ष्मण झाकें प्रेसक सुविधाक संगहि आवासक व्यवस्था सेहो छलनि। लहेरियासरायक स्टेशनक पूब स्थित 'बाबूसाहेब कॉलोनी' मे, जे स्वनामधन्य चन्द्रधारी बाबूक छलनि, डॉ० लक्ष्मण झा रहैत छलाह। परञ्च ई स्थिति अधिक दिन धरि नहि रहि सकलनि आ 'मिथिला' 1953 इ०क 10 अगस्तक प्रतिक प्रकाशनक बाद बन्द भऽ गेलनि।

'मिथिला' मे प्रकाशित डॉ० लक्ष्मण झाक सम्पादकीय, टिप्पणी एवं अन्य आलेखकें हम आठ गोट भाग मे विषयक आधार पर बाँटल अछि;-जेना (1) मातृभाषा तथा मिथिलाक भाषाधारप्रान्त, (2) भारतक अन्य देश सबहिसँ सम्बन्ध, (3) राष्ट्रीय नेता एवं महान व्यक्तिक संस्मरण-श्रद्धांजलि, (4) स्वतंत्रता आन्दोलन, (5) स्वातंत्र्योत्तर भारतक राष्ट्रीय समस्या, (6) विभिन्न राजनीतिक दल, (7) शिक्षा एवं शैक्षणिक व्यवस्था (8) विविध।

एहि ठाम संकलित समस्त आलेख मे मुख्य स्वर अछि मिथिला ओ मैथिली। मिथिलाक सर्वांगीण विकास तथा मैथिलीभाषा-साहित्यक ओकर गौरवशाली इतिहासक अनुकूल समृद्धि करब डॉ० लक्ष्मण झाक अपन जीवनक सर्वोच्च उद्देश्य छलनि। ओहि उद्देश्यक पूर्तिक लेल ओ अपन समस्त जीवन कें समर्पित कयने रहलाह। डॉक्टर साहेब अपन वैयक्तिक सुख ओ सुविधाक लेल ने किछु सोचलनि आ ने किछु कयलनि। जीवन भरि अविवाहित रहि महात्मा गांधीक पद-चिह्नपर चलैत अपन महान उद्देश्यक प्राप्तिक हेतु संघर्ष करैत रहलाह।

'विचार-चिंतामणि'क संकलन करबामे हमरा सभसँ अधिक सहयोग एवं सहायता डॉ० भीमनाथ झा सँ भेटल, जे 'मिथिला' साप्ताहिकक समस्त अंकक फोटो कापी एकेठाम जिल्द बान्हल हमरा उपलब्ध करौलनि आ एहि संकलनक प्रकाशनक लेल चरिअबैत रहलाह। हुनक सहयोगक बिना ई पोथी अपन आकारें नहि लऽ सकैत। हुनका प्रति हम अपन आभार प्रकट करैत छी।

डॉ० लक्ष्मण झा पर अपन संस्मरण लिखबाक लेल, जाहिसँ एहि पुस्तकक महत्व अत्यधिक बढ़ि गेलैक, हम ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालयक संस्थापक कुलपति डॉ० मदनेश्वर मिश्र तथा कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक पूर्व कुलपति डॉ० जयमन्त मिश्रक प्रति अपन हार्दिक आभार व्यक्त करैत छी।

'विचार-चिन्तामणि'क संकलन आ सम्पादनमे पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आ प्रो० जटेश्वर झा 'जटिल'क सुझाव एवं सहयोगक लेल हुनका लोकनिक प्रति आभारी छी। एहि पोथीक प्रकाशनमे आर्थिक सहयोगक लेल विशेषरूपसँ हम डॉ० शिव कुमार मिश्रक प्रति अपन आभार प्रकट करैत छी।

डॉ० लक्ष्मण झाक भाइक पौत्र डॉ० जितेन्द्रझा जतेक अधिक सहायता हमरा कयलनि, ताहि लेल हुनका आशीर्वाद देबाक लेल हमरा शब्द नहि भेटैत अछि।

'विचार-चिंतामणि'क प्रकाशनक सभटा श्रेय डॉ० किशोरनाथ झाकेँ छनि। हुनक सहयोगक बिना कम समयमे एहि पोथीकेँ प्रकाशित होएब संभव नहि छल।

सुरेश्वर झा

2/बी, राजकुमारगंज
दरभंगा-846004
15 अगस्त 2002.

प्ररोचना

कीर्तिर्यस्य स जीवति

डॉ० लक्ष्मणझा, मिथिलावासीक आदरणीय लखन जी, मिथिलाक ओ विभूति, भारतक ओ सपूत छलाह जकरा पर मिथिले नहि सम्पूर्ण भारतके गौरव छैक। ओ सात्त्विक गुणक साकार रूप ओ सात्त्विक विचारक मूर्तिमान स्वरूप छलाह। हुनक आहार-व्यवहार तथा वेश-भूषा सर्वथा सात्विक छलनि। साफ स्वच्छ धोती आ उज्जर दपदप तौनी हुनक मुख्य परिधान छलनि, जे भव्य भालक अधोभाग छरहर देह मे बहुतनीक लगैत छलनि।

स्वच्छ विचारक अनुरूप व्यवहार हुनक जीवन-पद्धतिक विशिष्ट अंश छलनि। अपन सिद्धान्तक विपरीत दोसर विचार सँ समझौता नहि करब हुनक अभ्यास छलनि।

हमर अग्रज प्रख्यात अभियन्ता प्रो० राजेन्द्रमिश्र आ डा० झा समवयस्क छलाह। दूनू व्यक्ति 1949-50 ई० मे उच्च शिक्षा-प्राप्तिक हेतु, संगहि लन्दनमे रहैत छलाह। डा० झा पी-एच०डी० डिग्री लए लन्दन से अपन देश वापस आबिरहल छलाह। हम ओहि समय पटना विश्वविद्यालयमे छात्र छलहुँ।

भैया पत्र सँ सूचित कएलनि जे लखन जी पटना पहुँचिरहल छथि। कंचन भवनमे डा० सुभद्रझाक संग ठहरताह। हुनकासँ सविस्तर समाचार ज्ञात होएत।

प्रायः 50 ई० क जनवरी छलैक। बारह बजे दिन मे हम डा० झा सँ भेटकरबाक हेतु कंचन भवन गेलहुँ। डा० झा बाहर रौदमे पटिया पर बैसल, भीतर पाकक्रिया मे संलग्न डा० सुभद्रझासँ, गप्प कए रहल छलाह। हम पैर छूबि प्रणाम करैत अपन नाम कहलियनि। आउ-आउ कहि स्नेहसँ अपने लगमे बैसौलनि। ई अपन पी-एच०डी०क प्रसंग लन्दन मे अपन गाइडक संग सैद्धान्तिक मतभेद पर बात कए रहल छलाह। एही प्रसंग ई डा० सुभद्रझासँ कहलथिन जे हम अपन गाइड कैं 'हरदी' बजाइएक छोड़लियनि। ओहिना मन अछि, डा० सुभद्रझा कड़छु मे देल कडूतेल, सरिसौ, मिरचाइ के चुलहा पर पटकि, भीतरसँ दौड़ि 'लखनजी अओ लखन जी' बहुत दिनुक बाद हरदी बजएबाक बात अहाँ मुहें सुनल अछि, ई कहैत हुनका भरि पाँज पकड़ि पटियापर बैस गेलाह। किछुकालक बाद कहलथिन जे आलूक साना तैयार अछि, भात भइए गेल अछि। आब चलू

बिनु छौंकले दालिक संग भोजनकए पटनामार्केट चली आ ओतहि अहाँ कैं तौनी कीनि दी। भोजनकए जाबत सुभद्र बाबू गंजी, कुर्ता पहिरि बाहर अएलाह, ओही बीच डा० झा संक्षेपमे लन्दनक समाचार आ भैयाक कुशलादि कहलनि। हुनक उक्तिमे अग्रजक स्नेहक अनुभूति भए रहल छल।

दूनू डाक्टर लगले पटना-मार्केट चललाह। हमहूँ पाछाँ लागल मार्केट धरि अएलहुँ। ओतए एक दोकान पर ''यहाँ सभी प्रकारके वस्त्र मिलते हैं'' एहन साइन बोर्ड देखि ओकरा सँ तौनी मङ्लथिन। प्रायः तौनीक अर्थ नहि बूझि ओ कहलकैन 'नहीं है'। एहिपर दूनू गोटे एकस्वर सँ कहलथिन जे यातँ तौनी आनू या अपन साइन बोर्ड के उठाक फेकू। ई लोकनि तौनी क बदला चादरि माङ्लए तैयार नहि। दोकानदार तौनी बुझैत नहि। अन्ततः ओ अनुनय विनय पूर्वक कलजोड़ि हिनका लोकनिकैं विदा कएलक।

डा० झाक जीवन-यात्रामे विपरीत परिस्थितिक संग समझौता नहिकरबाक हुनक अटल सिद्धान्त हुनका कतहु विशिष्टपद पर स्थिर नहि रहए देलकनि एहि बातक सविस्तर चर्चा डा० सुरेश्वर झा हुनक परिचयक प्रसङ्ग कएने छथि।

हम बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर मे जखन संस्कृत छात्र संघ तथा मैथिली छात्र संघ दूनूक अध्यक्ष छलहुँ तखन दूनू संघक संयुक्त वार्षिक अधिवेशनमे संस्कृत, मैथिली दुहुक ज्ञाता विद्वान कैं अध्यक्षता करबाक हेतु आमन्त्रित करतै छलियनि। ओहिक्रममे एक वेर डा० लक्ष्मणझा अध्यक्षताक हेतु आएल छलाह। विहार विश्वविद्यालयक विद्वन्मण्डलीमे डा० झाक अध्यक्षीय भाषण बहुत विशिष्ट भेल छलनि। मैथिलीक प्रसङ्ग हुनक बहुत उपादेय सुझाव सब भेल छलनि। ओहि अवसर पर मैथिली-कविसम्मेलनमे अनेक मैथिलीक कवि आएल छलाह। हुनक सुझावक बादो कविलोकनि मार्ग-व्ययक रूपमे विदाइ नेने छलाह से डा० झा देखैत छलथिन।

सबकैं गेलाक बाद जखन हुनका मार्ग-व्यय मात्र लेबाक आग्रह कएलियनितँ कने रुष्ट भए ओ कहलनि-''हमरो कविए बूझि लेलहुँ की? हम मौन भए सब सूनि प्रणाम कएलियनि। रिक्शा पर संगमे बैसि बस-स्टेण्डधरि आबि, बसपर चढ़ाए पुनः प्रणाम कए वापस भेलहुँ।

1978 ई० मे जखन ओ 'मिथिला' विश्वविद्यालयक कुलपति छलाह, तखन 18 मार्च, 78 के हम हुनक बेलाक पुरना डेरामे भेट करए गेल छलियनि। 11 बजे दिनक समय छलैक। ओ आङ्नक चापाकलमे चाउर धो रहल छलाह। चुलहापर अदहन खौलाइत छलनि। कहलनि-अहाँ बैसू। हम चाउर लगाक

ओहिमे आलूदए दैत छियैक तखने अहाँ सँ गप्प करब।

हमर जिज्ञासा भरल आँखि देखि ओ कहए लगलाह-विश्व विद्यालयक नोकर, भनसिया के अपन काज नहि करए दैत छियैक। हम कतेक दिन कुलपति रहब तकर कोनो ठेकान नहि। कर्पूरी के कहि देने छियैक जे करवनहु हम छोड़ि देब। एही कारणें कुलपति-निवासमे नहि रहैत छी। मदनेश्वरजी ओहिमे रहि बहुत राहड़ि लगौने छलाह। तैयार होयबासँ पहिने छोड़िक चलगेलाह। हमतैयार कराए, सबटाके उचित मूल्यपर बेचि विश्वविद्यालयक कोशमे जमा करवा देलियैक अछि। हम कहलियनि-अपने जखन वेतनो मे केवल एकेटा रूपया लैत छियैक, तखन और वस्तुक कोन बात।

'हँ, हमर इहोशर्त मानिएकए कर्पूरी हमर नियुक्ति कएने अछि'। जनैछी, आइ कालि, जे मध्यम मार्गी लोक अछि सैहटा कुलपतिक पदपर बनल रहि सकैत अछि। हम जनैत छी जे हम एकभगाह लोकछी। कतेक काल धरि कतए रहब तकर कोनो ठेकान नहि। मन पड़ैत अछि, राजेन्द्र बाबूक संग लन्दनक ओ जीवन। दूनूगोटे ओतए बड़ प्रसन्न रही।

ताधरि चाउर सिद्ध भएगेल छलनि। आलूक साना बनौलनि। हमरो पुछलनि। ओहिदिन दालि नहि बनौने छलाह। आलूक सानाक संग प्रेमपूर्वक भात खएलनि। किछु काल गप्प कए विश्वविद्यालय विदा भेलाह। प्रायः साल भरि रहि, पुष्कर पलाश वन्निलिप्ति, ओ कुलपति पदकेँ त्यागि देलनि।

हम जखन संस्कृत विश्वविद्यालयमे कुलपति छलहुँ, प्रायः 84 ई०क बातथिक, डाक्टर साहेब अस्वस्थ भए दरभंगा मेडिकल कॉलेज अस्पतालक पेयिंग वार्ड मे छलाह। भेट करए जाइत छलियनि। जखन स्वस्थ भए ओतए सँ अएबाक दिन निश्चित भेलनि तँ हम निवेदन कएलियनि जे एतएसँ जएबाकाल हम गाड़ी नेने आएब आ डेरापर पहुँचादेब।

ओ कहलनि-गाड़ी अहाँक अपन तँ नहि थिक। विश्व विद्यालयक गाड़ी सँ ओना जाएब ठीक नहि। कोनो व्यवस्था भए जएतैक। अहाँ केँ एहि हेतु बहुत-बहुत साधुवाद।

अन्तिम भागमे डा० झा मोहनपुरमे एक इष्ट व्यक्तिक डेरामे रहैत छलाह। एकदिन ओतए भेट करए गेल छलियनि। कहलनि जे आइकालि एकमास एतए, एकमास गाममे रहैत छी। गाम गेल छलहुँ। हमर भौजी, जनिका हमरा प्रति बहुत स्नेह रहैत छनि आ पूर्वमे हमर कुलपति रहबाक भावनो रहैतछनि, कहलनि

जे एहिबेर अपना खेतये धान बहुत कम भेल। खेसाड़ी बढ़ियाँ भेल अछि। खेसाड़ी बेचिकए थोड़ेक चाउर लए लैत छी। हम कहलियनि अपना खेतमे जे उपजल अछि हम सैहटा खाएब। खेसाड़ीक रोटी हमरा नीक लगैत अछि। हमर बात मानि ओ खेसाड़ीक रोटी बनबैत रहलीह।

डाक्टर साहेबक एक अन्तरंग मित्रसँ एकदिन हम पुछलियनि-डा० साहेब वैवाहिक जीवनसँ एना विरक्त कियैकरहलाह। ओकहलनि-जखन लखनजीक ओ अवस्था छलनि तँ हुनकासँ ई जिज्ञासा कएने छलियनि। ओ कोनो संस्कृतज्ञक मुहेँ सुनल एक श्लोक सुनौलनि–

'जनितो मनुजो द्विपदस्तु सदा, प्रियया सहितश्चतुरङ्घ्रिरभूत् पशुवत्,
जनितेन सुतेन च षट्चरणो भ्रमतीह पुनर्भुवि षट्पदवत्।
तनयात् तनयः प्रभवेच्च यदा अरूणद्धि स्वयं मकरीकृमिवत्
अधुनापि मनुष्य तनुं विदधत् किमु संभज नन्दसुतं मुनिवत्।।

विवाह सँ पूर्व लोक 'द्विपद मनुष्य' रहैत अछि। पाणि ग्रहणक बाद और दू पैर क संग 'चतुष्पद' पशु-तुल्य भए जाइत अछि। जखन सन्तति होइत छैक तखन और दू चरण जोड़ि 'षट्पद भ्रमर' क समान बनि जाइत अछि। सन्तति सँ जखन सन्तति होइत छैक तखन मकड़ाक जालमे फँसि जाइत अछि। जाधरि मनुष्य-शरीर धारण कएने रहैछ तावतेधरि मुनिजन जकाँ ईश्वरक ध्यान कए सकैत अछि। तपस्वी मुनि जौं नहियो बनि सकी तँ मनुष्यधरि बनल रही, ई अभिलाषा अछि।' एहिसौं डा० झाक मनोभाव केँ जानल जा सकैछ।

'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' जकाँ डॉ० लक्ष्मणझाक जीवन-कथा अनन्त अछि। हुनक जीवन-यात्रामे सबसँ पैघ विशेषता ई देखल गेल अछि जे ओ जाहि सिद्धान्त के मानैत छलाह ओकर अक्षरशः अपन जीवन मे अनुपालन करैत छलाह। ''त्यागात् शान्तिः'' एहि तथ्यकेँ मानि आजीवन त्यागीबनि निष्काम कर्म करैत रहलाह। ''ज्ञानं भारः क्रियांविना'' एकरा बुझैत अपन ज्ञानकेँ व्यवहारमे चरितार्थ करैत रहलाह। कामपर विजय प्राप्त कए क्रोध ओ लोभकेँ निरस्त करैत रहलाह।

''यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्''

एहि सदुक्तिक ओ ज्वलन्त उदाहरण छलाह। एहन त्यागी, तपस्वी, मनस्वी, मनीषीक पुण्य-स्मृतिमे 'विचार चिन्तामणि' क प्रकाशन अत्यन्त श्लाध्य प्रयास थिक। एहिमे डा० झाक मिथिला, मैथिल, मैथिली क उत्थानक दिशा मे सुचिन्तित

विचार संकलित अछि। देशक राजनीति, शिक्षा, दीक्षाक प्रसङ्ग हुनक भावना संगृहीत अछि। हुनक प्रकाशित, अप्रकाशित कृतिक विषयपर सूचना देलगेल अछि। हुनक जीवन-यात्राक सविस्तर प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत कएल गेल अछि। एहिमे हुनक अपन कटु-मधु अनुभवक दिग्‌दर्शन भेटैत अछि।

एतदर्थ डा० सुरेश्वर झाजीकैं शतशः साधुबाद दैतछियनि जे ओ बहुत परिश्रम आ पूर्ण मनोयोग सँ सब सामग्री कैं संकलित कए पुस्तकाकारमे एकरा प्रस्तुत कएने छथि।

विश्वासअछि, वर्तमान संघर्षमय जीवनमे लोक एहि ''चिन्तामणि'' क प्रकाशमे चिन्ता सँ दूर रहबाक प्रयास करत। इतिशम्।

जयमन्त मिश्र

अनन्त चतुर्दशी
12-9-2000

डा० लक्ष्मणझा : एक प्रखर व्यक्तित्व

डॉ० लक्ष्मण झा एक प्रखर आ उच्चकोटिक विद्वान छलाह। ओ मैथिली भाषा, साहित्य, इतिहास आ अर्थशास्त्रक विशेष रूपें अध्ययन कयने छलाह। मैथिली ओ मिथिलाक्षरक लेल हुनका अत्यन्त प्रेम छलनि। ओ पुरातत्वविद सेहो छलाह। 'भारत-छोड़' आन्दोलन मे जेल गेलाह आ ओतयसँ मुक्त भेलाक बाद बिहार सरकारक स्कॉलरशिप पर लन्दन विश्वविद्यालयसँ एम०ए० आ पी-एच०डी० करबालेल ओ इंगलैंड चल गेलाह। 1947 ई० मे ओ एम०ए० आ 1949 ई० मे 'मिथिला एण्ड मगध' विषय पर पी-एचडी० लंदन विश्वविद्यालय सँ कयलनि। तकर बाद ओ स्वदेश वापस भऽ गेलाह। एलाक किधुदिनक बाद ओ पटना विश्वविद्यालयमे अध्यापनक काज कयलनि। 1949 ई० सँ 1952 ई० धरि ओ जायसवाल शोध संस्थान, पटनामे उपनिदेशकक पद पर काज कयलनि। तखन निदेशक छलाह स्वनामधन्य स्व० अल्तेकर। मुदा हुनका सँ डॉ० लक्ष्मण झा कें पटरी नहि बैसलनि। 1952 इ० क प्रथम आम चुनाव मे सोशलिस्ट पार्टीक टिकट पर संसदक लेल चुनाव मे भागलेबाक कारणसँ डा० लक्ष्मण झाकेँ सरकारी सेवा छोड़य पड़लनि। दरभंगा संसदीय क्षेत्रसँ ओ चुनाव हारि गेलाह। तत्पक्षात् किछु दिन ई सी०एम० कॉलेजमे इतिहासक व्याख्याता रहलाह। ओहि अवधिमे ओ 'मिथिला'' नामक मैथिली साप्ताहिकक प्रकाशन प्रारंभ कयलनि। किछु अंकक प्रकाशन भेलाक बाद ई बन्द भऽ गेल।

ई प्रशंसनीय अछि जे लखन जी स्कूलक छात्रक समयसँ साइमन कमीशनक विरोध सँ 1942 धरि स्वतंत्रता आन्दोलनमे पूर्ण सक्रिय रहि भागलेलनि। लखनजी पहिने काँग्रेसमे छलाह आ बादमे सोशलिस्ट पार्टीमे सम्मिलित भऽ गेलाह।

बिहारमे कर्पूरी ठाकुरक नेतृत्व मे जखन सरकार बनल तँ 1977 इ० मे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक नामसँ ललित बाबूक नाम सरकार द्वारा हटा देल गेलैक। ओहि समयमे हम एहि विश्वविद्यालयक कुलपति छलहुँ। हम कुलाधिपतिसँ भेटकए कहलियनिजे ई काज सरकार द्वारा उचित नहि भेल छैक। अपने जँ ललित बाबहूक नाम सरकार द्वारा पुनः जोड़बा सकी तँ ठीक छैक अन्यथा हम सरकारक एहि निर्णयक विरोधमे इस्तीफा दैत छी। अपने एकरा स्वीकार काएल जाओ। राज्यपाल डॉ० जगन्नाथ कौशल सेहो सरकारक एहि फैसलासँ दुखी छलाह। मुदा एक शालीन पदाधिकारी जकाँ सरकारक विरोधमे किछु बाजाथि नहिं। हम तीन दिन निरन्तर राजभवन मे हुनकासँ अपन इस्तीफाक

मंजूरीक हेतु निवेदन करैत रहलियनि। एहि बीच ओ सरकारहुँसँ विचार-विमर्श करैत रहलाह। मुदा हमरा सतत कहैत रहलाह जे भावनामे नहि बहू। अन्ततोगत्वा ओ हमरा जिद्द पर हमर इस्तीफा स्वीकार कएलनि आ हमरे आग्रह पर नव नियुक्त कुलपतिक नियुक्ति-पत्र सेहो हमरहि दऽ देलनि। डॉ० लक्ष्मण झाक नियुक्ति-पत्र लऽ कऽ हम पटनासँ राति मे दरभंगा पहुँचलहुँ। डॉ० लक्ष्मण झाक नियुक्ति-पत्र हम अपन बधाईक संग तत्कालीन रजिष्ट्रार डॉ० शालिकनाथ मिश्रक हाथैं हुनका पठा देलियनि आ हम भिनसरे दरभंगासँ पुर्णिया कॉलेजमे अपन प्रधानाचार्यक पद पर योगदान करबालेल विदा भऽ गेलहुँ।

जखन हम दरभंगामे कुलपति छलहुँ तँ डॉ० लक्ष्मण झासँ हमरा सम्पर्क बनल रहैत छल। कखनहुँ-कखनहुँ ओ हमरा किछु-किछु काजो करयलेल कहथि। एक दिन ओ हमरा टेलिफोन कयलनि जे एकटा डोम श्रीमल्लिक मिथिले विश्वविद्यालय सँ मैथिली मे एम०ए० पास कयने छथि। ई सामान्य बात नहि थिकैक। ओ हमरा कहलनि जे यदि संभव होइतँ विश्वविद्यालयमे हिनकर योग्यता देखि कैं कोनो पद पर नियुक्त कएलेल जाए। हम हुनका आश्वासन देलियनि जें अवसर अयला पर ओहि डोम विद्यार्थीक संग समुचित व्यवस्था कयल जेतैक। समय ऐलापर हुनक नियुक्ति विश्वविद्यालयमे तृतीय वर्गीय कर्मचारीक रूपमे कए लेल गेलनि आ ओ एखन मिल्लत कॉलेज मे प्राध्यापक पद पर नियुक्त छथि। एहि सँ ओ बड़ प्रसन्न भेल छलाह। प्रसन्न एहि कारणे जे समाजक निम्नतम वर्गक लोकक प्रति हमरहु ओहने सहानुभूति छल जेना हुनका छलनि।

किछु दिनक बाद ओ पुनः टेलिफोन कयलनि आ कहलनि जे हुनका पता लागल छनि जे पंचोभ गाम मे हथिया नक्षत्र मे बिहाड़िक कारणैं बहुत घर खसि पड़ल छैक। विश्वविद्यालयक काज हेबाक चाही जे एहेन विपत्तिक समयमे समाजक लोककैं सहायता करय। हम हुनका कहलियनि जे हम हुनक विचार सँ सहमत छी। मुदा पहिने हम ओहि क्षेत्रक एहिसमस्या सँ अवगत भए जाइ तखन हम अपने सँ विचार-विमर्श कए विश्वविद्यालय दिससँ समुचित कार्य करबाकलेल प्रवृत्ति होएब। हम ओही दिन कंसी-सिमरी आ पंचोभ दिस विदा भेलहुँ। हमरा धानक खेतमे किछु काज करैत गृहस्थ आ मजदूर सभसँ भेट भेल। ओ लोकनि हथियाक वर्षा सँ बड़ प्रसन्न छलाह। हम हुनका लोकनिसँ पुछलियनि जे घर सभ जे खसल छैक तकरासँ तँ बर्बादी भेल छैक? ओलोकनि कहलनि जे नहि एहन कोनो नोकसान नहि भेल छैक आ हमहूँ देखलियैक जे एक आधटा लटपटायल घर कतहु-कतहु झटक मे खसि पडल छलैक। ओलोकनि ईहो कहलनि जे हथियाक पहिने जे घर लटपटा जाइत छैक

ओकर मरम्मत नहि कऽ खसबाक हेतु छोड़ि दैत छियैक जे खसलाक बाद ओकरा सांगोपांग उठायब। कहबाक अर्थ ई जे कोनो रिलीफक आवश्यकता नहि छलैक। डॉ० लक्ष्मण झा हमर रिपोर्ट' सँ अत्यन्त प्रसन्न भेलाह। हुनका दोसरो सूत्रसँ पता लागि गेल छलनि जे हथियाक वर्षा सँ कृषकसभ प्रसन्न छलाह। डॉ० लक्ष्मण झा पीड़ित वर्गक दुःख कैं देखि पसीज जाइत छलाह।

यद्यपि ओ हमरा सँ उमेरमे जेठ छलाह मुदा अहू कारणें आदर दैत छलाह जे हम हुनका सँ पहिनहि ललित नारायण मिथिला विस्वविद्यालयक कुलपति भऽ गेल छलहुँ। अनुशासनक सतत पावन्द!

हमर पुत्र डॉ० रत्नेश्वर मिश्र, मिथिला विश्वविद्यालयक स्नात्कोत्तर इतिहास विभागक अध्यक्ष हुनका बहुत प्रिय छलथिन। जखन हम विश्वविद्यालयमे छलहुँ तँ श्रीरत्नेश्वर हमरे संग रहैत छलाह। मुदा हमरा गेलापर हुनका डेराक समस्या भऽ गेलनि। हम डॉ० झाकैं एहि सम्बन्धमे संवाद देलियनि तँ अत्यन्त आत्मीयतासँ ओहि समयमे उपलब्ध एक नीके डेरा हुनका आबंटित कयलथिन। आत्मीयताक निर्वाह मे हुनका कहियो कमी नहि रहलनि।

कुलपति भेलाक किछु दिनक बाद ओ पुर्णिया कॉलेजक निरीक्षण करबाक लेल पुर्णिया गेलाह। हुनका कॉलेजमे पता चललनि जे अस्वस्थताक कारण सँ हम अवकाशपर छी। ई सुनतहिं ओ नवरत्नहातामे अवस्थित हमर आवास पर हमरा देखबाक लेल तुरन्त आबि गेलाह। प्रचंड रौद आ गर्मा छलैक। सुस्तयलाक किछुएकालक बाद कहलनि-''हमरा खीरा खाइक इच्छा होइत अछि। हम भीतरसँ बहुत गर्मीक अनुभव कऽ रहल छी।'' हम कहलियनि जे खीरा तँ हमरा बाड़िये मे अछि आ तुरन्त खीरा काटिकऽ हुनका देल गेलनि। बहुत प्रेम पूर्वक ओ खीरा खयलनि आ किछु देरक बाद कहलनिजे हुनक मोन बिल्कुल शान्त भऽ गेलनि अछि। केहन आत्मीयता! किछु ठहरिकऽ भोजन कयलनि आ भोजनक सामग्री हुनका एहि कारणें बहुत उत्तम लगलनि जे सामग्री सादा आ ताजा छलैक तथा मशालाक कमशँ कम व्यवहार भेल छलैक। ई ओ बेर-बेर बहजलाह। मिथिला विश्वविद्यालयक गणित विभागक अध्यक्ष डॉ० बी०एन० झा सेहो हुनक संग छलथिन। संध्याकाल ओ हमर आग्रह कएलहुँ पर नहि रुकलाह। अपन कार्य-क्रमक अनुसार ओ दर्शनशाह कॉलेजक निरीक्षण करबाक हेतु कटिहार चल गेलाह। हुनक पोशाक छल अत्यन्त साफ धोती आ उज्जर चादरि। एहि सादगीक सोझाँ मे के नहि नतमस्तक भऽ जाएत? एही भेषमे ओ विश्वविद्यालय कार्यालय जाथि, दूर-दराजक कॉलेज-निरीक्षण मे जाथि। हुनक सोच-विचार सेहो सीधा आ स्वच्छ। एहि विलक्षण कुलपति कैं देखि लोकक मोनमे स्वतः श्रद्धा उत्पन्न भऽ जाइक।

किछुए समय बाद विश्वविद्यालयक कुलपति पद सँ ओ हटि गेलाह। मुदा रहन-सहन, बात-चीतमे कोनो अन्तर नहि। तकर बाद ओ पूर्व विधायक प्रेमचन्द्र शास्त्रीक सारामोहनपुरक निवासमे रहय लगलाह। हम जखन दरभंगा आबी तँ हुनक भेट करबालेल ओतय जाइ। ओ बड़ प्रसन्न होथि आ देरतक बैसाकऽगप्प करथि। पुस्तकसँ हुनका बड़ अनुराग छलनि आ हुनकर निजी पुस्तकालयमे मूल्यवान पुस्तकक संग्रह छलनि। हमरा स्मरण अछि जे मिथिला साप्ताहिक पत्रक, जकर ओ सम्पादक तथा प्रकाशक छलाह, सब प्रकाशित अंक कैँ एकठाम जिल्द बन्हाकए हमरा देने छलाह। ओहि पत्रिकाक सामग्री आ विशेष रूपेँ सम्पादकीय लेख सभसँ ई स्पष्ट अछि जे ओ मिथिला आ मैथिलीक प्रचार ओ प्रसारक लेल कोनो त्याग कऽ सकैत छलाह। मैथिल संस्कृति हुनका रगरगमे भीजल छल।

समाज सेवापर हुनका बहुत ध्यान रहनि। ओतँ हमरहुँसँ समाज-सेवा करबाबय चाहैत छलाह, जाहिमे हमरा आपत्ति नहि छल। दरभंगामे हम जखन कुलपति छलहुँ तँ डॉ० अरुण कुमार मिश्रकेँ, जे सी०एम० कॉलेज मे प्राध्यापक छलाह, ओ एहि कारणेँ मानैत छलथिन जे समाज-सेवा सम्बन्धी जे काज ओ हुनका करय कहथिन से ओ सहर्ष आ रुचिपूर्वक करथिन।

हम डॉ० सुरेश्वर झा कैँ हृदयसँ धन्यवाद दैत छियनि जे ओ एहेन ऋषितुल्य व्यक्तिक जीवनक प्रमुख घटना आ विचारक संकलन तैयार कयलनि। हिनकर अध्यवसायिकता आ डॉ० लक्ष्मणझाक मिथिला ओ मैथिलीक प्रेमक लेल हिनकर आदर आ निष्ठा स्तुत्य अछि। 'विचार चिन्तामणि' क संग्रहक लेल हम हुनका पुनः पुनः धन्यवाद दैत थियनि। डॉ० लक्ष्मण झाक स्मृति मे ओ ई एक गोट अनुपम काज कयलनि अछि।

मदनेश्वर मिश्र

कलशस्थापन,

28-9-2000.

अनुक्रम

□□

जीवन-वृत्त

प्रारंभिक जीवन एवं शिक्षा-दीक्षा

डॉ० लक्ष्मण झा संस्कृत, पुरातत्त्व, इतिहास तथा विभिन्न प्राचीन एवं अर्वाचीन भाषाक महान विद्वान तथा अध्येता छलाह। ओ स्वतंत्रता-सेनानी, समाज सुधारक, समाजवादी, सरल जीवन एवं उच्च आदर्श पर चलनिहार एक गोट अनुकरणीय शिखर-पुरुष छलाह। हिनका सन व्यक्तित्वक जन्म सम्पूर्ण दुनियामे मात्र भारतेक भूमि पर भऽ सकैत छैक। एहि देश मे गांधी-युगमे जे किछु महान व्यक्तिक प्रादुर्भाव भेल छलनि, ओहिमे डॉ० लक्ष्मण झा सेहो छलाह। मिथिलाक पावन एवं पवित्र माटि पर एहि शताब्दी मे ओ सर्वोच्च पुरुष छलाह। बीसम शताब्दीक दोसर दशकमे लक्ष्मण झाक जन्म भेल छलनि। ओहि समय मे कांग्रेसक स्थापनाक यद्यपि तीन दशक बीत गेल छलैक, मुदा ताबत काल धरि ओ मात्र 'प्रार्थना आ आवेदन' केनिहार तथा 'ड्राइंग-रूम' मे कुर्सीपर बैसिकय राजनीति मे हिस्सा लेनिहारक संस्था छल। ओना बालगंगाधर तिलक एवं गोखलेसन कर्मठ नेताक उदय सेहो भऽ चुकल छल।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनमे महात्मा गांधीक प्रवेश एक गोट अत्यन्त महत्वपूर्ण घटनाक रूपमे भेलनि। 1914 इ० क जनवरी मे दक्षिण अफ्रिका सँ फिरि अएलाक बाद गांधी जी सर्वप्रथम 1916 इ० क दिसम्बर मे लखनऊ क कांग्रेस अधिवेशन मे उपस्थित भेलाह। ओहि कांग्रेसमे देश भरिक लगभग अढ़ाई हजार प्रतिनिधि सम्मिलित भेलाह। मिथिलांचलक प्रतिनिधि लोकनिमे दरभंगाक बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद, लक्ष्मण प्रसाद, भुवनेश्वर मिश्र, कमलेश्वरी चरण सिंह आ रामबहादुर गुप्त प्रमुख छलाह। ओहिस्मेलन मे बिहार सँ सम्बन्धित दू गोट प्रस्ताव प्रस्तुत हेबाक छलैक। एक गोट छल पटना विश्वविद्यालयक विधेयकक सम्बन्ध मे आ दोसर छल चम्पारणक नीलहा साहेब एवं रैयतक सम्बन्ध मे। चम्पारणक प्रतिनिधिरूपमे राजकुमार शुक्ल, जिनका नीलहा प्लांटक अत्याचारक व्यक्तिगत कटु अनुभव छलनि, लखनऊ गेल छलाह। हुनका महात्मा गाँधी केँ चम्पारण अनबाक आ चम्पारण सत्याग्रह आरंभ करेबाक श्रेय प्राप्त छनि। श्री शुक्लक विषय मे महात्मागांधी अपन आत्मकथामे लिखलनि; **''श्री शुक्ल बिहारक हजार-हजार लोकक ऊपर सँ नीलक कलंककेँ धो देबाक लेल कृतसंकल्प छलाह।''**

एहि समयमे दुनियामे प्रथम युद्ध (1914-18) चलि रहल छल। एहि युद्ध मे कांग्रेस आ गांधी जी इंगलैंड कैँ सहयोग करबाक निर्णय एहि शर्त एवं भरोस पर लेलनि जे युद्धक समाप्ति पर ब्रिटिश सरकार भारतकैँ स्वतंत्रता प्रदान कऽ देत। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक 1917 इ० क अधिवेशनमे भारत मे स्वशासनपर निम्नलिखित प्रस्ताव पारित भेल छल;

''ई कांग्रेस भारत-सचिवक बरतानी सरकार दिससँ एहि घोषणापर संतोष व्यक्त करैत अछि जे सरकारक उद्देश्य छैक भारत मे प्रतिनिधि-शासनक स्थापना।''

भारत-सचिव मान्टेग्यू 10 नवम्बर 1917 कैँ भारत अयलाह। 8 चुलाई कैँ हुनका द्वारा प्रस्तुत सुधार योजना प्रकाशित भेल। एही आधार पर 1919 इ० क विख्यात 'गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट' क निर्माण भेल। एहियोजना सँ राष्ट्रवादी लोकनिकैँ बहुत निराशा भेलनि तथा राष्ट्र भरिमे असंतोषक एक लहरि पसरिगेल। एकरे फलस्वरूप1920-21 क गांधीजीक नेतृत्वमे असहयोग आन्दोलन प्रारंभ भेल।

एही ऐतिहासिक परिवेश आ देशक परिस्थितिमे डॉ० लक्ष्मण झाक जन्म 1916 इ० क 5 सितम्बर याने भाद्र शुक्ल अष्टमी शाके 1838 आ सन् 1324 सालमे दरभंगा जिलान्तर्गत (स्थित) रसियारी गाममे एक गोट कुलीन ब्राह्मण परिवार मे भेलनि। हिनक पिताक नाम छलनि कारीझा आ माय छलथिन कीर्ति देवी। डॉ० लक्ष्मण झा सात भाइ-बहिन मे सभसँ छोट छलाह। ई चारि भाइ छलाह आओर तीन बहिन छलथिन। दोसर बहिनिक विवाह भगवानपुर गाम मे छलनि, जनिक कन्या डा० चन्द्रकला झा प्रख्यात साम्यवादी नेता श्री भोगेन्द्र झाक पत्नी छलथिन। डॉ० लक्ष्मणझाक देहावसानसँ पूर्व दूगोट भाईक मृत्यु भऽ गेल छलनि आ सम्प्रति दूगोट भाई जीवित छथिन, श्री बलभद्रझा आओर शीलभद्र झा।

श्री बलभद्र झा 1997 इ० मे बिहार सरकारक सेवा सँ अवकाश ग्रहण कयलनि आ श्री शीलभद्र झा 1998 इ० मे पघारी मिड्ल स्कूलक प्रधानाध्यापक पदसँ सेवामुक्त भेलाह। ई दुनू गोटे गामे मे रहैत छथि। श्री बलभद्र झा कैँ तीन गोट बालक छथिन; डॉ० अमरेन्द्र झा, जे नेपाल मे कार्यरत छथि, जितेन्द्र झा, जे एम०ए०, पी-एच०डी० कऽ राजस्थानक गंगानगरमे सेन्ट्रल स्कूलमे इतिहासक अध्यापक छथि तथा वीरेन्द्र झा रसायण शास्त्र मे एम०एस०सी० कय नई-दिल्लीक कोनो संस्थान मे 'केमिस्ट' क पद पर कार्य करैत छथि। श्री शीलभद्र झाक बालक श्री धीरेन्द्र झा गामे पर रहि अपन कार्य करैत छथि। डॉ० लक्ष्मण

झा केँ स्नेह आ श्रद्धासँ लोक छात्रावस्थेसँ लखनजी कहैत छनि। एहनो कतोक गोटे मिथिलांचल मे भेटताह जे हुनका लखन जी नामेटासँ चिनहैत छथिन।

लखनजीक प्राथमिक शिक्षा अपन गामेक प्राथमिक विद्यालयमे भेलनि। माध्यमिक ओ उच्च विद्यालयक शिक्षाक लेल हिनक नामांकन मधेपुरक कोरोनेशन हाई स्कूल मे कराओल गेलनि तथा ओकरा छात्रावास मे राखल गेलाह। लखनजी बाल्यकाले सँ मेधावी एवं भविष्णु छलाह तथा अन्य सहपाठी लोकनि सँ भिन्न प्रकारक जीवन-यापन करबाक अम्यस्त भऽ गेल छलाह। पुरना दरभंगा जिलाभरिमे मधेपुर उच्च विद्यालय शिक्षण व्यवस्थाक लेल विख्यात छल। ओहि समयमे समस्त मिथिलाँचलमे हाईस्कूल आंगुरोपर गनबाक योग्य नहि छल। ओहि समयमे मधेपुरक हाईस्कूलक स्थिति कतेक महत्वूपूर्ण रहल हेतैक से स्वतः अनुमान कयल जासकैछ। दरभंगा जिलाक पुबरिया अंचलमे मधेपुर हाई स्कूल नवजागरण अनबाक लेल एक गोट प्रसिद्ध केन्द्र छल। ओहि विधालयक छात्रेक रूपमे लखनजी मिथिला भरि मे एक किंवदन्ती भऽ गेलाह। लखनजीक परिवार मध्यम वर्गक छलनि, जाहि मे सबा सए बिगधा जमीन छलैक, मुदा कोसीक विनाश-लीलासँ ग्रस्त ओतय उपज कम ओइत छलैक।

1937 इ० मे एही मधेपुरक कोरोनेशन हाई स्कूलसँ लखनजी इन्ट्रेंस परीक्षा प्रथम श्रेणीमे पास कयलनि। ओहि समय मे ओहि स्कूलक प्रधानाध्यापक पद केँ सुशोभित कयने छलाह अंगरेजी, संस्कृत ओ मैथिलीक प्रख्यातविद्वान तथा लेखक प्रो० रमानाथ झा। लखनजी रमानाथ बाबूक सभसँ अधिक प्रियछात्र-छलाह। लखनजीक अंगरेजीक लेखनसँ रमानाथ बाबू अचंमित भऽ उठैत छलाह। बादमे रमानाथ बाबू राजदरभंगाक लाइब्रेरीक पुस्तकालयाध्यक्ष तथा सी०एम० कॉर्लजक प्राध्यापक भेलाह। ओ ओहिसमयमे राजकुमार गंज स्थित राजदरभंगाक मकानमे रहैत छलाह, जतय अधिक काल लखनजी आबिकऽ रमानाथ बाबूसँ भेट करैत छलाह तथा कहियो-कहियो हुनका आवासपर टिकियो जाइत छलाह।

1937 इ० मे लखनजी भागलपुरक टी०एन०जे० कॉर्लज मे संस्कृत, तर्कशास्त्र एवं अर्थशास्त्र विषय राखि 'इंटर' मे नामांकन करौलनि तथा 1939 इ० मे प्रथम श्रेणी मे 'इंटरमिडियेट' परीक्षा पास कयलनि। 1941 इ०मे लखनजी पटना कॉलेज सँ संस्कृत मे आँनर्सक संग स्नातक परीक्षा मे प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान प्राप्त कऽ स्वर्णपदक सँ अलंकृत भेलाह। 1941 इ० मे पटना कॉलेजमे एम०ए० मे नाम लिखौलनि, मुदा गांधीजीक नेतृत्वमे स्वतंत्रता आन्दोलनक अन्तिम संग्राम 'भारत छोड़ो' आंदोलनमे 1942 इ० क अंगस्त मे सम्मिलित भऽ गेलाह

आ एम०ए० पास करबाक मार्ग बाधित भऽ गेलनि। एहि आन्दोलनमे सक्रिय भेलाक किछु दिनक बाद गिरफ्तार भऽ जहल चल गेलाह।

जहलसँ मुक्त भेलाक बाद लखन जी बिहार सरकारक 'स्कॉलरशिप' पर लंडन विश्वविद्यालय मे एम०ए० आ पी-एच०डी० करबाक लेल इंगलैंड चल गेलाह। ओतय लंडन विश्वविद्यालय सँ 1947 मे एम०ए० आ 1949 इ० मे 'मिथिला एण्ड मगध' विषय पर पी-एच०डी० क उपाधि प्राप्त कयलनि। हिनक निर्देशक छलथिन डॉ० कैनिथ कॉडिंगस तथा परीक्षक छलथिन डॉ० रॉलिन्सन। ईदुनू गोटे इतिहास एवं पुरातत्त्व विषयक निष्णात एवं विख्यात विद्वान छलाह। 1949 इ० मे लखन जी डॉक्टर बनि भारत घुरलाह आ किछु दिन पटना कॉलेजमे अध्यापन कार्य कयलनि। एहि समय मे लखनजी पटनाक रानी घाट मे स्थित 'गंगामैया' नामक एक साधारण होटलमे रहैत छलाह आ पटना कॉलेजक मुश्लिम होस्टल (आब इकबाल होस्टल) क भोजनागारमे भोजन करबाक लेल अबैत छलाह। रानी घाट सँ एतेक दूर आबि भोजन किएक करैत छलाह, ताहि विषय मे एमहर आबिकऽ एक दिन पुछलियनि तँ कहलनिजे स्मरण नहि अछि। हमहूँ ओहि समय मे पटना कॉलेज क बी०ए० ऑनर्सक क्षात्रक रूपमे ओही होस्टलमे रहैत छलहुँ आ भोजन करैत काल हुनक प्रथम दर्शन भेल आ परिचय बढ़ल, ओना हुनक नाम बहुत दिनसँ सुनैत छलियनि। ओनातँ ओहिसमय धरि आ आइतक मिथिलांचलमे बहुतो गोटे केँ विदेश एवं देशक विश्वविद्यालय सबाहिसँ पी-एच०डी० करबाक सौभाग्य प्राप्त भेलनि, मुदा मिथिलांचल मे डॉ० अमरनाथ झाक बाद दुइये गोटेकेँ डॉक्टरक उपाधिसँ विभूषित विद्वान लोक बुझहैत रहलनि। ई दुनू गोटे छलाह डॉ० सुभद्र झा आ डॉ० लक्ष्मण झा। विधिक विधान एहेन अछि जे इंगलैंड मे किछु दिन ई दुनू गोटे संगहि रहैत छलाह, यद्यपि सुभद्र झा केँ डॉक्टरक प्रथम डिग्री पटना विश्वविद्यालय सँ भेटलनि आ दोसर पेरिस विश्वविद्यालयसँ। ई दुनू मिथिला विभूति एके वर्ष मे छः मासक अभ्यन्तर अपन अनन्त यात्रा पर सेहो विदा भऽ गेलाह।

इंगलैंडसँ फिरला पर लखनजीक जीवन-शैली आ पहिरब-ओढ़बमे बहुत किछु परिवर्तन भऽ गेलनि। जेना हुनका पर लंडनक कोनो जादूक प्रभाव पड़िगेल होनि। लखनजी पैंट-शर्ट पहिरय लागल छलाह तथा अशोक राज-पथक फूटपाथ पर चलैत आ भूजा फँकैत हुनका ओहि समय मे देखल जासकैत छल। एहि सम्बन्ध मे गप ततेक अधिक चर्चित भेल, खास कय छात्रक बीच, जे स्नात्कोत्तर छात्रावासक हिनक एक कनिष्ठ सहयोगी तथा हिन्दीक प्रभावशाली छात्र हिनका

पर ''लंडन का जादू'' नामक हिन्दी मे नाटक लिखलनि आ ओहि छात्रावासक वार्षिक महोत्सवमे ओकर मंचन सेहो कयल गेलैक।

किछु दिनक बाद बिहार सरकारक काशी प्रसाद जायशवाल शोध संस्थान मे लखनजीक नियुक्ति उप-निदेशक पदपर भऽ गेलनि। ओहिठाम निदेशक छलाह डॉ० ए०एस० अल्टेकर, जे पुरातत्त्व विषयक राष्ट्रीय स्तरक ख्याति-प्राप्त विद्वान छलाह। एहि पदपर लखनजी 1949 सँ 1952 धरि रहलाह। बिहार सरकारक स्कॉलरशिप पर उच्चशिक्षा प्राप्त करबाक लेल शर्त छलनि जे वापस अयलापर कमसँ कम पाँच वर्ष धरि बिहार सकारक कोनो उपयुक्त पद पर कार्य करय पड़तनि। मुदा लखनजी तँ ककरो अधीनस्थ रहि नौकरी करबाक लेल बनल नहि छलाह। शीघ्रे डॉ० अल्तेकरसँ खटपट आरंभ भऽ गेलनि। लखनजी जीवन भरि ककरो कोनो मोजर नंहि देलथिन। तँ ओ ओहिठाम रहयनहि चाहैत छलाह। तकर अवसर 1952 इ० मे भेटि गेलनि।1952 इ० क प्रथम आमचुनाव मे लखनजी कैँ सोशलिस्ट पार्टी सँ दरभंगापूर्वी संसदीय क्षेत्रसँ चुनाव मे उमीदवार बनाओल गेलनि। तें उमीदवार बनबासँ पूर्व हिनका सरकारी पदसँ इस्तीफा देमय पड़लनि। पाछू कन्ट्रेक्ट तोड़बाक कारणे हिनका पर बिहार सरकार केश कयलकनि आ सोलह हजार टाका जे हिनका सरकार देने रहनि से लौटबैक लेल कहलकनि। पं० हरिनाथ मिश्र 1952 इ० चुनाव जीति कय डॉ० श्रीकृष्ण सिंहक मंत्रिमंडलमे कैबिनेट स्तरक मंत्री रहथि ओ बीच मे पड़िकय लखनजी कैँ मुक्त करा देलथिन।

सोशलिस्ट पार्टी मे हमरालोकनिकैँ आ खासकय तत्कालीन बिहार सोशलिस्ट पार्टीक प्रमुख नेता सूरजनारायण सिंहक विचार नहि रहनि जे लखन जी शोध-संस्थान छोड़ि चुनाव लड़थि। हमरालोकनिक मान्यता रहय जे लखनजी विद्वान छथि आ हिनका पढ़बा-लिखबा मे अधिक रुचि छनि, तँ ई ओही जगह पर रहि देश ओ समाजक अधिक सेवा कऽ सकैत छथि। परञ्च कर्पूरीजीक विचार छलनि जे लखनजीकैँ संसद सदस्यक रूपमे देशक सेवा करबाक चाही। पार्टीमे कर्पूरीजीक विचार मान्य भेलनिआ डॉ० लक्ष्मण झा चुनाव मे प्रत्याशी भेलाह। प्रथम आम चुनाव मे आ बादो मे पं० जवाहरलाल नेहरूक नेतृत्वमे कांग्रेसक प्रभाव ततेक अधिक छलैक जे बिना कांग्रेसक 'सिंबाल' रहने केहनो लोकप्रिय नेता एवं विद्वान कैँ चुनावमे सफल हैब संभव नहि छलनि आ लखनजी चुनाव हारि गेलाह। अनिरुद्ध सिंह कांग्रेसक उमीदवार छलाह।

एकर उपरान्त लखनजीक 1952-53 मे सी०एम० कॉलेज, दरभंगामे इतिहास

आओर जाहि तरहक भोजन ओ पसन्द करैत छथि से शास्त्रीजीक परिवार मे हुनका लेल बनाओल जयतनि। लखनजी दोसर कोनो आन व्यवस्था नहि देखि 1980 इ० सँ 1994 इ० धरि प्रेमचन्द्रशास्त्रीक घरमे रहलाह। एहि समय मे हिनक नियम रहनि जे एक मास अपना गामपर रहैत छलाह आ दोसर मास दरभंगामे शास्त्री जीक घरमे। लिखब-पढ़ब एहू ठाम पूर्वेजकाँ निरन्तर जारी रहलनि। 1994 इ० मे प्रेम चन्द्रशास्त्रीक मृत्युक उपरान्त लखनजी गामपर रहयलगलाह। एहि बीचमे हिनक अपन निजी पुस्तकालय ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालायक गणित विभागाध्यक्ष तथा अल्पकालीन कुलपति डॉ० बाबू नन्दन झाक आवासपर स्थान्तरित कऽ देल गेलनि। गामपर हिनक भातीज एक गोट पक्का घर हिनकालेल बनबा देलथिन जाहिमे लखनजी अपन जीवनक अन्तिम समय घरि रहैत छलाह आ पुस्तकालय तथा हुनक पाँच दर्जन सँ अधिक पोथीक पान्डुलिपि तथा प्रकाशित-अप्रकाशित निबन्धादि सुरक्षित राखल छनि।

राजनीति ओ स्वतन्त्रता आन्दोलनमे भूमिका

1919 इ० क ब्रिटिश सरकार द्वारा पारित अधिनियमक एक गोट प्रावधानक अनुसार 10 वर्षक बाद भारतमे उत्तरदायी सरकारक प्रगतिक जाँच करबाक लेल एक गोट आयोग नियुक्त करबाक व्यवस्था छलैक। ओही सूत्रकेँ पकड़ि 1927 इ० क 8 नवम्बर केँ बरतानी संसद ओ भारतक तत्कालीन वायसराय लार्ड इरबिन संवैधानिक सुधारक लेल एक उच्चस्तरीय सरकारी आयोग नियुक्ति करबाक घोषणा कयलक। ओहि आयोगक मुखिया एक गोट प्रख्यात अंगरेज साइमन केँ बनाओल गेलनि तथा हुनक सहयतार्थ छः गोट अन्य सदस्य राखल गेलाह। परञ्च ओहि आयोगमे एको गोट भारतीय सदस्यकेँ नहि सम्मिलित करबाक कारणसँ ओहिपर सम्पूर्ण भारतमे रोष प्रकट होयब स्वाभाविके छल। भारतक विभिन्न विचारधाराक प्रतिनिधि संगठन द्वारा एकर भर्त्सना कयल गेलैक। अंगरेजी सरकारक एहि कार्य केँ आत्मनिर्णय करबाक मौलिक सिद्धांतक प्रति अपमान बुझहल गेलैक। फलस्वरूप दिसम्बर,1927 मे मद्रासमे आयोजित कांग्रेसक छियालिसम अधिवेशन मे संकल्प लेल गेलैक जे -''**भारतक स्वाभिमानक रक्षाक लेल एक मात्र मार्ग प्रत्येक चरण मे आ प्रत्येक ढंगसँ आयोगक बहिष्कार मात्र रहि गेल अछि।**''

7 फरवरी 1928 केँ जखन साइमन कमीशन बम्बई पहुँचल तँ ओकरा विरोधमे वहिष्कार स्वरूप अनेक प्रदर्शन कयल गेलैक। देश भरिमे जतय कतहु ई कमीशन गेल, ओकरा कारी झंडा, हड़ताल आ विरोध प्रदर्शन सँ स्वागत

कयल गेलैक। ''साइमन गो बैक'' क नारासँ सम्पूर्ण देश गुंजायमान भऽ गेल। असहयोग आन्दोलनक स्थगन सँ ठंढा पड़ल देश ठीक छः वर्षक बाद एक बेर पुनः गरम भऽ उठल। जनताक मध्य एक अपूर्व उत्साह अयलैक। 12 दिसम्बर 1928 कैं साइमन कमीशन बिहारक राजधानी पटना पहुँचल। ओकरा विरोधमे प्रदर्शन करबाक लेल दूर-दूरसँ प्रदेश भरिक आयल लोक जमा भऽ गेल। ओहि प्रदर्शन मे लगभग तीस हजार लोक छल। डॉ० लक्ष्मण झा ओहि साइमन कमीशनक वहिष्कार करबाक कार्यक्रम मे स्कूली छात्रक रूपमे भाग लेलनि। भारतक स्वतंत्रता आन्दोलन मे हिस्सा लेबाक ई हिनक प्रथम अवसर छलनि। लखनजी एहिमे गिरफ्तारो भेलाह, मुदा छोट अवस्था रहलाक कारणे छोड़ि देल गेलाह। स्वतंत्रता-आन्दोलनमे साइमन-कमीशनक वहिष्कार आ विरोध एक गोट मीलक पाथर साबित भेल।

आब गांधीजी पूर्णस्वतंत्रताक मांग करबाक लेल अपन मन बनालेने छलाह। 1929 इ० क अंतमे लाहौरक ऐतिहासिक कांग्रेस रावीक तट पर आयोजित भेल। ओहिमे पूर्ण स्वाधीनताक प्रस्ताव स्वयं गांधी जी प्रस्तुत कयलनि आ ओ प्रस्ताव पं० जवाहर लाल नेहरूक अध्यक्षता मे पारित भेल छल। ओहि प्रस्ताव मे अन्य बातक संग कहल गेल जे;-''**ई कांग्रेस...................अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी कैं एकर अधिकार दैत अधि जे ओ जतय कतहु बूझाए सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरंभ करय। ओकरा अन्तर्गत करबन्दी अभियान सेहो चलाओल जा सकैत अछि।**''

15 फरबरी 1930 कैं कांग्रेस कार्यसमितिक एक ऐतिहासिक बैसार अहमदाबादमे भेलैक आ ओहिमे स्वतंत्रता प्राप्तिक हेतु सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ करबाक प्रस्ताव पास भेलैक। महात्मा गांधी तथा अहिंसा मे विश्वास केनिहार अन्य गोटे कैं अधिकृत कयल गेलनि जे ओ जखन आ जहिया उचित बुझथि आन्दोलन आरम्भ करथि। गांधीजी 'डांडी मार्च' कऽ नोनकानून भंग करैत सत्याग्रह करबाक अपन निर्णय लेलनि। गांधीजी लिखलनि; ''**1920 क आह्वान तैयारीक आह्वान छल। आइ ई अन्तिम संघर्षमे लागि जयबाक आह्वान अछि।**''

नोन कानून भंग करबाक आन्दोलन सम्पूर्ण देशमे प्रारंभ भेल। ओहि 1930 इ० क सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे लखनजी भाग लेलनि आ 1931 इ० मे ओ दरभंगा शहरक नाका नम्बर पाँच लग गिरफ्तार भऽ जहल गेलाह।

सविनय अवज्ञा आन्दोलनक समय मे देशमे किछु एहेन घटना घटल,

जाहिसँ सम्पूर्ण राष्ट्र शोक संतप्त भऽ उठल।6 फरबरी, 1931 इ० कैँ देशक एक महान नेता पं० मोतीलाल नेहरूक लखनऊ मे देहावसान भऽ गेलनि। पुनः 23 मार्च, 1931 क राति मे सरदार भगत सिंह, राजगुरू आ शुकदेव कैँ लाहौर जहलमे फाँसीपर लटका देल गेलनि। एहि दोसर राष्ट्रीय आधातसँ देशभरि मे क्षोभ एवं रोषक एक लहरि उठि गेल। एही दुनू घटनाक बीचमे 5 मार्च 1931 कैँ नई दिल्ली मे गाँधी-इरविन पैक्ट भेलैक। देश चाहैत छल जे एहि पैक्ट मे भगतसिंह ओ हुनक दूगोट साथीक फाँसीक सजाए कैँ आजन्म कारावासमे बदलि देबाक लेल गांधीजी एक शर्त राखथि। परञ्च हिंसा-अहिंसाक सिद्दांतक झमेलमे से संभव नहि भऽ सकल।

पूर्णतया शोकसंतप्त ओ तनावपूर्ण एही स्थिति मे 29 मार्च सँ 31 मार्च 1931 धरि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक पैतालिसम अधिवेशन सरदार बल्लभ भाई पटेलक अध्यक्षतामे कराँचीमे आयोजित भेल। सम्मेलनमे बहुतो प्रतिनिधि लोकनि भगतसिंह आ हुनक सहयोगी लोकनिक फाँसी-सँ शोकाकुल भऽ बाँहि पर करिया कपड़ाक बैज लगाकऽ उपस्थित भेल छलाह। कांग्रेसक ई अधिवेशन पं० मोतीलाल नेहरू सन राष्ट्रक अनुपम नेताक मृत्यु सँ सेहो विह्वल छल।

भावी कांग्रेसक नीति निर्धारण करबाक लेल जहलसँ बाहर आयल प्रमुख कांग्रेसी लोकनिक एक गोट सम्मेलन12-13 जुलाई, 1933 इ० कैँ पूनामे भेल। गाँधीजीक विचारसँ कांग्रेस सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित करबाक निर्णय लेलक, मुदा व्यक्तिगत रूपसँ सविनय अवज्ञा करबाक अनुमति देल गेलैक। हरिजन कार्यक लेल 1934 मे गांधी जी मिथिलांचल आ बिहारक अन्य क्षेत्र मे यात्रा करबाक निश्चय कयने छलाह। मुदा 1934 इ० क 15 जनवरी कैँ दू बजे अपराह्ण मे बिहार मे भीषण भूकम्प भेलैक। ओहिमे बीस हजारसँ अधिक लोक हताहत भेल। हजारो वर्गमील मे विध्वंसक लीलाक तांडव भेलैक। प्रकृतिक प्रकोपक विध्वंस लीला वर्णनातीत छल। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कैँ 17 जनवरी कैँ हजारीबाग जहल सँ रिहा कयल गेलनि आ ओ भूकम्प-पीड़ित लोकक लेल राहत कार्य मे जुटि गेलाह। हुनका अध्यक्षता मे 'बिहार सेंट्रल रिलीफ कमिटी' गठित भेलैक आ ओहि माध्यमसँ कांग्रेसी लोकनि एहि लोक कल्याणकारी यज्ञ मे पूर्ण रूपेण सक्रिय भऽ गेलाह। आम जनतासँ सम्पर्क करबाक तथा ओकर सेवा करबाक एक अवसर कांग्रेस कार्य-कर्ता ओ नेता लोकनि कैँ भेट गेलनि, जे कोनो आन प्रकारक आंदोलन सँ अधिक प्रभावी साबित भेल।

लखन जी एहि कमिटीक एक गोट प्रमुख सदस्य बनाओल गेलाह। ई

ज्ञातव्य थिक जे ओहि समय मे ओ हाईस्कूलेक छात्र छलाह। 1930-31 इ० क सविनय अवज्ञा आंदोलनमे प्रभावी ढंगसँ भागलेनिहार लखनजी कांग्रेसी नेता एवं कार्यकर्ताक बीच सुपरिचित भऽ गेल छलाह। ओही कारणसँ ओ 'रिलीफ कमिटी'क सदस्य बनाओल गेलाह। छात्रावस्थे सँ लखनजी ततेक तेज आ कर्मठ छलाह जे कोनो राष्ट्रीय महत्वक कार्यक लेल सक्रिय बनवामे हुनका कोनो बाधा नहि होइत छलनि। राहत कार्य मे सक्रियता अनबाक लेल तथा ओकरा राष्ट्रीय स्तरक महत्व देबाक हेतु एहि समयमे गाँधीजी आ पं० जवाहर लाल नेहरू बिहारक यात्रा कयलनि।

राष्ट्रीय आन्दोलनक समय मे लखनजीकेँ बिहार कांग्रेसक मुख्यालय सदाकत आश्रम मे कार्य सम्पादन करबाक अवसर भेटलनि। जखन ई कार्यालय सरकार द्वारा 'सील' कऽ देल गेलैक आ पटनाक रमनारोड स्थित 'पीली कोठी' मे बिहार कांग्रेसक गुप्त कार्यालय चलैत छलैक, ततहु लखनजी कार्यालयक कार्य मे सक्रिय छलाह। फलस्वरूप लखनजी केँ डॉ० राजेन्द्र प्रसादसँ परिचय भऽ गेल छलनि।

बियालिसक अगस्त क्रांतिमे लखनजी स्नात्कोत्तर कक्षाक छात्र छलाह आओहि क्रांति मे पूर्ण सामर्थ्यसँ हिस्सा लेलनि। 8 अगस्तक राति मे बम्बई मे ''भारत-छोडू'' आन्दोलन प्रस्ताव पास भेलैक आ प्रातः काल अहल भोरे मे ओतय कांग्रेसक सभ प्रमुख नेता लोकनि गिरफ्तार भऽगेलाह। बिहारक सर्वोच्च नेता डॉ० राजेन्द्र प्रसाद अधिक दुखीत पड़ि गेलाक कारणसँ बम्बईक बैसारमे नहि जासकल रहथि। हुनका 9 अगस्त कें भोरे मे पटनाक कलक्टर आर्चर सदाकत आश्रम मे गिरफ्तार कऽ लेलकनि।

9 अगस्त केँ युवक आ छात्रलोकनिक जे जुलूस हार्डिंज रोड तथा किंग जॉर्ज एवेन्यू (आबदेशरत्न मार्ग) देने गवर्नर हॉउस पर प्रदर्शन करबाक लेल गेल छल, तकर नेतृत्व लखन जी अपन सहयोगी छात्रनेता अंबिका प्रसाद सिंह तथा सूर्यदेव सिंहक संग कयलनि। बादमे अंबिका बाबू बिहार विधान सभाक सदस्य तथा विहार सरकारक मंत्री बनलाह आओर सूर्यदेव सिंह बाढ़ कॉलेजक प्रधानाचार्यक पद कें सुशोभित कयलनि। ओहि दिन संध्याकाल बाँकीपुर मैदान (वर्तमान मे गाँधी मैदान) मे दस हजार लोकक आम सभा भेलैक। ओहिमे निश्चित भेलैक जे स्कूल ओ कॉलेज पर धरना मजबूत कएल जाय तथा कचहरी, सरकारी भवन एवं सेक्रेटेरियट पर राष्ट्रीय झंडा फहराओल जाय। पटना सीटीक आन्दोलनकारी लोकनि मंगल तलाब पर सभा कयलनि। बाँकीपुर मैदानक सभामे छात्रक नेतालोकनिमे लखनजी प्रमुख छलाह।

10 अगस्त 1942 कैं बिहार प्रदेशक कांग्रेस कमिटीक तत्कालीन अध्यक्ष धरनीधर सिंहक निवासस्थानपर कांग्रेसक बैसार मे लखनजी कैं सर्वसम्मति सँ बिहार प्रदेशक आन्दोलन-संचालनक महासचिव बनाओल गेलनि।

11 अगस्तक दिन बिहारक लेल भारतीय स्वतंत्रता संग्राममे एक गोट ऐतिहासिक दिवस बनिकऽ आएल। ई वीरतापूर्ण शहादतक दिन छल। खासकय युवावर्ग एवं छात्रसमुदाय आइ अपन आहुति देबाक लेल उधत छल। महाभारतक अभिमन्यु आइ पुनः एक बेर वर्तानियाँक महारथीक बीचसँ निकलि पटना सेक्रेटेरियट पर राष्ट्रीय झंडा फहराय अंगरेजकैं भारतक धरती छोड़बाक लेल मजबूर कऽ देबाक प्रण कऽ चुकल छल। पटनाक 'मेनरोड' (वर्तमानमे अशोक राजपथ) आ लोअर रोड' (वर्तमानमे बाकरगंजरोड) पर अंगरेज सैनिक दल अहल भोरेसँ गस्ती लगारहल छल।

आजुक कार्यक्रममे सम्मिलित हेबाक लेल राजधानीक विभिन्न स्थानपर छात्रलोकनिक टोली संगठित भऽ रहल छलैक। लगभग दू बजे अपरान्ह मे हजारक हजार संख्यामे छात्र, युवक आ अन्यलोक पटना सचिवालयक पुबरिया फाटक पर पहुँचबाक हेतु जुलूस मे विदा भेल। नेतृत्व करबामे लखनजी प्रमुख छलाह। मुदा रस्तेमे हुनका मलेरिया ज्वर दबोचि लेलकनि आ ओ फिर गेलाह। से नहि होइतनि तँ ओहि दिनक गोली काण्ड मे सप्तर्षिक संग लखनजी सेहो शहीद भऽ गेल रहितथि।

सचिवालयक फाटक पर प्रथम टोली पहुँचल स्कूली छात्रक। ओहिमे आमजनताक लोक सेहो सम्मिलित छल। लगभग सबा दू बजे अपराह्न मे ई टोली सेक्रेटेरियटक पुबरिया फाटकक पाया पर राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहरेबामे सफल भऽ गेल। तदुपरांत कॉलेजिया छात्रक टोली सेहो ओतय पहुँचि गेल। सभ मिलिकय अढ़ाइ घंटा धरि सशस्त्र पुलिस तथा घोड़सबारक संग सेक्रेटेरियटक हाताक अन्दर मुख्य भवनक ऊपर झंडा फहरेबाक लेल युद्ध करैत रहल। पुलिस आई०जी० आ डी० आई० जी० सेहो ओतय उपस्थित रहथि। कलक्टर आर्चर छात्रलोकनिकैं बुझेबाक प्रयत्न कयलनि, मुदा से व्यर्थ भेलनि। छः गोट छात्रकैं हाथ मे झंडा नेने गिरफ्तार कयल गेलैक। मुदा ओहिसँ छात्रक जोशमे कोनो कमी नहि अयलैक। ताबतधरि तीन-चारि सए छात्र झंडाक संग भीतर प्रवेश कऽ चुकलछल। पाछूबाटे चढ़िकऽ सेक्रेटेरियटक भवनपर छात्र झंडा फहरेवामे सफल भऽ गेल। तखन आर्चरक आदेश पर निहत्थ स्कूली छात्र पर चारि बाजिकय संतावन मिनट पर तेरह चक्र गोली चलाओल गेल। ई कांड कयलक

अंगरेजी शासनक सभसँ अधिक खरखाह गोरखा सैनिक। एहि गोली कांड मे सातगोट छात्र मातृभूमक वलिवेदी पर सदाक लेल सूति रहलाह।

बुलन्द राष्ट्रीय नारा आओर जयघोपक संग सजि-धजि कऽ सातो शहीदक अर्थी धूमधामसँ बहरायल। एगारह अगस्त 1942 क अर्धरात्रि छल। बूझि पड़ैत छलजेना सप्तर्षि पटनाक भूमिपर उतरि कण-कण कैँ अपन ज्योतिसँ आलोकित कऽ रहल होथि। क्रांति आगू बढ़ि रहल छल। भोर होइत दीघाघाटक श्मशान घाट पर शहीद लोकनिक चिता धधकि उठल आ ओकर चिनगारी सँ सम्पूर्ण भारतमे अगस्त क्रांतिक अग्नि प्रज्वलित भऽ उठल।

एहि आन्दोलनमे प्रारंभमे किछु दिनधरि अंगरेजी शासन मूक दर्शक जकाँ भऽ गेल छल। ओकरा भऽ सकैछ जे ऊपरसँ आदेशक आवश्यकता छलैक किंवा आन्दोलन कैँ कोनतरहेँ दबाओल जाय ताहि पर विचार विमर्श ओ तैयारी मे लागल छल। द्वितीय विश्व युद्धमे झमाड़ल आ फँसल अंगरेजक शासन कमजोर तँ छले। लगैत छलैक जेना सभठाम 'जनता राज' क स्थापना भऽ गेल छैक।

जनता राजक स्वरूप, व्यवस्था, दर्शन, सिद्धांत तथा ओहि लेल अपेक्षित संघर्षक सम्बन्धमे कार्य-कर्ता लोकनिक बीच विचार-मंथन एवं शंका- समाधान भऽ रहल छल। परञ्च एहि सम्बन्धमे गांधी जी द्वारा समय समय पर राखल विचार कार्यकर्ता तथा आन्दोलनकारीक पथ आलोकित करैत छल। आ ताहिपर सँ कांग्रेसक सरकुलरसँ सेहो दिशा-निर्देश भेलैक। सरकुलर नम्बर आठमे कहल गेल छलैक;-

''———लोक कैँ एहि ढंगसँ चलबाक चाही जाहि सँ पूझि पड़ैक जे सरकारी राज उठि गेलैक आ हमरा स्वयं देशक सभ प्रबन्ध करबाक अछि। अतः एक दिसतँ एहेन कोनो कार्य नहि करी अथवा कोनो कार्य मे मदति नहि दी जाहिसँ सरकारी हुकूमत चलैत रहैक अथवा सरकारकैँ सहयोग भेटैक आओर दोसर दिस ओ एहेन सभ कार्य करथि जाहिसँ लोककैँ आपसमे प्रेम बढ़ैक, ओकर जानमालक रक्षा होइक, ओकर खयबा-पीबाक कठिनाइ दूर होइक आ ओ निर्भय भऽ एकसंग मिलिकय सरकारी आत्याचारक मुकाबला करय। x x x''

"* * * * सभ गाममे पंचायत स्थापित होयबाक चाही जकरा माध्यमसँ गामक रक्षाक प्रबन्ध कएल जाय, झगड़ा फड़िछाओल जाय, मोकदमाबाजी रोकल जाय, तथा गरीब एवं भूखल लोकक हेतु-खयबा-पीबाक व्यवस्था कयल जाय।''

जनव्यवस्था आ जनताराजमे कार्य कर्त्ता-लोकनि उक्त सरकुलरक दिशा-

निर्देश पर अमल करबाक पूर्ण प्रयास कयलनि। ओ ई बात बुझैत छलाह जे ओ सुरक्षित नहि छथि। सरकारी दमनक तरुआरि सदत हुनका गरदनि पर लटकल रहैत छलनि। परञ्च ओलोकनि बुझहैत छलाह जे जतबे दिन अवसर भेटय ओकर पूर्ण उपयोग कऽ जनता कैं संतुष्ट राखल जाय। एक सप्ताह धरि जनताराजक स्थिति सम्पूर्ण बिहारमे मजबूत रहलैक। बाद मे पहिने जनता राज चलौनिहार लोकनिक पएर शहरक क्षेत्रमे उखड़लनि आ ग्रामीण क्षेत्र मे लगभग एक पक्षधरि ओ जमल रहलाह। प्रत्येक जिलामे किछु गाम एहनो छल जतय जनताराज मास-डेढ़मास धरि डटल रहल। कतहु-कतहु सम्पूर्ण थाना मे एक-डेढ़मासतक जनता राज स्थापित रहल।

जनता कार्यकर्त्ताक पीठपर छल; ओ जनताराजकैं धन-जनसँ सहयोग करैत छल। जनताराजक कार्यकर्त्ता लोकनि समाजक सभ वर्गक लोककैं खुश रखबाक प्रयास करैत रहलाह। दुनियाक क्रांतिक इतिहास मे जनता राज स्थापित करबाक ई प्रयोग अनुपम छल। एहिकार्यमे लखनजी प्रायः बिहार भरिमे सभसँ आगू छलाह। दरभंगा जिलामे सभसँ सशक्त जनताराज बिरौल थानामे स्थापित भेल छल, जकर मुख्यालय लखनजीक गाम रसियारी मे छलैक आ ओहि क्षेत्रमे 10 अगस्त सँ 4 सितम्बर धरि अंगरेजी राज उठि गेल छल।

1942 इ० क 11 अगस्त कैं सचिवालय पर झंडा फहरावयवला कार्य मे भागलेबा मे मलेरिया ज्वरक कारणसँ असमर्थ भऽ जयबाक बाद लखनजी पटनासँ अपन गाम दिस चल अयलाह। 19 अगस्त कैं हिनक प्रेरणासँ रसियारीक 'राजग्रूप' पर जनता अपन दखल जमौलक आ ओतय जनताराज व्यवस्थाक केन्द्रीय कमिटी संगठित भेल। प्रत्येक गाममे पंचायती बोर्डक स्थापना भेलैक आओर पचीस-पचीस गोट स्वयंसेवकक एक-एक जत्था ओहि गामक रक्षार्थ-तैनात कयल गेल। प्रत्येक गामसँ दू-दू गोट स्वयंसेवक केन्द्र मे पठाओल गेलाह। पंचायती बोर्ड तथा स्वयंसेवक जत्थाक प्रधान कार्यालय रसियारी केन्द्रमे छल। एहि इलाकामे गलमा, पाली, आ तुमौल अधिक जाग्रत स्थान छल जे पीड़ित क्षेत्रक कार्य-कर्ताक लेल आश्रयस्थलक कार्य करैत छल। बिरौल थाना पर यद्यपि दरोगा रहैत छलाह, मुदा ओ दबल छलाह आ जन-व्यवस्थाक विरुद्ध किछु करबाक उपक्रम नहि कऽ सकैत छलाह।

बिरौल थानाक लखनजीक गाम रसियारी मे 4 सितम्बर कैं पुलिस आयल तथा दरभंगा 'राज ग्रूप' कार्यालय पर अधिकार जमा ओहिपर राजक अमलाकैं पुनः बैसादेलकैक। ओहिपर कांग्रेस कार्यकर्त्ता लोकनिक कब्जा छलनि। लखनजी

केँ पुलिस गिरफ्तार नहि कऽ सकलनि। ओ अपना गामसँ फरार भऽ भगवानपुर गाम होइत नेपाल विदा भऽ गेल छलाह, मुदा हुनका भगवानपुरे मे पुलिस गिरफ्तार कऽलेलकनि। लखनजीकेँ भागलपुर सेंट्रल जहलमे राखल गेलनि।

नेपाल पहुँचबा मे असफल रहलाक कारणे लखनजी सोशलिस्ट पार्टीक कार्यकर्त्ता ओ नेतालोकनिक द्वारा संचालित 'आजाद दस्ता' मे सम्मिलित नहि भऽ सकलाह। जाहि सोशलिस्ट पार्टी मे लखनजी छलाह, तकर नेता जयप्रकाश नारायण, डॉ० राममनोहर लोहिया, सूरज नारायण सिंह आओर डॉ० वैद्यनाथ झा नेपाल मे 'आजाद-दस्ता'क गठन कऽ क्रांतिक मशालकेँ बहुत दिन धरि प्रज्वलित कयने रहलाह। सशस्त्र क्रांति मे विश्वास केनिहार ई संस्था अस्त्र-शस्त्रक प्रशिक्षणक केन्द्र छल तथा अवैध रूपसँ 'रेडियो ट्रांसमीटर'क व्यवस्था सेहो छलैक। लखनजी 1944 इ० मे भागलपुर सेंट्रल जहल सँ मुक्त भेलाह।

जहाँधरि राजनीतिक दलक सदस्यता तथा ओहिमे सम्मिलित हेबाक प्रश्न अछि लखनजी स्कूली छात्रक समयेमे1928 इ० मे कांग्रेस मे छलाह आ साइमन कमीशनक विरोध मे प्रदर्शनमे भाग लेने छलाह। बादमे ओ सोशलिस्ट पार्टी मे सम्मिलित भेलाह। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद हुनका कांग्रेस दल सँ मोह भंग भऽ गेल छलनि। मिथिलाक उत्थानक लेल आन्दोलन करबाक लेल लखनजी 'मिथिला-मंडल' नामक संस्था बनौलनि। ओहिमे बहुत थोड़ गोटे केँ लखनजी सदस्य बनबाक अनुमति देलथिन। हम ओकर सदस्य नहि रही परञ्च 1951 इ० क 9 सितम्बर केँ हम पटनाक 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन' मे पटना उच्चन्यायालयक तत्कालीन वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सतीश चन्द्र मिश्रक अध्यक्षता मे ''बिखड़ल मैथिल समाजकेँ एक सूत्र मे बान्हि मैथिली साहित्य, संगीत ओ अन्यान्य ललित कलाक अभिवृद्धि तथा पटनास्थित समस्त मैथिलक एक सांस्कृतिक केन्द्रक निर्माणक हेतु'' एक महती सभाक आयोजन कयने रही, तँ ओहिलेल वितरित छपल निमन्त्रण-पत्रक निवेदक मे लखनजी अपन नाम सम्मिलित करबाक अनुमति देने रहथि। लखनजीक अतिरिक्त निवेदक लोकनिमे हरिवंशलाल, विश्वनाथ लाल, आचार्य परमानन्दन शास्त्री, तिलकनाथ मिश्र, कुलानन्द झा आ हम रही। लखनजीक संग कोनो सामूहिक कार्य करबाक ई हमर प्रथम अनुभव आ सौभाग्य छल। हरिवंशलाल जे विजली विभागक विख्यात अधिकारी छलाह से लखनजीक 'मिथिलामंडल' मे सेहो सदस्य रहथि। सदरभंगा मे लखन जी द्वारा स्थापित मिथिला सोशलिस्ट पार्टी मिथिला ओ मैथिलीक लेल आंदोलन करैत रहल।

मिथिला-मैथिलीक सेवा ओ सारस्वत-साधना

स्वतंत्र भारत मे लखनजी सन दोसर केयो व्यक्तित्व एहेन नहि भेल हेताह जे छात्रावस्थासँ राष्ट्रीय आंदोलन मे सक्रिय योगदान केने होथि, अपना प्रदेश कांग्रेसक सभ पैध नेतासँ अभिन्न रूपें जुड़ल होथि, विद्वान होथि, तपस्वी होथि, मुदा सभटा छोड़ि-छाड़ि सत्ताक राजनीति सँ हँटि अपना क्षेत्रक लेल पूर्णतया समर्पित आ जीवन-दानी बनि गेल होथि। लखनजी 1952-53 इ०सँ दरभंगा मे अपन मुख्यालय बनौलनि आ मिथिला-मैथिलीक उत्थानक हेतु आंदोलन, चिंतन तथा लेखन प्रारंभ कयलनि। ई क्रम हिनक जीवनक अन्तिम समय धरि लगभग साढ़े चारिदशक तक अबाध गति सँ चलैत रहलनि।

नेपाल-ब्रिटिश इंडिया युद्ध मे सुगौली संधिक अनुसार भारतक 5 हजार वर्गमील जमीन नेपालमे चलगेलैक। ई संधि1816 इ० क 4 मार्च कैँ भेलैक। सीमांकनक लेल मिथिलांचलमे पश्चिम सँ पूवतक इँटाक पाया गाड़ल गेल। ई बँटबारा अंगरेजक इस्ट इंडिया कम्पनी तथा नेपालक गोरखा राजाक बीच भेल छलैक। स्वतंत्र भारत कैँ अप्राकृतिक सीमारेखाकैँ नहि मानबाक चाही। चीनमे कम्युनिष्ट शासन भेलाक बाद अपनदेशक दोसरा द्वारा हथिआओल क्षेत्रपर अधिकार करबाक प्रयास कयल आ ओही क्रममे ओ 'मेकमोहन लाइन' कैँ नहि मानि रहल अछि। मुदा भारत अपन उदारवादी नीति ओ विश्वशांति स्थापनाक नामपर एहि समस्यापर ध्यान नहि देलक। लखन जी सर्वप्रथम मिथिलाक एहि क्षेत्रकैँ नेपाल सँ मुक्त करेबाक आन्दोलन चलौलनि तथा मिथिला-सोशालिस्ट पार्टीक तत्त्वावधान मे 'गोरखा पायाक विरोध' नामसँ पायासभकैँ उखाड़बाक योजना बनौलनि। ओहि सम्बन्धमे पुस्तकलिखलनि, पर्चा छपौलनि आ भाषण-सभा द्वारा सीमापरहक लोक कैँ जगौलनि। एहि क्रममे लखन जीक पोथी ''द नौरदर्न बोर्डर'' 1955 इ० मे प्रकाशित भेलनि। परञ्च जखन भारत सरकार ओ कांग्रेस दलक एहि पर ध्यान नहि छलैक तँ एहि अंतर्राष्ट्रीय समस्याक समाधान गैर-सरकारी संस्थाक आन्दोलनसँ कहाँ धरि संभव छलैक?

लखनजीक एहि आन्दोलन पर भारत सरकार ध्यान नहि देलकैक, ताहि सँ आजुक एक करोड़ मैथिलक समस्या नेपाल तराई मे अत्यधिक गंभीर रूप धारण कऽ लेलकैक अछि। ओसभ मैथिली बजैत छथि आ मैथिल सदृश हुनकालोकनिक भेष-भूषा छनि, मुदा आब अपनहि देश मे विदेशी बनलरहबाक पीड़ासँ व्यथित छथि। हिनकालोकनिकैँ नेपालमे 'मधेशिया' कहल जाइत छनि। दू नम्बरक नागरिक मानल जाइत-छनि। सरकारी नौकरी मे मात्र तीन प्रतिशत संख्या

छनि। नेपालक समस्त जनसंख्याक आधा सँ अधिक संख्यामे रहनिहार हिनकालोकनिकेँ नेपाल सरकार द्वारा विदेशी बुझहल जाइत छनि आ संदेहक दृष्टि सँ देखल जाइत छनि। नेपालक संसदक 205 सदस्यक निचला सदनमे तथाकथित मधेशियाक मात्र 86 गोट प्रतिनिधि एखन छथि। तराई क्षेत्र सँ 70,000 जनसंख्या पर एक गोट सांसद चुनाकऽ जाइ छथि तँ पहाड़ी क्षेत्र सँ मात्र 8000 हजार पर एक गोट प्रतिनिधि बनैत छथि। लाखक-लाख मधेशिया केँ नागरिकता प्रदान करबाक मामला गत एक दशकसँ लम्बित अछि। सशस्त्र सेना मे हिनका लोकनिक प्रवेश वर्जित छनि आ जनत्रांत्रिक व्यवस्था भेलापर तराई मे बसल जनताक लेल किछु नहि कयल गेलैक अछि। तराई क्षेत्रक प्रतिनिधिक संस्था राष्ट्रीय सद्भावना पार्टीक कोनो नेता अद्यावधि देशक प्रधानमंत्री नहि बनाओल गेलाह अछि। एहना स्थिति मे कहियो ने कहियो एहि क्षेत्रमे नेपाल सँ अलग हेबाक आंदोलन हेबे करतैक-खाहे भाषाक नामपर हुए खाहे अन्य समस्याक कारणे। डॉ० लक्ष्मण झाक दृष्टि कतेक आगू धरि देखबाक छलनि से स्वतः सिद्ध अछि।

एकर बाद लखनजी मिथिलाक्षर अथवा तिरहुताकेँ पुनर्जीवित करबाक प्रयासमे सेहो कठोर श्रम कयलनि। मैथिलीक ई लिपि बहुत प्राचीन अछि आ एहि लिपि मे एखनहुँ मिथिलांचलक घर-घर मे हजारक हजार संस्कृत ग्रंथक पाण्डुलिपि राखल अछि। मिथिलाक क्षेत्रसँ जाहि पाण्डुलिपि सभकेँ कतोक विद्वान लोकनि एकत्रित कयलनि से देशक विभिन्न ख्याति प्राप्त पुस्तकालय आ शोध संस्थान मे सुरक्षित अछि। एहि ग्रन्थ सभक प्रकाशनक मार्गमे सभसँ पैध बाधा अछि ओकर लिप्यान्तरण, कारण मिथिलाक्षर जननिहार, लिखनिहार-पढ़निहारक संख्या सम्प्रति नगण्य भऽ गेल अछि आओर किछु दिनक बाद एको गोटे नहि भेटलाह।

लखनजीक प्रयास एहि समस्याक समाधानक लेल छलनि। ओ मिथिलाक्षरक प्रचारक लेल वर्णमाला छपौलनि आ व्यापक रूपसँ ओकर वितरण कयलनि।

मैथिली साहित्यक अभिवृद्धि आ मिथिलाक आर्थिक विकासक लेल लखनजी जीवन भरि लागल छलाह। मैथिली पत्रक अभावकेँ देखैत ओ 1952-53 इ० मे 'मिथिला' नामक साप्ताहिकक सम्पादन आ प्रकाशन कयलनि, मुदा आर्थिक कमजोरी तथा लोकक सहयोगक अभाव मे ओकरा बन्द करय पड़लनि।

1950-51 इ० सँ लऽ कऽ जीवनक अन्तिम समय धरि लखनजी सारस्वत साधना मे लागल रहलाह। मिथिला आ मैथिलीक सम्बन्धमे लखन जी अपन

लिखल 15 गोट पोथी, डॉ० लक्ष्मी नारायण सिंह द्वारा लिखित तीनगोट पोथी आ विद्यापति सिंह द्वारा लिखित एक गोट पोथी-याने सभमिला कऽ उन्नैस गोट पोथी अंगरेजी, मैथिली आ हिन्दी मे प्रकाशित कयने छथि। ई सभ पुस्तक 'मिथिला मंडल', दरभंगा द्वारा प्रकाशित अछि। एहि प्रकाशित पोथीक एक गोट सूची परिशिष्टमे देखल जा सकैछ। एकर अतिरिक्त अंगरेजीमे 28 संस्कृत मे 7, मैथिली मे 6 आ हिन्दी मे 10 गोट ग्रंथ डॉ० लक्ष्मण झा लिखलनि, जकर पाण्डुलिपि हुनक निजी पुस्तकालय मे गामपर राखल छनि। एहि ग्रंथक विषय वेद, धर्म, राजनीति, अर्थ-शास्त्र एवं आधुनिक जीवन सँ सम्बन्धित विभिन्न विषय अछि। डॉक्टर साहेब कैँ अंगरेजी, संस्कृत, मैथिली आ हिन्दी,-सभ भाषा पर समान अधिकार छलनि। दुर्भाग्य भेलैक जे एहि सभ ग्रन्थ कैँ अपन जीवन कालमे प्रकाशित नहि होमय देलथिन आ कहथिन जे देहावशानक बाद हमर 'ट्रस्ट' प्रकाशित करत। परञ्च हुनक परिवारक सदस्यलोकनिसँ ज्ञात भेल अछि जे अपन कोनो ट्रस्टो ठेकेनगर नहि बना सकलाह आ हुनक सम्पत्ति कैँ हासिल करबाक लेल भाइ आ भातीज लोकनिमे झगड़ा आरंभ भऽ गेल छनि।

जाहि समय मे बेलाक आवास मे रहैत छलाह तखने 1963 क फरवरी सँ 1972 क मार्च तक प्रत्येक मास दू गोट अथवा तीन गोट लेख 'इंडियन नेशन' मे स्तंभ-लेखकक रूप मे सामयिक विषय पर लखनजी लिखैत रहलाह। ओहि लेल हुनका किछु आर्थिक लाभ सेहो होइत छलनि। एकर कारण नहि बुझहल अछि जे 1972 क मार्चक बाद ई क्रम किएक टुटि गेलैक। ओना सूनल अछि जे कोनो लेखमे सम्पादक कतहु कलम लगा देने छलथिन, जे लखनजीकैं वर्दास्त नहि छलनि। सभसँ पैध दिक्कत छलनि जे लखन जीकैँ कतहु सामंजस्य स्थापित करबाक स्वभाव छलनिहैँ नहि। इंडियन नेशन मे प्रकाशित उक्त सभ लेखकक सूची सेहो परिशिष्ट मे देखल जासकैत अछि।

मिथिलाक शैक्षणिक विकास आ ओकर विद्वताक प्राचीन परम्पराक पुनर्जागरणक लेल लखनजी छात्रावस्थे सँ चाहैत छलाह जे मिथिलाक केन्द्र दरभंगा मे एक गोट आधुनिक विश्वविधालयक स्थापना हेबाक चाही। ओ कहैत छलाह जे जखन मधेपुर स्कूलसँ दरभंगामे इन्ट्रेसक परीक्षा देबाकलेल आएल छलाह ताही समयमे राजदरभंगाक आनन्दबाग आ अन्य परिसर देखलासैँ हुनका मनमे भावना उठलनि जे एहिठाम मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना होइतैक। तैं जखन मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापनाक लेल श्री रामसेवक ठाकुरक अध्यक्षता मे एक गोट समिति बनलैक तँ ओकर सदस्य हेबाक रूपमे हमरा आ

प्रो० श्री नागेन्द्र झाकेँ भार देलगेल जे लखनजी सँ मिथिला विश्वविद्यालयक स्वरूप आ आकारक सम्बन्ध हुनक जे धारणा बनल छनि से बुझि कऽ आबी आ ओही आधार पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग केँ स्मारपत्र देल जयतैक। हम कतोक बेर लखनजीक ओतय गेलहुँ। मिथिला विश्वविद्यालयक मादे हुनक कोनो स्पष्ट धारणा (Concept) नहि बुझि पड़ल। एहि सम्बन्धमे ओ अन्तमे कहलनि ने भारत भरिक विश्वविद्यालयक स्टैटयूट्स वगैरहक सम्बन्धमे 'ब्रोसर' छपैत छैक। डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह सँ मुजफ्फरपुर मे उपलब्ध कऽ लीअ। हम कहलियनि ओ हमरालोकनिकेँ देखल अछि। परञ्च ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय जखन बनलैक तँ किछु दिनक बाद 1977 मे कर्पूरीजी विहारक मुख्यमंत्री भेलाह। कर्पूरीजी एक बेर पुनः लखनजीक खोज कयलथिन आ हुनका एहि विश्वविद्यायक कुलपति बनबाकलेल हुनकासँ आग्रह कयलथिन।

लखनजी कुलपति बनबतँ स्वीकार कऽ लेलथिन, परञ्च तीन गोट शर्त लगौलथिन। दरमहा नहि लेब, कुलपतिक आवासमे नहि रहब आ दू बजे दिनसँ पूर्व कार्यालय नहि जासकब। कर्पूरी जीक सरकार हुनक तीनू गोट शर्त स्वीकार करैत आग्रहकयलकनि जे 'टोकेन' रूपमे एक गोट टाका दरमाहा लेब आवश्यक हेतैक। लखनजी से मानि लेलथिन।

1977-78 इ० मे दसमास धरि ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपति रहबाक समयमे हुनका विषयमे तीन गोट संस्मरणक चर्चा करब आवश्यक अछि। एहिसँ हुनक अनुपम व्यक्तित्वक रूप आओरो अधिक स्पष्ट होइत छनि।

एकबेर पटनाक राज भवनमे बिहार भरिक सभ विश्वविद्यालयक कुलपति ओ शिक्षा विभागक सम्बन्धित उच्च अधिकारी लोकनिक बैसार कुलाधिपति महोदय बजौने छलाह, जेकि समय-समय पर होइते रहैत छैक। लखनजी उपस्थित छलाह। बैसारक समयमे केयो अधिकारी सिगरेट सुलगौलनि। ई देखैत लखनजी उठिकय बाहर चलगेलाह। बादमे कुलाधिपति क्षमायाचना करैत हुनका बैसार मे पुनः बैसौलनि।

कुलपति रहबाक समयमे लखनजी जखन कखनहुँ अपन गाम रासियारी जाइत छलाह तँ विश्वविद्यालयक मुख्यालयसँ सटल तत्कालीन बस अड्डापर कोनो चपरासी जाकए हिनका गाम जायवला बसमे जगह राखि अबैत छल आ लखनजी कार्यालय सँ बस स्टैंड धरि विश्वविद्यालयक गाड़ी सँ जाइत छलाह आ ओतय बसपर बैसि गाम जाइत छलाह। कतबो आग्रह कयलापर ओ कहियो निजी कार्यसँ गामजयबाललेल विश्वविद्यालयक बाहनक उपयोग नहि कयलनि, यद्यपि बसपर हुनक गाम जायब बहुत कठिन छलैक आ आइयो छैक।

एक बेर जारमे नई दिल्ली मे अखिल भारतीय कुलपति सम्मेलनमे जयबाक छलनि। लखनजीक पास कोनो गर्म चद्धरि ओढ़बाक लेल नहि छलनि। कुर्ता, बंडी अथवा अन्य कोनो सिऔल कपड़ाक व्यवहार तँ करितेनहि छलाह। आप्त सचिवक एहि सम्बन्धमे जिज्ञासा कयलापर लखनजी कहलथिन जे उलेन चद्दरि किनबाक तँ सामर्थ्य नहि अछि, तखन बहुत वर्ष सँ विभिन्न समाचारपत्रक पुरना प्रतिसभ गाँठक गाँठ जे ओरिआकऽ राखल अछि, तकर आब कोनो प्रयोजन नहि बुझि पड़ैत अछि। ओकरा बेचिकय उलेन चद्दरि किनबाक पाइ भऽ जायत। सैह कएल गेलैक। ओहि सम्मेलनमे देश भरिक कुलपतिलोकनिकैं हिनका प्रति एहि लेल अधिक आकर्षण भेलनि जे एहेन के व्यक्ति छथि जे बिनु दरमाहा लेने कुलपतिक पदकैं सुशोभित कयने छथि। अपन पहिरब-ओढ़ब ओ विद्वतात सँ अलंकृत व्यक्तित्वक आभासँ मंडित तँ ओ छलाहे। मुदा दुर्भाग्यक विषय अछि जे एहनो व्यक्ति ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपतिक पदपर दस माससँ अधिक नहि रहि सकलाह। एहि विश्वविद्यालयक तत्कालीन तथाकथित विद्वान विभागाध्यक्ष लोकनि लखनजी सन कुलपति कैं वर्दास्त नहि कऽ सकलाह।

कुलपति रहबाक समय मे अपन पद सँ ओ कोनो प्रकारक लाभ प्राप्त करबाक प्रयास नहि कयलनि। अपना परिवारक बेरोजगार बन्धु-बान्धमे सँ एको गोटे कैं चतुर्थो वर्गक कर्मचारीकपदपर नियुक्त नहि कयलथिन। डॉ० लक्ष्मी नारायणसिंह सन अंतरंग व्यक्ति मात्र बिहार विश्वविद्यालय सँ दरभंगा ल०ना० विश्वविद्यालयमे अपन स्थानान्तरण करबय चाहैत छलाह, जे बहुत उचित छलैक, सेहो लखनजी नहि कयलथिन आ एहि सँ स्वाभाविक रूपसँ लक्ष्मीबाबू ततेक अधिक व्यथित भऽ गेलाह जे ओ लखनजीसँ अपन सम्पर्क हटा लेलनि। निस्पृहता आ ईमानदारीक सन गुणोक तँ कोनो सीमा हेबाक चाही! हम स्वयं हुनका सँ 1949 इ० सँ बहुत अधिक निकट रहलहुँ। एही विश्वविद्यायक अन्तर्गत एक महाविद्यालयमे अध्यापन कार्य करैत छलहुँ। हुनका गाम मे हमर एक गोट पित्ती स्व० रेवतीकान्त झाक विवाह छलनि, ताहि सम्बन्धसँ हमरा अपन भागिन मानैत छलाह आओर हमरापर कहियो कोनो कारणे बिगड़बो नहि कयलाह। मुदा हम हुनक कुलपति रहबाक अवधि मे विश्वविद्यालय परिसरमे कहियो नहि गेलहुँ। हुनका, भऽ सकैत छल जे होइतनि जे अपन कोनो काज करबय चाहैत छथि। इहो सेहेन्ता लगले रहि गेल जे लखनजी कैं कुलपतिक कुर्सीपर बैसल देखि तियनि अथवा साँझमे कुलपतिक-आवास पर किछु समय बैसि विश्वविद्यालय पदाधिकारी, शिक्षक आ छात्रसँ कोना भेट करैत छलाह तथा पदाधिकारी एवं शिक्षक लोकनिकैं चाह पिअबति छलाह?

डॉ० लक्ष्मण झा स्कूलक छात्रावस्थे सँ 'लीजेंड' बनिगेल छलाह। अपना जीवन काल मे लीजेंड तँ बहुत गोटेकेँ बनि जयबाक सौभाग्य होइत छनि, मुदा छात्रावस्थासँ ई स्थिति प्राप्त करब प्रायः विश्व भरि मे किनको सौभाग्य नहि भेलनि। हुनका सफाई, अध्ययन ओ लेखन पर जीवनमे सभसँ अधिक ध्यान रहलनि। ओ अपना समय सँ बहुत आगूक बात सोचैत छलाह। तकरा बुझिनिहार लोकक सर्वथा अभाव रहने हुनक सहयोगी एवं अनुयायीक संख्या अधिक नहिभऽ सकलनि। यदि हुनका लोकसँ सामंजस्य स्थापित करबाक मानसिकता रहितनि तँ हुनकासँ देश, अपन क्षेत्र आ संस्कृति केँ बहुत अधिक लाभ प्राप्त होइतैक। एतेक अधिक ग्रन्थ विभिन्न विषय पर लिखलनि, मुदा अपन जीवनकालमे ओकर प्रकाशन नहि होमय देलथिन।

लखनजी जीवनभरि समाजसुधारक आ 'विद्रोही' (Rebel) बनल रहलाह। स्व० विनोदानन्द झाक बिहारक मुख्यमंत्रित्व काल मे हुनकासँ विग्रह हेबाक कारणे लखनजी स्वतंत्र भारतमे सेहो जहल गेलाह। कांग्रेस मे छात्रावस्थासँ रहैत आ स्वतंत्रता आन्दोलन मे एतेक सक्रिय रहनिहार लखनजी केँ पाछू कांग्रेससँ विरोध भऽ गेलनि आ ओकर सर्वमान्य नेता पं० जवाहरलाल नेहरूक विरोध बात-बातमे करयलगलाह।

डॉ० लक्ष्मण झा जीवनभरि ककरो मोजर नहि देलथिन। एकबेर डॉ० अमरनाथ झाकेँ, जखन ओ अपन जीवनक अन्तिम समय मे बिहार लोकसेवा आयोगक अध्यक्षक रूपमे पटनामे रहैत छलाह तँ, डॉ० लक्षण झा एकगोट पत्रलिखलथिन, जाहिमे डीयर डॉक्टर झा लिखि सम्बोधित कयने छलथिन। डॉ० अमरनाथ झा हमरालोकनिकेँ पुछलनि जे ई डॉ० लक्ष्मण झा के थिकाह? हिनकासँ कोनो परिचयनहि अछि आ डीयर डॉक्टर झा लिखलनि अछि। हमरातँ एहि तरहक सम्बोधन सम्पूर्ण देश मे मात्र डॉ० राधाकृष्णन करैत छथि।

अपन मातृभूमि मिथिला आ मातृभाषा मैथिली क उत्थानक लेल जीवनपर्यन्त कार्य ओ चिंतनमे लागल डॉ० लक्ष्मणझा अपना गाम पर 23 जनवरी, 2000 केँ लगभग छः बजे भोर मे चौरासी वर्षक अवस्थामे अपन अनन्त यायापर विदा भऽ गेलाह। हुनक निधनसँ मिथिलाक एक गोट आओरो याज्ञवक्यक देहावसान भऽ गेलनि। मिथिलाक एहि विभूतिक आत्माकेँ शत-शत नमन!

सुरेश्वर झा



2. 'मिथिला'मे प्रकाशित अग्रलेख

निवेदन

देशक दुर्दशा सभक समक्ष प्रत्यक्ष अछि। अन्न, वस्त्र, घर, रोगीक हेतु औषध ओ धीया-पुताक लेल शिक्षालय आदि सभ वस्तुक अभावे अछि। किछु बाजू तँ सरकारक मुलाजिमसँ भारि-गारि खाउ। अंगरेज छल विदेशी। अत्याचार करबामे ओ सशंकित रहै छल। संतत संदेह रहै छलैक एहिठामक केओ संग देत वा नहिं। ओकरा राजमे पीड़ित भेलापर ओकरहु किछु उकठ-पुकठ कय लोक दोगदाग मे नुकाय रहै छल। एहिसँ किछु आत्मतृप्ति होइ छलै। कांग्रेसी लोकनि भेला अपन देशक, अपन शोणित। हिनका स्वजनक प्रति ईर्ष्या ओ देशक कोन-कानक पतो अंगरेजसँ वेशी। तेँ हिनक अन्याय ओ अत्याचार जेहन दृढ़ भय सकै अछि तेहन अंगरेजक हयब कठिन छले।

दुखनामा बजबाक अधिकारो केँ काटिखोटि कनमा चौठी पर आनि देलनि। तथापि जे किछु कृपाकय छोड़ने छथि ताहि बलपर अपन उद्धारक हेतु आंदोलन करब कर्तव्य।

1946 मे कांग्रेसी लोकनि एहि देशक राजा भेला आइसँ छ वर्ष पूर्व। 1949 मे चीन देशमे नवीन जन-राज्य कायम भेल। 3 वर्षक बादहि 1951 मे अपन 45 करोड़ लोककेँ पुष्टकय खुआय हमरहु देशक अन्नहीन केँ 3 करोड़मन चाउर उपाति देलक। संगहि कोरियामे अमेरिका सन प्रबल शुत्रुसेँ सफलतापूर्वक युद्ध करै छल। भारत चीन सेँ तीन वर्ष पूर्व स्वच्छन्द भेल। एकरा कोनो विकट शत्रुक संग युद्ध नहि रहलै, चीनसँ दस करोड़ कमे लोकक इन्तजाम करबाक छलै, तथापि कल्याणक किछु काज नहि कयलक। कारण? अपनराज भेटल, सुख भेटल आब दुनियाँ जहन्नुममे जाय।

तखन पीड़ामे छाती पीट-पीट कानब वा अपन उद्धारक हेतु किछु करब? दुखमे कानब-खीजब स्वाभाविक, संगहि पुरुषार्थ आवश्यक। कटिबद्ध भय कल्याणपद दिस बढ़ी तँ दुख रहबे करत? कथपपि नहि। दुख यदि सत्य थीक तँ दुखक शमनो सत्ये थीक। दुखक नाश यदि सम्भवतँ ओकर उपायो अलभ्य नहि।

अज्ञानक कारणें हमरालोकनि बहुत अनाचार अनेरे सहि लैछी। एहि अज्ञानकेँ, अशिक्षाकेँ दूर करब अनिवार्य। केओ कहि देलक भाषाधार-प्रान्तक आन्दोलन संकीर्णता थीक बस सैह मानि एकर तिरस्कार वा विरोध करय

लगलहुँ। केयो बाजल समाजवाद रूस-चीन प्रदत्त अनाचारवाद थीक कि ओकर निन्दा होबय लागल। केयो बाजल रूस-चीनमे व्यक्तिकेँ स्वतंत्रता नहि छै बस ओहि दुनू महान् देशक विरोध करय लगलहुँ। पर बुद्धि हयबाक एहिसँ प्रबल कोन प्रमाण हयत?

समाज, देश ओ विदेशक विषयमे ज्ञानक संचय कय अपन बुद्धि ओ चित्त केँ स्थिर करी। ताहीखन हमरालोकनि अपन कल्याण मार्ग प्रशस्त कय सकैछी।

'मिथिला'क कार्य रहत समाजक हेतु उपयोगी समाचारक निष्पक्षरूपें संग्रह ओ प्रकाशन; विज्ञान, साहित्य ओ कला सम्बन्धी ज्ञानक प्रसार; भाषाक आधार पर भारतक प्रान्त विभाजनक हेतु आन्दोलन, दुर्गत भारत केँ पर्याप्त अन्न, वस्त्र, घर आदि भैटै ताहि हेतु समाजवादक आधारपर राजकीय व्यवस्था हो तकर प्रयास; एवं एहि संघर्षशील विशाल संसार मे भारतीयक जीवन स्वस्थ, सबल ओ निर्भय हो तदर्थ महान चीन, रूस आदि भूस्वर्ग जनराज्यक संग मैत्री-बन्धनक सतत आयोजन।

दुर्बल 'मिथिला' एहि महायज्ञमे प्रविष्ट अछि। महाकवि कालीदासक बचन

क्व सूर्य प्रभवो बंशः क्व चाल्पविषया मतिः
तितीषुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।

एकरा स्मरण छै। अपने साहाय्यक अभावमे एकर ई महाप्रयास यदि मोहे साबित होइ तथापि विषाद नहिं, कारण निकृष्ट, निश्चेष्ट जीवनसँ संघर्षशील विनाश श्रेयस्कर।

(15 दिसम्बर1952)

❑❑

भाषाधार प्रान्त

तेलगु-भाषाक आधार पर आन्ध्र प्रान्तक निर्माण करब नेहरू सरकार गछलक तँ परंच तते घिनायकयँ जे कमे लोक कैँ धन्यवाद देबाक उत्साह भेलै। विरोध सेहो भइये गेला कारण आन्ध्र-निर्माणक ई नवीन योजना जे जवाहरलाल जी देशक समक्ष रखलनि अछि से अपूर्णे नहिं दुष्टतापूर्णो छनि।

भाषाक आधार पर भारत मे प्रान्त सभक संगठन हो एकर आन्दोलन पचासहु वर्षसँ अधिक दिन सँ चलि रहल अछि। 1908 मे कांग्रेस एहि विचार कैँ सिद्धांतरूपें ग्रहण कयलक। एही आधार पर 1911 मे बंगालक अबंगला भाषी क्षेत्रकैँ अलग कय बिहार बनाओल गेल ओ बंगलाभाषी पूर्व बंगाल तथा पश्चिम बंगाल कैँ मिलाय एक प्रान्त बनल।

1916 मे तेलगुभाषी लोकनि आन्ध्र प्रान्तक निर्माणक मांग पेश कयलनि ओ एक साल बाद कांग्रेस एकरा स्वीकार कयलक। 1920मे नागपुर कांग्रेसमे निश्चित भेल जे समस्त देशक प्रान्तीय संगठन भाषाहिक अनुसार हो, ओ ताही हिसाबें आन्ध्र, तामिलनाड, केरल, कर्णाट, महाराष्ट्र, उत्कल, गुजरात आदिक प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी बनल। विचार भेलै जे अंगरेज सरकार एहि सिद्धांत कैँ मानय वा नहिं देश एवं ओकर प्रतिनिधि संस्था कांग्रेस ओहि पर चलब शुरू कय दियय। सैह भेल। एहिसँ भिन्न-भिन्न प्रान्तक कांग्रेस कार्य-कर्त्ता लोकनि स्वभाषा-भाषी जनताकैँ संगठित करबामे वेश सुविधा पौलनि।

एहि कार्य सँ कांग्रेसक सुविधे टा छलै, असुविधा छलै अंगरेज शासक कैँ। से ओ तँ भेल शत्रुए। ओकर असुविधा तँ अभिष्टे छल। जा अंगरेज रहल ता धरि भाषाधार प्रान्तक बेश गीत कांग्रेसक उधबवाधव मे गाओल गेल। बेचारा सभ कै बेरि मानयक हेतु प्रयासो कयलक यथा आसाम, उड़ीसा ओ सिन्धक निर्माण कय, परंच भाषा सभक सीमा निर्धारण ओ शासन सम्बन्धी झंझट देखि पराइत रहल।

कांग्रेसी बाबू लोकनि जे राजा भेला तँ हिनकहु ऊपर अंगरेजक भूत सवार भेल। इहो झंझट सँ डेराय लगला ओ एहि सवाल कैँ तारय-बटाड़य लगला। देशकैँ यदि आन तरहें ई लोकनि सुभ्यस्त कयने रहितथि तँ संभव भाषांधार प्रान्तक समस्या एतेक विकट रूपमे तत्काल प्रकट नहि होइत। सुख-सुविधामे

लोक एकटा किछु क़ाल बिसरि जाइत परन्तु से तँ भेल नहि। सुविधाक अर्थकोन, देश बनि गेल नरक। कोनो यातना, कोनो पीड़ा बाकी नहि रहल। सर्वत्र रोग–शोक-परितापें हाहाकार मचल अछि। जाही खन जे एकर त्रुटि बताय एकरा पर आक्रमण करबक संकेत करै छै ताही खन तकरा संग लोक आँखि मूनि दौड़ि परै अछि।

एहि अशांति सँ जान बचयबाक रास्ता कांग्रेसी लोकनि एखन बनौने छथि जवाहरलाल जीकें, ई लोकनि हुनका रामलीलाक मुरूत बनाय अंगने-अंगने शांतिक बिलौकी मंगने फिरै छथि। परन्तु एहि मुरुतक रूप कतेक दिन धरि उद्विग्न समाज कैं शान्त राखत? नेहरू बाबूक कुलशील ओ बाग्छटासँ भूखल, पियासल, रुग्न, बेहाल ई अपार जन समूह कते दिन धरि मुग्ध रहत?

नवीन आंध्रमे हैदराबादक तेलगु-भाषी इलाका नहिं मिलाओल जाएत, कारण ताहिसँ हैदराबाद राज्यक अंगभंग हेतैक! तखन ई भाषाधार प्रान्त नहिं भेल, ई भेल विद्रोही आन्ध्र लोकनिकैं शान्त करबाक किछु उपाय। नवीन कांग्रेसी राजालोकनिकैं राजकीय भोग-विलासमे कोनो उपद्रवसँ बाधा नहिं होनु ई तकर विधान मात्र। एहि दुष्ट बुद्धि ओ निकृष्ट आचरणक कोन दण्ड हो? विधान तँ छै, दुइ रूपक -शास्त्रक ओ व्यवहारक। भोगविलोनमत्त राजा शास्त्रीय दण्ड नहि लै अछि। ओकरा हेतु होइछै व्यवहारक दण्ड, जे भेल छै मिश्रमे, चीनमे, रूसमे, फ्रांसमे, ईंगलैंडमे आदि। से केहन लागत?-परन्तु दोसर उपाय?

(29 दिसम्बर1952)

❑❑

भाषाधार प्रान्त

भारतक प्रायः सबपार्टी कहै अछि भाषा, भूमि, अर्थनीति ओ परम्पराक आधार पर प्रान्त सभक निर्माण हो। परंच क्रियामे सब आगूपाछू करै अछि। कांग्रेस पार्टी राजा अछि। ओ नवीन व्यवस्था करबासँ डरय ई स्वाभाविक। राजपद पर पहुँचल व्यक्तिक सर्वोपरि इच्छा रहै छै ओकर भोग करयक। ओ कोनो झंझट नहिं चाहै अछि। नवीन कार्य मात्र ओकरा हेतु झंझट, कारण पक्ष-विपक्षमे किछु ने किछु आन्दोलन हयब अनिवार्य ओ से भेनहि आनन्द मे बाधा।

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी ओ कम्युनिस्ट पार्टी सिद्धान्त मे भाषाधार प्रान्त रखने अछि परन्तु एहि विषयक कोनो भारतव्यापी योजना प्रस्तुत करयसँ डरै अछि। प्रजासोशलिस्ट त मिथिला आन्दोलनक विरोध पर्यन्त कयलक अछि। कम्युनिस्ट पार्टी लोकक बाट तकै अछि। अधिक लोककेँ जतय जाइत देखत प्रायः सैह पथ पकड़त। भाषाधार प्रान्त विषयक सम्मिलन आदि मे पार्टीक सदस्य कहैछथि हमर पार्टी एखन एहि विषयमे अपन निर्णय नहिं कयलक अछि तेँ हम एखन एकर पक्ष नहि करब। पार्टी जयत जोरगर आंदोलन देखै अछि ततय आगुये चलैक कोशिश करै अछि, जतय आन्दोलन मन्द छै ततय विरोधीहु बनि जाइ अछि। कम्युनिस्ट पार्टी सन क्रांतिक सिद्धांत वधारयवला दल एहि रूपेँ जीतलाक ढोलिया बनय ई सर्वथा निन्दनीय।

(20 अप्रिल1953)

❑❑

भाषाधार प्रान्त

प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू हालहि कर्णाटक प्रान्तक बेलगाँव कांग्रेस सरकारक भाषाधार प्रान्तनीतिक व्याख्या कयल। हुनक कथन अछि आन्ध्रप्रान्त निर्माणक बाद एकवर्ष धरि ओकर कार्य संचालन देखि सरकार भाषाधार प्रान्त कमीशन नियुक्त करत, ई कमीशन देशभरिक प्रान्त पुनर्गठनक समस्या पर विचार करत। भाषाधार प्रान्त सम्बन्धी निर्णय ककरो पर लादल नहिं जायत, मतैक्य भेलापर कार्य सम्पादन हयत। लोकक डरयला-धमकयलासँ सरकार भाषाधार प्रान्तक स्वीकृति नहिं देत आन्ध्रप्रान्तक घोषणा श्री रामुलुक देहान्तक कारण नहिं भेल, वाल्कि हुनक अनशनक कारण आन्ध्रप्रान्त सम्बन्धी निर्णय मे विलम्ब भऽ गेल।

प्रधानमंत्रीजीक ई घोषणा साम्राज्यवादी लोकनिक औपनिवेशिक स्वतंत्रता सम्बन्धी नीतिक अनुरूप अछि। प्रतिकूल स्थिति केँ टारबाक हेतु कमीशनक नियुक्ति, मतैक्य शर्त तथा जन आन्दोलन एवं बलप्रयोगक निन्दा-ई सभ अछि साम्राज्यवादक अस्त्र। भारतीय स्वतंत्रता संग्राममे देशक अंगरेज राजालेकनि एहि सभ अस्त्रक प्रयोग करैत छला। श्रीरामुलुक अनशनक प्रति जे तिरस्कारभाव प्रधानमंत्री जी देखौल अछि सैह तिरस्कार भाव अंगरेज लोकनि गाँधीजी क अनशनक प्रति देखबै छल जाहि पर जवाहरलालजी खौंझाय उठै छला। हालतक अंगरेजलोकनि कहै छला 1942 क आन्दोलनक किछु फल नहिं भेल। 1947 मे भारतकेँ जे स्वतंत्रता देल गेल से अंगरेज लोकनिक उदारता छल। बलक अभावमे दलित वर्गक लोककेँ अपन बुद्धि ओ विवेकक प्रति ई तिरस्कार सहै पड़ै अछि। उन्मत्त राजालोकनिक यैह तिरस्कार भाव दलित वर्ग मे चेतना अनै अछि ओ तत्पश्चात् संघशक्ति। राजोन्मादक एक औषध अछि बलप्रयोग। समस्त संसारक इतिहास एकर प्रमाण अछि।

बेलगांवक सभामे नेहरूजी बड़ विचित्र स्थिति मे छला। सभामण्डप पर आगमन होइतहि प्रबल विरोध होबय लागल। 'अहाँ कर्नाटक प्रान्त नहिं देल तेँ वापस जाउ'क नारा सभ दिससँ लगै छल। पन्द्रह मिनट धरि नेहरू साहेब सभा मंच पर ठाढ़ रहला, हुनका बजबाक अवसर नहिं देल गेल। तखन बड़ अनुनय विनय कय हल्ला शान्त कयल। हुनका हेतु ई स्थिति बड़ कष्टकर छल। ओ

अभ्यस्त छथि सभामण्डपमे पहुँचि लाख-लाख लोकक साष्टांग प्रणाम ग्रहण करबाक। जे जनता हुनका पैरक धूलि-कणक हेतु लालायित रहै छल से हुनका सभासँ वापस जाय कहय, बाजय नहिं देयय ई केतेक असह्य! एहि स्थिति मे नेहरूजी जे धैर्य देखाओल ताहि हेतु हुनका धन्यवाद।

कर्नाटक प्रान्तक आन्दोलन गत दू मासमे बेस प्रबल भेल अछि। दूमास पूर्व धरि मिथिलाप्रान्तक आन्दोलन सँ कर्नाटक बेसी अगुआयल नहिं छल। आन्ध्रप्रान्त सम्बन्धी घोषणा ओ कांग्रेसक हैदराबाद सम्मिलनक बाद कर्नाटक प्रान्त आन्दोलनमे खूब प्रगति भेल अछि। तीन सय वर्षक इतिहासमे मिथिला जहिना पछुआयल छल तहिना फेर पछुआयत।

(18 मई1953)

❑❑

भाषाधार प्रान्त ओ कांग्रेस

हैदराबादक महासम्मेलन मे कांग्रेस निर्णय कयलक अछि भाषाधार प्रान्तक निर्माणमे हमरालोकनि खूब फूकि-फूकि चली, कारण एहिसँ देश मे अनेक संकट उपस्थित भऽ जायत।

देशमे एखन संकटक कोनो कमी अछि? कोन नवसंकट एहन रहल जे भाषाधार प्रान्तक निर्माण कयला सँ उपास्थित भऽ जायत। कष्टक पराकाष्ठा देखै छी। अन्न, वस्त्र, घर, शिक्षा, दवा आदि सब वस्तुक संकोचे अछि। कतहु बाढ़ि, कतहु अकाल, कतहु महामारी सँ हाहाकार! केओ देखनिहार नहिं। लोक 'सरकार माइ बाप' किकिआइ अछि, कांग्रेस सरकारकेँ 'संसारवाद' से छुटिये नहिं। जखन, लोकक हेतु कोनो सुविधाक मांग कयल जाइ अछि तँ नेहरू साहेब कहि उठै छथि एखन चुप रहू, स्थिर रहू, देशपर बड़ संकट अछि, संसार बड़ दुःस्थिति मे अछि। वैह सब कहि वेचारे आठ वर्ष खेपि गेला।

धनक लोभी सब होइ अछि, प्रभुताक लोभी बुधियार होइ अछि। नेहरु केँ धनक कोनो अभावे नहिं, प्रधानमन्त्री छथि हे। ओहि सँ बढ़ि प्रभुताक कोनो पदे नहिं। परंच ताहिसँ ओ संतुष्ट नहिं छथि। विश्वराज्यक गप किछु दिनसँ सुनै छी। कतहु कतहु वेस जोर-सोर। लण्डनमे किछु दिन पूर्व एकर बड़ हल्ला छल। एकटा 'विश्वराज्य संघो' कायम छल जकर कर्णधार छला ब्रटेण्ड रसल आदि पैघ-पैघ लोक। ओतयसँ एक प्रतिनिधि मण्डल सेहो दिल्लीमे नेहरूसँ भेंटक हेतु आयल छल। हुनका लोकनि सँ गप्पकय नेहरूजी बड़ गद्‌गद भेला। कियै नहिं? एहन लोकप्रिय दुनियाँ मे दोसर और के अछि? आन कोन राजपुरुष पर लाखकलाख लोक खसै अछि? विश्वराज्यक संगठन भेलापर प्रधानमन्त्रीक हेतु हिनकासँ बढ़ि के भेटत? एहन सुयोग्यक प्रतीक्षामे के मूर्ख हयत कि नहिं रहत?

तखन जे छोट-छोट बात-भाषाधार प्रान्त, अन्न, वस्त्र, घर आदि-जगाय हुनका लोक दिक्क करैछनि तँ बेचारे कोना नहिं तमसाथि? अशोक, अकबरक कथा बड़ नेनासँ घोंकै छथि। आब ओहि लोकनिक समान पद पर आबि हुनकालोकनि सँ बढ़य चाहै छथि तँ हुनक क्षुद्र देशवासी हुनक टांग पाछूसँ खीचै छनि। कोना नहिं तखन खौंझाथि, जँहि तँहि गारि फज्झति देथि?

राजाजी कहै छथि भाषाधार प्रान्त 'ट्राइबलआइडिया' थीक। ठीक। राजा सेहो 'ट्राइबल आइडिया' थीक। दुहू 'ट्राइबल आइडिया' कैं संगहि छोड़ि दी तँ हर्ज की? कांग्रेसी लोकनि राजा छथि 'ट्राइबल चीफ'क अनुरूपहि, सुखलेल, विलासलेल, असंयत, उच्छृंखल आनन्दलेल; समाजक सुख ओ व्यवस्था लेल नहिं; तेँ भाषा, भूमि ओ परम्पराक आधार पर एहि देशक लोकक-ट्राइबल सोसाइटीक-संगठित भय एहि नृशंस शासक वर्ग सँ त्राणक उपाय करब आवश्यक। अनर्थे नैवानर्थशमनम्।

राजाजी छथि वेद-उपनिषद्क पण्डित, नेहरू छथि पाश्चात्य इतिहास-पुराणक। हैदराबादक सभा मे बजला ग्रीसक पण्डोराक बक्स थीक ई भाषाधार प्रान्तक समस्या, एकरा खोलब तँ एहिसँ अनेक अनिष्ट हयत।

भारतक पण्डोरा-बक्स फूजल ओही दिन जखन महकारी फूल सनसन नेहरू आदि कांग्रेसी लोकनि जेलसँ निकलि अंगरेजी गद्दी पर बैसला ओ विक्रमादित्यक सिंहासनबतीसी जकाँ अंगरेजक गीत गाबय लगला।

खैर, एहि पण्डोरा-बक्स सँ कांग्रेसक अनिष्ट-मण्डल बहरायल तँ ओकरासँ छुटकारा पयबाक 'आशा' सेहो संगहि आयल अछि। देश आब एहि पण्डित राजा लोकनिक पाखण्ड ओ अनाचार सँ परिचित भऽ रहल अछि।

कांग्रेस सम्मेलनमे एहि बेर विवादक सर्वप्रमुख विषय छल भाषाधार प्रान्त। महाराष्ट्र, कर्णाटक, केरल, आंध्र ओ तामिल देशक प्रतिनिधि प्रधान वक्ता छला। दुःखक विषय उत्तर भारतक भाषा समस्या एखनतक राजनीतिक क्षेत्र मे उचित ध्यान नहिं प्राप्त कयलक अछि। हैदराबाद मे दक्षिणिहिक प्रधानता छल। बुझि पड़ल उत्तर भारत मे भाषा सम्बन्धी कोनो संकटे नहि हो। हिन्दीक साम्राज्य दक्षिण देशसँ उत्तर मे कोनो तरहें कम अनिष्टकर नहिं अछि ई कते गोटय बुझै छथि, मानै छथि? दक्षिणमे तँ तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयलम् ओ मराठी कैं आब हिन्दी दाबि नहिं सकै अछि। उत्तरमे तँ मगही, भोजपुरी, अवधी, बुन्देली, बघेली, ब्रजभाषा, राजस्थानी आदिकैं एखन तक हिन्दी दबनहि अछि। एहि भाषा सभक बजनिहार अधिकांश एखनतक अपना कैं हिन्दी भाषी कहै छथि। मैथिली हालहि हिन्दी सँ अपन उद्धार कयलक अछि। परंच मिथिलासँ राजस्थान तकक सैकड़ों कांग्रेस प्रतिनिधि हैदराबादमे उपस्थित छलाह, एको गोटे कहाँ अपन मातृभाषाक दुर्गति तथा उद्धारक व्रतकथा मैसूरक मुख्यमन्त्री हनुमन्तैया

जकाँ सुनाओल! हिन्दी साम्राज्य वस्तुतः उत्तर मे अछि, दक्षिण मे नहिं। एकर प्रतीकारो तँ उत्तरहिमे हयब आवश्यक। एहि हेतु मैथिली भाषी लोकनि जगला। मगही, झारखण्डी, भोजपुरी, अवधी, बुन्देली, छत्तीसगढ़ी, बघेली, ब्रजभाषा ओ राजस्थानी-वला कहिया जगता?

मातृभाषा

लखनउक विज्ञान सम्मेलनमे अध्यक्ष डा० डी० एम० बोस मातृभाषा द्वारा सब तरहक-साधारण उच्च ओ वैज्ञानिक-शिक्षापर जोर देलनि। हुनक कहबकि अंगरेज राज द्वारा अंगरेजी भाषा कैं शिक्षाक माध्यम बनैलासँ एहि देशमे विद्याक भयानक क्षति भेल, सर्वथा यथार्थ। एखनहुँ एहिठाम कतेक साधारण ओ विशिष्ट व्यक्ति छथि जे अंगरेजीक महत्व बखान करैत थकै नहिं छथि। वसु महोदयक भाषण एहि देशक शिक्षा-प्रसार मे बड़ सहायक हयत, कारण भाषा, साहित्य आदिमे मातृभाषा बेस परन्तु विज्ञानक शिक्षा लेल अंगरेजी बिना काज नहि चलत ई कहनिहार व्यक्ति थोड़ नहि छथि। भारतीय विज्ञान परक अध्यक्ष हयबाक कारणें एहि विषयपर विचार देबयक डा० वसुसन अधिकारवान् दोसर केओ नहिं भय सकै अछि। जे केओ बजै छथि विज्ञानक शिक्षा मातृभाषा द्वारा नहिं भय सकै अछि से देशमे विज्ञानक उन्नति हेतु किछु विशेष, श्रम नहिं करय चाहैत छथि अथवा समाजक अधिकांश कें विज्ञान सँ वंचित राखि अपन अल्प ज्ञानक बलें पूज्य बनल रहय चाहै छथि। एहि छीन प्रवृत्तिक बड़ बढ़ियाँ निराकरण कयल वसू बाबू, रवीन्द्रनाथ ओ जगदीश चन्द्रक सन साहित्य एवं विज्ञानक महारथीक मातृभाषा सेवाक उदाहरण द्वारा।

मिथिला आन्दोलन

श्री महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह एम०पी० पार्लियामेन्ट मे मिथिला प्रान्तक हेतु प्रस्ताव कयलनि अछि ताहिसँ प्रजा सोशलिस्ट पार्टी हुनका पर बड़ रूष्ट अछि। कहै छनि अहाँ मिथिला आन्दोलन छोड़ू वा पार्लियामेन्टसँ इस्तिफा दिअऽ।

भाषाधार प्रान्तक निर्माण प्रजा सोशलिस्ट पार्टीक कार्यक्रममे अछि। कांग्रेसक

संग सहयोग लेल जे 14 विषय श्री जयप्रकाश नारायण हालहि जवाहरलालजीक समक्ष उपस्थित कयने छलाह ताहूमे एकटा छल भाषाधार प्रान्त। तखन महेस्वरबाबूक भाषाधार मिथिलाक आन्दोलन प्रजा सोशलिस्ट पार्टीक सिद्धान्त वा कार्यक्रमक विरुद्ध कोना भेल?

महेश्वर बाबूकेँ पार्लियामेन्ट सँ इस्तीफा लेल कहब प्रजा सोशलिस्ट पार्टीक हेतु सर्वथा अनुचित। ओ एम०पी० चुनल गेला सोशलिस्ट सदस्यगण द्वारा तखन प्रजा सोशलिस्ट पार्टी नहिं छल। जे पार्टी हुनका चुनलक तकरा दिससँ बजबाक हक प्रजा सोशलिस्ट पार्टी केँ नहिं। तेँ प्रजाक हितमे पार्लियामेन्टमे रहब वा ताहिठामसँ इस्तीफा करब पूर्णतः महेश्वर बाबूक विवेक पर छनि, हुनका आज्ञा देबाक हक कोनो पोलिटिकल पार्टीकेँ नहिं छै।

मैथिली

लहेरियासरायमे दरभंगा जिला भरिक पुस्तकालय सभक प्रतिनिधि-लोकनिक सम्मिलन भेल अछि। सभाक निमन्त्रणपत्र, प्रचार, व्याख्यान, प्रस्ताव आदि सब काज हिन्दी भाषामे, एतयक मातृभाषा मैथिलीमे नहिं, भेल अछि। पुस्तकालय सभमे मैथिलीक पुस्तकक संख्या दसो प्रतिशत नहिं देखल अछि। पुस्तकालय संगठनक कार्यमे मैथिली बहिष्कृते अछि। पुस्तकालय संघक संचालक लोकनि मातृभाषाक उपेक्षा कय बाहरक भाषा द्वारा गांव-गांव, घर-घर, व्यक्ति-व्यक्ति तक कोना विद्याक प्रसार करय चाहै छथि से बुझि मे नहिं अबै अछि। मिथिलामे स्कूलमे मैथिलीक उपेक्षा जाहि दिस लोकलबोर्ड, डिस्ट्रिक्टवेडि ओ म्युनिसिपैलिटीक कोनो ध्यान नहिं, कालेज युनिवर्सिटी मे उपेक्षा, पुस्तकालय, पोस्ट आफिस, हाटबाजार सर्वत्र मैथिलीक उपेक्षा ओ दिल्ली-बुलन्दशहरक क्षेत्रमे हिन्दीक बोलवाला अछि। शिक्षा ओ ज्ञानक प्रसार चाहयवाला बाबूलोकनि ईबात किये नहिं स्मरण रखै छथि जे मिथिलामे हिन्दी थीक अनतैया भाषा; समाज एकरा मैथिलीक स्थानमे मातृभाषा रूपें नहिं ग्रहण कय सकत, छ सय वर्षक मुसलमान ओ अंगरेज शासक लोकनिक प्रवासक बादहु हिन्दीकेँ ग्रहण नहिं कयलक; कांग्रेसी राजालोकनिहुक आग्रह हिन्दीक पक्ष ओ मैथिलीक विपक्षमे निष्फल हयत, आनठामक भाषा एतय जड़ि नहिं पकड़ि सकत। केवल मातृभाषा केँ उखाड़ि हिन्दी केँ ओकर स्थानमे रोपयक प्रयासमे समाजक शिक्षा ओ ज्ञानक विकासमे बाधा पड़त। से एखन ख़ूब भऽ रहल अछि।

भाषाओ प्रान्त

प्रजा सोशलिस्ट पार्टीक बेतुल सम्मिलनमे ओकर अध्यक्ष आचार्य कृपालानी बजला भाषा आदिक आधारपर समस्त भारतक एक बेर संगठन भऽ जाय एवं तकर बाद एहि सम्बन्धक कोनो आन्दोलन कैँ सरकार सहन नहिं करय। पार्टीक प्रधानमन्त्री श्री अशोक मेहता बजला दक्षिण मे भाषाक ओ उत्तर मे धर्मक आधारपर अनेक बखेड़ा भेल अछि। दक्षिणहुमे धर्मक ओ उत्तरहुमे भाषाक झमेल अछि से बेचारे मेहताजी कैँ मालूम नहिं अछि। खुद हुनक बम्बइ मे की हाल रहल अछि? हिन्दू मुसलमान व मराठी गुजरातीक झंझट ओतय कतहुसँ कम रहल अछि? भाषा आदिक जे आन्दोलन देशमे एखन चलै अछि तकरा एहि तरहें सीमित रूपें देखला सँ एहि विषयक संघर्ष देशमे बढ़ले जायत। आन्ध्रमे लोक उठल त ओकर हक देल। कर्णाटकमे लोक सरकारक विवेकक भरोस कयलक। उपेक्षित भऽ विद्रोह कयलक त नेहरुजी वचन देल कर्णाटक तथा अन्य भाषाधार प्रान्तक निर्माण हेतु कमिसन बनत।

अक्टूबर नवम्बरतक जे ई कमिसन बनयलेल अछि से यदि अशोक मेहतासन व्यक्तिक धारणापर काज कयलक त झंझट घटयक बदला बढ़त। जतय हल्ला हो ततय किछु बात लोकक मानि शांति राखी ताहिसँ एकक बाद दोसर ठाँ हल्ला हयत। देशक सुव्यवस्था हेतु आवश्यक अछि जे कतहु माङ्ग्य वा नहिं ओ जे हक हो से दय दी। से नहिं भेलासँ कहियो तँ उपेक्षित क्षेत्रक लोक मे होश हयत। तखन ओ सरकारक प्रति कते निर्मम भऽ संघर्ष करत। भाषाक आन्दोलन कतहु कम अछि कतहु बेसी! प्रान्तक निर्माण आन्दोलन उग्र वा मन्द रूप देखि करब कांग्रेस सरकारक मूर्खता हयत। एहिसँ-शान्तिक विरुद्ध ओ विद्रोहक अनुकूल भावना लोकमे प्रचलित हयत। बुद्धिमान् राजा न्याय ओ विवेकसँ काज करै अछि, बुद्धिहीन भयसँ कर्तव्यपर चलै अछि। कांग्रेसक पद्धति एखनतक बुद्धिहीनक रहल अछि। आबहु विवेक धरत वा अविवेक द्वारा विद्रोहक अग्निकैँ देश भरिमे पसारि अपना संग अनेक गुणवान् वस्तुहुकैँ भस्मसात् करत?

(26 जनवरी1953)



हिन्दी-उर्दू

उत्तर प्रदेश मे उर्दूकेँ हिन्दीक संग क्षेत्रीय ओ राजकीय भाषा बनयबाक बड़ जोर आन्दोलन अछि। अंजुमनतरक्कीए- उर्दू-ए-हिन्द (भारतीय उर्दू विकास परिषद्) 20 लाख उत्तर प्रदेश वासी लोकनिक हस्ताक्षर सहित दिल्ली सरकारक ओतय एहि हेतु पार्थनापत्र दाखिल कयलक अछि। उत्तर प्रदेशक हिन्दीवादी लोकनि एहिसँ बहुत क्षुब्ध छथि। कहै छथि ई 20 लाख प्रार्थी लोकनि मुख्यतः थिका पश्चिम उत्तर प्रदेश-अलीगढ़, मुरादाबाद, रामपुर आदि-क मुसलमान जे उर्दूकेँ मुसलमानक एकमात्र भाषा कहि प्रार्थनापत्रपर मुसलमान सभक हस्ताक्षर लेल अछि; एहिसँ हिन्दू मुसलमानक धार्मिक कटुभाव फेर कायम हयत ओ वढ़त। दोसर विषय ओ कहै छथि संख्याक–मुसलमान उर्दू भाषी छथि उत्तर प्रदेशमे सयमे चारि। चारि प्रतिशत भाषा भाषी 96 पर लादल जाय से अनुचित। तेसर बात हिन्दीवादी लोकनिक अछि उर्दू स्वतंत्र भाषा नहिं हिन्दीक शैलीमात्र थिक। तेँ उर्दू केँ राआभाषा वा क्षेत्रीय भाषा आदि स्वतंत्र भाषाक पद नहिं देल जाय।

हिन्दीवादी लोकनि ब्रजभाषा, बुन्देली, बघेली, छत्तीसगढ़ी, अवधी ओ भोजपुरी-कतहु कतहु मैथिलीहुँकेँ हिन्दीक अन्तर्गत मानि दिल्लीसँ पुर्णियातक हिन्दीक प्रदेश बनयबालेल व्याकुल छथि।

उर्दू हिन्दीसँ भिन्न नहिं थीक से ठीक। परन्तु प्रधान उर्दू वा हिन्दी? उर्दू-हिन्दी दिल्ली मेरठ-बुलन्दशहरक भाषा थीक। दिल्लीमे जखन बाहरसँ आबि मुसलमान राजा भेला त ओतयक भाषाकेँ शासनक सुविधा लेल अपनाओल ओ ओकरा हिन्द-भारत-क भाषा हिन्दी, हिन्दकी, हिन्दुस्तानी ओ पश्चात् उर्दू कहल। मुसलमानी राज्यक प्रसारक संगसंग उर्दू (अर्थात् हिन्दी) क सहो प्रसार भेल। धीरे-धीरे मुसलमानी राजक दृढ़ताक संगसंग राजा ओ राजाश्रित हिन्दू व्यापारी वर्ग द्वारा प्रचारित उर्दू-हिन्दीक आसन अवधी, भोजपुरी, मैथिली आदि प्रान्तीय भाषासबक ऊपर दृढ़ भेल।

हिन्दीवादी लोकनि हिन्दी-उर्दूक एहि उत्पत्ति ओ प्रसारक इतिहासकेँ देखथु, एहिपर गम्भीर भऽ विचारथु। हिन्दी राष्ट्रभाषा रहओ परन्तु मातृभाषा ओ

राजभाषाक पद ओ उर्दूक संगहि दिल्ली-मेरठ-बुलन्दशहरक क्षेत्रमे प्राप्त कय सकै अछि ताहिसँ बाहर नहिं। ब्रजभाषाक सूर, अवधीक तुलसी वा मैथिलीक विद्यापतिकेँ यदि ओ अपन कहि दिल्लीसँ पुर्णिया धरि भूखण्डक मातृभाषा ओ राजभाषा बनय चाहत त राष्ट्र भाषाहुक पद ओकर टूटि जेतै। हिन्दीक साहित्य जे किछु मूल्यवान छै से अर्वाचीन, प्राचीन नहिं। आनक सूर, तुलसी ओ विद्यापतिकेँ लय उर्दूक मीर ओ गालिबकेँ पछाड़ैक प्रयास जुनि करुओ। हिन्दीक आक्रमण केवल उर्दूहिपर नहिं अछि समस्त आर्यावर्त्तक प्रान्तीय भाषासब मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रजभाषा, बुन्देली, बघेली, छत्तीसगढ़ी ओ झारखण्डी-ओकर शिकार बनल अछि। उर्दूवाला लोकनि यदि अपन भाषाक प्रतिष्ठापनमे सफल होअय चाहै छथि त आरहु प्रान्तीय भाषासबक आन्दोलनक संग दय चलथु अन्यथा एसगर किकियाति रहता केयो नहिं सुनत।

अंगरेजी

राधाकृष्णनजी दर्शन शास्त्र ओ शिक्षाक क्षेत्रमे देश तथा विदेशमे मान्य छथि। भारत-राज्यक उपाध्यक्ष छथि। अंगरेजी भाषाक नीक लेखक एवं वक्ता छथि। परन्तु अंगरेजी भाषा लिखय ओ बाजबमे जहिना व्युत्पन्न छथि तहिना अपन मातृभाषा तेलगुमे अपटु। मातृभाषा मे हिनक कोनो लेख वा भाषण महत्वक भेल एकर पता एखन पर्यन्त नहिं लागल अछि। हिनक ई त्रुटि अत्यन्त दुखद रहितहुँ क्षम्य थीक, कारण मनुष्यक शक्ति ओ समय सीमित अछि। कतबो केओ प्रतिभावान् हो, सब विषय, सब शास्त्रमे ओ समान रूपें व्युत्पन्न हो से सम्भव नहिं। माइकेल मधुसूदन दत्त (1822-63) ओ रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1861-1941) अंगरेजी भाषा ओ साहित्यपर अपूर्व अधिकार रखै छला। परन्तु मातृभाषा बंगालक सेवाक हेतु ओहि अधिकार केँ कम करय पड़लनि। विवेकानन्द (1863-1903) ओ अरविन्द घोष (1863-1950) केँ अपन मातृभाषा बंगलामे अलौकिक प्रतिभा छलनि, परन्तु अंगरेजी भाषा मे विशेष कार्यक्षमताक प्राप्तिक हेतु ओहि प्रतिभाकेँ कुण्ठित करय पड़लनि।

राधाकृष्णन सन प्रतिभावान मातृभाषामे अक्षम होथि तकर एकेटा कारण कि ओ सर्वतोभावेन अंगरेजी भाषाक अभ्यास कयल। हुनक ई त्रुटि क्षम्य। परन्तु

अपन एहि दोष कैं यदि ओ देशक हेतु अनुकरणीय गुण बनबय चाहथि तँ हुनक भ्रान्ति आ पाखण्डकैं लोकक समक्ष उघारब सर्वथा कर्त्तव्य। ओ कहै छथि स्कूलक शिक्षा तँ हो मातृभाषामे, परन्तु कालेजमे अंगरेजीये रहय। स्कूलमे मातृभाषा द्वारा पढ़निहार कालेजमे अंगरेजीमे कोना सुविधा पाओता? पढ़निहार, पढ़ौनिहार दुनूसँ केयोतँ राधाकृष्णन जकाँ अंगरेजीक अभ्यासी नहि रहता तखन हुनका ओहि विदेशी भाषा मे विषय कोन तरहें बुझबमे औतनि? एक दिस विज्ञानपरिषद्क अध्यक्ष कहै छथि सब शिक्षा मातृभाषा द्वारा हो, दोसर दिस पण्डित राधाकृष्णन अंगरेजीक दुहाइ दै छथि। ई अंगरेजीक पण्डित लोकनि कतेक दिनमे एहि समाजक जान छोड़ता?

(20 जुलाई 1953)

❑❑

मिथिलाराज्य

गत रवि 26 जुलाइकें दरभंगा टाउन हॉलमे जे मिथिला प्रान्तीय सम्मिलन भेल ताहिमे सर्वसम्मतिसँ मिथिला प्रान्त (राज्य) क निर्माणक पक्षमे प्रस्ताव स्वीकृत भेल।

प्रस्तावक विषय पर जे भाषण सब भेल ताहिसँ पता चलल एखनहुतक कते व्यक्ति छथि जनिका भ्रम छनि जे मिथिला प्रान्तक निर्माण केवल ब्राह्मणक लाभ हेतु हयत तैं वैह लोकनि ओकर हेतु आन्दोलन करै छथि ओ करथु।

भारतमे वर्ण क्रमे ब्राह्मणक जे स्थान अछि ताहिसँ वृहत् मिथिलामे किछु नहिं। भारतमे यदि सामूहिक मताधिकारसँ बाह्मणक विशेषाधिपत्य नहिं त मिथिलामे कोना भऽ सकत?

असलमे मिथिलाक विरोधी लोकनि जोरशोरसँ प्रयासमे लागल अछि कि मिथिला राज्यक आन्दोलनकैं भङ्गठाबय लेल ब्राह्मण-अब्राह्मणक वर्णविशेषकैं जगाबी। कतहु कतहु एहि प्रचारक कारणें लोक एहि आन्दोलनक प्रति उदासीन भइयो गेल छथि।

किन्तु मिथिलाराज्यक निर्माणकैं रोकबाक ई दुष्ट प्रयास कतेदिन चलि सकत? मिथिलाक समाजमे जे अशिक्षा तकर लाभ मिथिला विरोधी लोकनि कते दिन घरि लयसकता? एहिसँ प्रान्त प्रान्तक मैत्रीमे, भारतक ऐक्य ओ उन्नतिक कार्य मे बाधाहेयत। तैं एहि सबकैं छोड़ि सब प्रान्तक उचित अधिकार देल जाय; ओकर उन्नति कार्यक सहायता भेटय से प्रयास सर्वोपरि रहय। ताहिसँ देशक कल्याण हयत। परोसियाक हानहिमे अपन लाभ देखयवाला अपना देश मे बहुत छथि। देशक सर्वांगीन उन्नति लेल एहि प्रवृत्तकैं छोड़य पड़त।

मैथिल ब्राह्मणक एहि विषयमे विशेष कर्त्तव्य अछि। संख्यामे बेचारे अल्प छथि परन्तु वर्ण ओ विद्याक कारण समाजमे सर्वोपरि रहला अछि। यावत् ई लोकनि अपन शक्तिक उपयोग समस्त समाजक कल्याण हेतु करै छला ताबत सब हुनक उच्चता मानयमे गौरव अनुभव करै छल। जखन कुलक ओ वर्णक बलें केवल स्वार्थमे लिप्त रहय लगला, ब्रह्मवादक तिरस्कारकय ईर्ष्या-द्वेष ग्रहण कयल त ब्राह्मणेतर वर्गक तिरस्कार पात्र बनला। ब्राह्मणक इर्ष्याद्विष अब्राह्मणहिक प्रति नहिं अछि, अपनहुमे ककरो केओ उन्नति, सुयश वा प्रतिष्ठा सहयवाला नहि। एहिसँ समाजहिक नहि ब्राह्मण वर्गहुक अत्यन्त अहित भऽ रहल अछि। ओ

लोकनि याज्ञवल्क्य-मण्डनक औदार्य किछुओ मात्रामे आनथु, सर्व खल्विदं ब्रह्मक भाव थोड़बो फेर लाबथु त हुनक अपन तथा समस्त समाजक बड़ उपकार हृयत। तखन ओ मिथिलाहिक नहिं समस्त भारतक फेर सम्मान-पात्र बनता।

मिथिलाक्षर

मिथिला प्रान्तीय सम्मिलनक अध्यक्ष पद सँ श्री महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह एम०पी० बजला भाषा, साहित्य, दर्शन, विज्ञान ओ संगीतक संगहि मिथिला अपन लिपिओ रखने अछि, ओकर समस्त प्राचीन साहित्य अपनहि लिपिमे लिखल वर्तमान अछि।

मिथिलाक ई लिपि बंगालक लिपिसँ प्रायः अभिन्न अछि। असलमे प्राचीन समयमे समस्त पूर्वोत्तर भारत-मिथिला, मगध ओ गौड़-बंगक लिपि एके छल, जकर नाम इतिहासकारलोकनि पूर्वोत्तर लिपि देने छथि। मिथिलाक्षर ओ बंगाक्षर ताही पूर्वोत्तर लिपिक किंचित् भिन्न रूपसब थीक।

प्रायः सय वर्ष पूर्व जखन मिथिलाक स्कूल सबमे मैथिलीक स्थानमे नियम पूर्वक हिन्दीक पढ़ाइ होमय लागल त ताही संग मिथिलाक्षरहुकैं हटाय नागरीकैं स्थानदेलगेल। मिथिलाक्षरक अभ्यास केवल संस्कृत विद्यालय सबमे रहि गेल । पश्चात् त ओतहु मिथिलाक्षर तिरस्कृत होमय लागल जकर फल भेल कि एखन संस्कृतहुक कते नवीन पण्डित मिथिलाक्षर मे लिखल ग्रन्थ नहिं पढ़ि सकै छथि।

एहितरहें मिथिलाक लिपिकैं हटाय मिथिलामे विद्याक प्रसारमे बड़ पैघ बाधा उपस्थित कयल गेल अछि – प्राचीन ग्रन्थ ओ परोसक सुसम्पन्न बङ्गला साहित्य पढ़ब कठिन भऽ गेल अछि। तैं प्राचीन संस्कृत ओ मैथिली तथा बङ्गलाक समुन्नत साहित्यसँ परिचय लेल मिथिलाक्षरक प्रचार अनिवार्य अछि।

मैथिल महासभा

सहर्षा सम्मिलनमे दरभंगाक महाराज श्रीकामेश्वर सिंहक अध्यक्षतामे मैथिल महासभा मिथिला प्रान्त, मिथिलाक्षर, मिथिला विश्वविद्यालय, कोशी योजना आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषयक प्रस्ताव पास कयलक।

मैथिल महासभा बड़ पुरान संस्था अछि। सहर्सामे एकर ई 41 म वार्षिक सम्मिलन छल। एकर सदस्य लोकनि प्रभावशाली व्यक्ति छथि। एकर प्रस्ताबहुक तैं प्रभाव छै। ई प्रभाव औरहु बेसी होइत यदि महासभा केवल मैथिल ब्राह्मण

ओ करण कायस्थक नहिं, सम्पूर्ण मैथिल समाज, समस्त मिथिलावासीक संस्था रहैत। आशा छल महासभाक कर्णधारलोकनि सहर्षमे एहिबेर महासभाक दुआरि सभक हेतु खोलि एकरा और सबल बनौता। सेनहिं भेल, ई दुःखक विषय।

मिथिला प्रान्तक विषयमे ब्राह्मण ओ कायस्थक अतिरिक्त आन वर्णक लोक जे सशंकित छथि तकर एक प्रबल कारण अछि मैथिल महासभाक ब्राह्मण-कायस्थगत सदस्यता। समस्त मिथिलाकेँ एक क्षेत्रमे बान्हयक हेतु तेँ मैथिल महासभाकेँ सब वर्णक, सभ वर्गक संस्थामे परिणत करब बड़ सहायक होइत।

भारत पर अमेरिकाक प्रभुत्व

भारत पर अमेरिकाक प्रभाव बड़ भयंकर रूपें बढ़ि रहल अछि। राष्ट्रीय जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे अमेरिकाक लोक तथा ओकर भारतीय एजेंट घुसि रहल अछि। भारतक फौज, गुप्तचर विभाग, शासन विभाग, प्रमुख उद्योग, विदेशी व्यापार, स्कूल ओ विश्वविद्यालय, समाचार पत्रादि, फिल्म व्यवसाय सब पर अमेरिका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूपें अपन अधिकार कायम करबाक प्रयास कय रहल अछि ओ एहिमे ओकरा बहुत सफलता भेट रहल छै।

पहिनहु अमेरिका भारतीय स्वतंत्रताक विरोधी छल। 1907 इस्वीमे प्रशान्त सागरक किनार शिक्खलोकनिक संग अमेरिकावासी दुर्व्यवहार कयने छल तथा एहनहि दुर्व्यवहार गदरपार्टीक लोक सभक संग कयने छल। 1917 मे अमेरिकाक सुप्रिमकोर्ट निर्णय कयलक भारतीय अमेरिकाक नागरिक नहि भऽ सकै अछि।

एखन अमेरिकाक दिससँ दुनिया भरिमे प्रचार होइ अछि अमेरिका बड़ स्वतंत्रता प्रिय देश अछि ओ रूस स्वतंत्रताक विरोधी, अमेरिकामे विदेशी केँ भ्रमण करबाक स्वतंत्रता छै ओ रूसमे ने जनताकेँ विचारस्वातंत्र्य छै ने विदेशी केँ स्वच्छन्दतापूर्वक भ्रमण करबाक सुविधा। किन्तु 1929 मे जखन रवीन्द्रनाथ अमेरिका जयबाक हेतु तैयार भेला तँ अमेरिकन सरकार हुनका 'दुष्ट आगन्तुक' कहि अमेरिका जयबासँ रोकि देलकनि। 1930 मे रवीन्द्रनाथ रूस जयबाक हेतु तैयार भेला तँ रूस हुनक स्वागत कयलक। ओतय जयबासँ पहिने ओ रुस केँ जनस्वातंत्र्यहीन ओ हिंसक प्रवृत्तिक देश बुझै छला तथा ओकरा विरुद्ध विचार प्रकट कयने छला। अपना आँखिसँ रूसक व्यवस्था देखि हुनका पहिला विचारक एकदम विपरीत अनुभव भेलनि, ओ 'रसियार चिठी' लिखि दुनियाकेँ बतौलनि। **झूठ प्रचार सँ सत्यकें बहुत दिन धरि झांपल नहिं जाऽ सकै अछि। रूसहिक सन समाजव्यवस्था भारतमे कायम करबाक हेतु, रूसहिक लोकसन सुखी-सम्पन्न,**

स्वतंत्र ओ कलाविद् अपना देशक लोक के बनयबाक हेतु व्याकुल भऽ उठला। जे अमेरिका रवीन्द्रनाथ सनक महर्षिकें 'दुष्ट आगन्तुक' कहि अपमान कयलक से आइ जवाहरलाल नेहरुक शानदार स्वागत करै अछि एकर की तात्पर्य?

तात्पर्य स्पष्ट अछि। जँ रवीन्द्रनाथ अमेरिका जइतथि तँ ओहिठाम पूँजीसाही द्वारा निग्रो, रेडइंडियन ओ समस्त मजदूर वर्गक जे भयंकर शोषण ओ अपमान भय रहल अछि तकर चित्र दुनियाक समक्ष उपस्थिति करतथि।

हुनक व्यक्तित्व ततेक ऊँच्च छलनि, हुनक वाणीमे ओ शक्ति छलनि जाहिसँ अमेरिकाक अनिष्ट अवश्यम्भावी छल। तेँ ओ वास्तवमे अमेरिकाक हेतु 'दुष्ट आगन्तुक' छला। रवीन्द्रनाथ सत्यक भूखल छला, सत्यक ज्ञान ओ प्रचारक हेतु संलग्न रहै छला। नेहरू शक्तिक भूखल छथि, येनकेन प्रकारेण, देश ओ समाजक अनिष्टहु कय लोकसँ पैर पुजबैलेल व्याकुल रहै छथि। अमेरिका जवाहरलाल नेहरूक स्वागतक नीक समारोह कय भारत पर अपन प्रभुत्व जमयबाक हेतु हिनका हथकण्डा बना लेलक।

जुलाइ 1949 मे कम्युनिष्टराज चीनमे कायम भेल, चीनसँ अमेरिकाक अड्डा उखरि गेल। रूसक विरुद्ध मोर्चाबंदी करबाक हेतु आब अड्डा बनयबाक हेतु ओकरा एशियामे कोनो आन पैघ देश चाही। भारतक छाड़ि आन कोन देश एहन उपयुक्त भेटत। अक्टूबर 1949 मे नेहरू साहेब अमेरिका गेला। खूब उद्धब-वाधव भेल। नेहरु साहेबक भारत लौटतहिं अमेरिकन युद्ध-कला विशेषज्ञ लोकनि भारत आबि एहिठामक फौजी स्थिति ओ फौजी सामग्री केँ देखय सुनय लगला। भारतक सुरक्षा अक्षुण्ण रखबाक हेतु नेहरूजी देशक रेलमजदूर ओ राजनीतिक पार्टी सभक विरुद्ध सुरक्षा कानून पास कयने छथि। किन्तु अमेरिकन सबकेँ नेहरू सरकारक फौजी विभागमे सबठाम जयबा-अयबाक, सभ वस्तुक ज्ञान प्राप्त करबाक सुविधा छनि। वास्तवमेअँग्रेज ओ अमेरिकनहि सब नेहरूजीक फौजी विशेषज्ञ ओ फौजी परामर्शदाता छथि। 1951 मे दक्षिण भारतक 'ज्वाइन्टआर्मी स्टाफ कौलेज' मे अमेरिकन फौजी अफसर लोकनि शिक्षकक रूपमे काज करय लगला। भारतक फौजी अफसर लोकनिक विशेष शिक्षा अमेरिकामे होबय लागल। अमेरिकावाला बनिया थीक – सस्त भाव पर चीज खरीदै अछि ओ महग भाव पर बेचैत अछि। नेहरू साहेबक स्वागत-सत्कार कय ओ बड़ सस्तमे भारतकेँ खरीद लेलक।

(3 अगस्त 1953)



चीन ओ अमेरिका

च्याङ्‌काइशेक कम्युनिस्ट सेनासँ हारि ताइवान् द्वीपपर शरण लेल। ताइवान् (फारमोसा) चीनहिक अंग थीक। च्याङ् ओ हुनक कुओमिङ्ताङ् पार्टी तथा सेना चारिवर्ष सँ ओतहि अड्डा देने छथि, अमेरिकाक सहायता सँ निर्वाह कय रहल छथि एवं मुख्य चीनपर आक्रमणक तैयारी करै छथि। कय बेर कम्युनिस्ट चीन पर हमला लेल च्याङ् उकस-पाकस कयल परंच प्रेसिडेन्ट ट्रुमन रोकि देल। आब प्रेसिडेन्ट आइसनहावर हुनका परसँ प्रतिबन्ध हटालेल। च्याङ् चाहथितँ चीनपर हमलाकय सकै छथि। प्रायः करबे करता कारण ओ भेला अमेरिकाक आश्रयी तथा अमेरिकाक इच्छा छैये कि एशियामे जतय कतहु ओकरा युद्ध होइ ततय एसियाहिक लोककें ओ ओकरासँ बझाय दिअय।

तीन वर्ष पूर्व 1950 मे जखन कोरियामे अमेरिका अपन युद्धवृत्ति शुरु कयलक तँ ओकरा आशा छलै नान्हिटा कोरिया देश ओकर हमलाक कथा सुनतहि पैर पर खसि पड़त, चीन-हालहि महान् गृहयुद्ध सँ किछु मुक्त भेल अछि। ओ किछु उकठ कइये नहिं सकै अछि। परन्तु ओकर सब अन्दाज गलत भेलै। कोरियावासी अदम्य साहस, उत्साह ओ धैर्य देखौलनि, चीनक सब तरहक सहायता शीघ्रे भेटल। फल भेल अद्यावधि कोरियाक युद्धमे अमेरिकाक बहुत धन-जनक क्षति भय गेल। बेचारा के इहो आशा छलै, जौ कोरिया ओ चीन चटपट हारि नहिंयों मानत तँ ब्रिटेन ओ फ्रांस तँ खदुका अछिये, ओकरा लोकनिक सेना युद्धमे लड़त कटत, अपने सिर्फ खर्च बर्च दय कात करोटसँ महाजनी करब। ब्रिटेन, फ्रांस ओ अन्य सब देश किछु फूल अक्षत दय कातहि रहल, पड़ि गेल सोलहो आना चपेटमे अमेरिका स्वयं। ओकर धन-जनक अपार हानि होमय लागल। धनकेँ तँ हाथ-पैर नहिं होइछै कि पड़ा जायत, मुंह नहिं छैक किकियायत। सैनिक सब हारि पर हारि पाबि हिम्मत छोड़ि भागय लगला। लाख सख्ती हुनका लोकनि पर कयल गेल भागब बन्द नहिं भेल। तखन तँ अमेरिका अपन फौजक बलें आब हारिये निश्चित देखि एसियाहिक खदुका लोकनि कें चीन-कोरियासँ लड़बक हेतु उकसाबय लागल। जापान एखनतक नहिं पटियाबमे अयलनि अछि। च्याङ् बेचारे किछु बेसी धड़फड़ायल छथि।

अमेरिका आब देखि लेलक अपना फौजकबलें ओ एसियामे साम्राज्य स्थापित नहिं कय सकै अछि। धन छै, लालसा छै, चारुकात महासमुद्रसँ घेरल अछि तेँ वाह्य आक्रमणक डर सेहो कम छै, तखन हाथ पेर संच राखब कठिन छै।

अमेरिका उकठक बढ़िया ज़बाब चीनक नेता लोकनि देलनि अछि। हुनक कहब छनि ओ शान्ति चाहै छथि परंच अमेरिकाकेँ यदि बलक घमंड हो एवं एखनतक कोरियासँ लड़ैसँ थाकल नहिं हो तँ भरिपूर लड़ि लिअय, हमरालोकनि शान्ति लेल, युद्ध लेल दुनू हेतु तैयार छी।

मदमत्त साम्राज्यवादी सँ एहनेकथा कहबसर्वथा उपयुक्त। ओ लोकनि औदार्य वा विवेक कथाके बलहीनता बुझै छथि, आघात पर प्रत्याघातेटा हुनक उनमत्त चित्तकें स्थिर कय सकै अछि।

(16 फरवरी 1953)



चीन ओ रूस

चीनक प्रधानमंत्री चाउ हालहि कोरियामे शान्ति हेतु जे प्रस्ताव रखने छथि ताहिसँ अमेरिका बड़ विचित्र स्थितिमे पड़ि गेल अछि। आइसनहावरक एसियामे युद्ध बढ़यबाक नीतिमे बाधा उपस्थित भेल अछि।

चाउक प्रस्ताव अछि रोगी युद्धबन्दीक आदान-प्रदानहो, अन्य युद्धबन्दी मे जेलोकनि अपना देश जयबाक हेतु इच्छुक छथि तनिका वापस जयबाक सुविधा भेटय, जे लोकनि स्वदेश नहि जाऽ चाहै छथि तनिका कोनो निष्पक्ष देशक जिम्मा राखल जाय तथा कोरिया सन्धिक अन्य विषय पर विचार हो। आठ मास पूर्व युद्धबन्दीहिक प्रश्न पर सन्धि-वार्ता स्थगित भेल छल। राष्ट्र संघमे भारत द्वारा उपस्थित कोरिया शान्तिक प्रस्ताव चीन-रुसकैं मान्य नहिं भेलै तँ अमेरिका ओही आधार पर चीन-रूसक विरुद्ध प्रचार करय लागल। आशा-छलै प्रचार द्वारा कमसँकम भारतक जनमतकैं अपना पक्षमे करब। प्रेसिडेन्ट आइसनहावर तुरत ताइवान स्थित च्याङकाइशेक कैं चीनक मुख्य भूमिपर आक्रमण करबाक संकेत देत। चीन एहि सँ डरायल नहिं। आत्मरक्षा हेतु दृढ़ निश्चय कयलक। कहलक अमेरिकासँ हम शान्ति ओ युद्ध दुनू हेतु तैयार छी। समस्त एसियामे आइसनहावरक युद्ध प्रयासक घोर विरोध भेल। अमेरिकाक अनुयायी नेहरू सरकारो जनमतक रोचकय आइसनहावरक घोषणाक निन्दा कयलक। यूरोपहुमे एहि घोषणाक विरोध भेल। हारिकय प्रेसिडेंट आइसनहावर अपन वृहत युद्ध योजना स्थगित कयल, चीनक कोरियाशान्ति सम्बन्धी घोषणासँ एहि महिषासुर संग्राममे एक नवीन स्थिति उत्पन्न भेल अछि।

रूसक परराष्ट्रमन्त्री मोलोतोव सेहो रेडियोसँ रूस द्वारा चीनक प्रस्तावक समर्थनक घोषणा कयल। एहिसँ अमेरिका और विकल भय गेल अछि। सोचै-छल स्तालिनक देहान्तक बाद सत्ताक लेल रूसमे गृह युद्ध हयत, साम्यवादी देश सभक नेतृत्व हेतु रूस ओ चीनमे युद्ध हयत। परंच भऽ रहल अछि सभ एकर विपरीत। रूसमे गद्दी हेतुगृहयुद्ध नहिं भेल। नवीन नेतालोकनि मिलिजुलि काज करै छथि। नवीन प्रधानमन्त्री मार्लेकोव पद ग्रहण करितहि नीतिक घोषणा कयल, परराष्ट्र मंत्री मोलोतोवक घोषणा ओही शान्तिक प्रमाण थीक। रूसक शासन व्यवस्थामे एकर प्रमाण भेटल अछि जेल सँ बहुसंख्यक कैदीलोकनिक

मुक्तिक घोषणा ओ रूसक दण्ड विधानमे सुधारक आयोजन। स्तालिनक देहान्तक बाद चीनक प्रधान मंत्री चाउ मास्को जाऽ हुनका श्रद्धांजलि अर्पित कयल। एखन रूस ओ चीन दुनू मिलि कोरियाक शान्ति हेतु प्रयास करै अछि। चीनक सर्वोच्च नेता माओ शीघ्रहि विचारविमर्श लेल रूस जाऽ रहल छथि। ई सब रूस-चीनक दृढ़ मैत्रीक प्रमाण थीक। एहिसँ अमेरिकाकेँ निराश हयब स्वाभाविक।

अमेरिकाक युद्धोन्माद केवल विश्वविजयी हयबाक अभिलाषासँ नहिं अछि। आर्थिक संकटसँ बचबाक लेल अमेरिकाकेँ संसार मे यत्रतत्र युद्ध जारी राखब आवश्यक अछि। द्वितीय महायुद्धक बाद पश्चिमी यूरोपक भग्न उद्योग व्यवसायक पुनर्व्यवस्था हेतु अमेरिकाक वस्तुक खपत होमय लागल। पश्चिमी यूरोप कने सुभ्यस्त भेल कि अमेरिकामे मन्दी ओ बेकारी भीषण रूप धारण कयलक। ब्रिटेन, फ्रांस, भारत, पाकिस्तान आदि अनेक देश एहि मन्दीक चपेटमे आबि गेल। 1929 क भीषण आर्थिक संकटक आशंका उपस्थित भेल। विराम सन्धि वार्त्ता स्थगित भेल। मन्दी रुकल। चीन-रूसक शान्ति प्रस्तावक फलस्वरूप अमेरिकामे फेर मन्दी आयत। मन्दीक भूतसँ बचबाक हेतु प्रेसिडेंट आइसनहावर तृतीय महायुद्धक आयोजन कय रहल छथि। चीन-रुस शान्तिक प्रस्ताव उपस्थित कय, शान्ति हेतु संसारक जनमतक संगठन कय अमेरिकाक समक्ष मन्दीक भूत पूँजीवादक जमदूत प्रस्तुत कय देलक अछि। तेँ संसार भरिक पूँजीवादी समाचार पत्र चीन-रूसक एहि प्रस्तावकेँ शान्ति-आक्रमण कहै अछि। जँ चीन-रूस एही तरहें संघवद्ध भय अमेरिका केँ बेरबेर निरस्त करैत रहल, युद्ध ओ शान्ति दुनूमे अमेरिकाकेँ परास्त करैत रहल त संसारमे पूँजीवादक अन्त शीघ्रहि हयत।

(13 अप्रिल1953)

□□

पाकिस्तान

डेढ़ वर्ष पूर्व ख्वाजा नजीमुद्दीन पाकिस्तानक गवर्नर जनरल छला। प्रधानमन्त्री लियाकत अली खांक हत्याक बाद गवर्नरजेनरल पद छोड़ि प्रधानमन्त्रीक पद धयल। ई क्रिया बहुतोकेँ कोनादन लागल। प्रधानमन्त्री भेल प्रधान शासन कर्त्ता परंच गवर्नर जनरल भेल राज्यक अध्यक्ष। प्रधानमन्त्रीकेँ कार्यक बाहुल्य रहितहुँ ओ भेल गवर्नर जनरलक अधीन। उच्चपद छोड़ि निम्न पदपर आबि ओ प्रतिष्ठासँ शक्तिकेँ बेसी महत्त्व देल। लियाकत अलीक हत्याक बाद नजीमुद्दीनक प्रधानमन्त्री बनब लोक केँ विचित्र लगलै। हुनक कहब कि हम अनिच्छासँ केवल देशहितमे प्रधानमन्त्री बनलहुँ लोककेँ विश्वासयोग्य नहिं होइ छै। ई कथाओ ताहि समय कहाँ बाजल छला।

नजीमुद्दीन गवर्नरजनरल छला तखन वर्त्तमान गवर्नरजनरल गुलाम मुहम्मद हुनक अधीन लियाकत अलीक मन्त्रिमण्डलक सदस्य छला। गुलाम मुहम्मद पड़ै छला नजीमुद्दीन पदक्रमे तेसर खाड़ीमे। गुलामकेँ तेसरसँ उठाय अपन पहिल मे राखि अपने लियाकतक दोसर मे धब्ब दय खसब विचित्र चक्रचालि जकां लगै छल। तेहनेसन लागल अछि गवर्नरजनरल गुलाम मुहम्मदक नजीमकेँ हटाय मुहम्मद अलीकेँ हुनक जगह देब। नजीम ओ मुहम्मद दुहू ढ़ाकाक राजवंशक थिका। दुहूमे इर्ष्या द्वेष हयब स्वाभाविक। एककेँ हटाय दोसरक पदग्रहण करब एहिवर्गक हेतु साधारण व्यवहार भेल।

नजीमुद्दीन कहै छथि हम मन्त्रिपद सँ नहिं हटब, गवर्नर जनरल के हटायबाक हठ नहिं छनि। गवर्नरजनरलक पक्षसँ कहल गेल अछि हुनका ई हक छनि। पाकिस्तान मे एहि दुनू मतक लोक अछि। किछु व्यक्ति नजीमक पदच्युतसँ सन्तुष्ट छथि। किछु प्रायः नजीमक पक्षमे छथि। परंच नजीमक वकतव्य सँ अंदाज होइ अछि हुनक पक्ष बड़ दुर्बल अछि।

पाकिस्तानमे पदक हेतु बड़-बड़ षड़यन्त्र सब भेल अछि। पाकिस्तानक निर्माणसँ पूर्व कतय गोटय जे पाकिस्तान आंदोलनमे प्रमुख छला पाकिस्तान सरकारमे पद पयबासँ वंचित रहि गेला। सुहरावर्दी ताहि व्यक्तिलोकनिमे छथि। ओतँ मुस्लिमलीग छोड़ि अपन अलग संस्था अवामी मुस्लिम लीग बनौने छथि। जे जेहन धूर्त छल तेहनं बढ़िया जगह दाबि लेलक। किछु दिनतक भारतक आक्रमणक आशंकामे देशमे एकता रहल। परंच से आशंका जँ-जँ दूर भेल गेलै

तँ तँ नेता ओ जनतामे धन ओ पदलेल उपरौंझ बढ़य लागल। बात बातमे संघर्ष होमय लागल-कहुखन भाषालेल, उर्दू हो राष्ट्रभाषा वा बंगला वा दुनू, पूर्व पाकिस्तान ओ पश्चिम पाकिस्तानक नौकरी चाकरीमे हिस्सा लेल, विदेश विभागक मन्त्री जफरुल्ला खां अहमदीय थिका मुहम्मदीय नहिं ताहि लेल आदि।

धनओ पदक लोभ तथा ताहिलेल सब दुष्कर्म करयक हेतु तत्पर रहयमे भातक कांग्रेसी नेतालोकनि सँ पाकिस्तानवासी बढ़ल नहिं छथि। परंच भारतीय नेताकेँ एक समतलभूमिखण्ड छनि, शासनमे सुविधा छनि, से तँ पाकिस्तानकेँ नहि। पूर्व ओ पश्चिम पाकिस्तान मे आठ सय कोसक अन्तर अछि। एक दिससँ दोसर दिस जायब आयब बिकट समस्या छनि। कतहु कोनो भीषण उपद्रव भेला पर सम्हारब बहुत कठिन हयतनि। अन्न वस्त्रक कष्ट जनताकेँ होमय लगलै अछि। धर्मक नामपर कते काल भूखल लोक समटल रहत? पुरान शासक लोकनिक-कतहु-कतहु एखनहु-पद्धति छल भूखल प्रजाक उपद्रवसँ बचयक लेल ओकरा पड़ोसक राजपर हुलकाय देल, लुटिपाटि पेट भरय। पाकिस्तानक धनीवर्ग क्रुद्ध प्रजाक बलाय ताहि तरहें टारयक प्रयासकयल तँ भारतसँ संघर्ष हयत जाहिमे हुनक अस्तित्व सन्दिग्ध भऽ जायत। यदि देशहिमे शान्ति व्यवस्था करथितँ समाजवादक आंशिको अवलम्बन करय पड़तनिहें। अपन स्थितिमे परिवर्तन अनने बिना चैन नहिं छनि।

(27 अप्रिल1953)

❑❑

एसिया ओ अमेरिका

कोरिया विरामसंधि वार्त्तामे एसियाक कोनो देशकें युद्धबंदीक संरक्षण बनयबालेल कम्युनिस्टलोकनि प्रस्ताव कयलत राष्ट्रसंघक प्रतिनिधि जनरल हैरिसन कहल एहि हेतु एसियाक कोनो देश उपयुक्त नहिं अछि कारण रूस-चीनक पड़ोसी भेलासें एसियाक सभ देश कें कम्युनिस्टक प्रभावमे जयबाक सम्भावना। अमेरिकाक प्रस्ताव अछि स्विट्जरलैण्ड वा स्वेडनकें संरक्षक बनाओल जाय। कम्युनिस्ट लोकनि कहै छथि यूरोपमे चारि देश-स्विटजरलण्ड, स्वेडन, पोल ओ चेकोस्लोवाकिया-कँ हम तटस्थ मानैछी परंच युद्धस्थल सँ बहुतदूर रहबाक कारण ई चारू देश एहि कार्यक हेतु अनुपयुक्त अछि। एसियामे भारत, पाकिस्तान, ब्रह्मदेश ओ इण्डोनेसिया तटस्थ राष्ट्र अछि तथा पड़ोसी हयबाक कारण कोरियाक युद्धबंदीक संरक्षण हेतु उपयुक्त।

अमेरिका एसियाकें कोन दृष्टियें देखै अछि से एहि वार्त्तामे ओकर प्रतिनिधि स्वयं गछल। अमेरिकाकें एसिया पर पूरा अविश्वास अछि।

एसियाक सम्बन्धमे अमेरिकाक नीति की अछि तकर परिचय बारम्बार भेल अछि। अरब, इराक, ओ इरानमे राजनीतिक प्रवंचना; जापानमे अपन आर्थिक एकाधिकारक स्थापना; चीन, कोरिया, हिन्दचीन ओ ब्रह्मदेशमे गृहयुद्ध; भात, पाकिस्तान, नेपाल ओ सिंहलद्वीप आदिमे डौलर-जालक प्रसार - यैह रहल अछि द्वितीय महायुद्धक बादसँ अमेरिकाक एसिया सम्बन्धी राजनीति। हालहि पाकिस्तानमे जे राजनीतिक विस्फोट भेल अछि ताहिमे अन्दाज अछि अमेरिकाहिक हाथ अछि। अपन अनुयायी री, च्याङ, बाओदाइ आदिकँ शासनारुढ़ रखबाक हेतु अमेरिका अर्ब-खर्ब डौलर खर्च कयलक परंच विफल भेल। एसियाक जनता अमेरिकन कठपुतरी सबकँ राजाक रुपमे स्वीकार नहिं कयल। तखन अमेरिका एसियाक एक देशकँ दोसर देशसँ लड़यबाक हेतु कटिबद्ध भेल। हालहि प्रेसिडेंट आइसनहावर च्याङ्काइशेककें चीनक मुख्य भूमिपर आक्रमण करबाक आदेश दय एसियाव्यापी गृहयुद्धक आयोजन कयल। एसियाक लोक एहिनीतिक से विरोध कयलक कि अमेरिकाकें ई योजना तत्काल स्थगित करय पड़ल। अमेरिकाक राजालोकनि निराश भऽ गेला – बुझि गेला ओलोकनि डौलरक कतबो मजबूत जाल पसारता एसिया बेर पर अमेरिकाक संग नहिं देत। तें एसिया पर एतेक अविश्वास।

परंच एखनहु अमेरिका एसियासँ अपन दोकान समटै हेतु तैयार नहिं अछि। कारण दोकान समेटने ओहि देशमे संकट उपस्थित भऽ जायत। अमेरिकाक वस्तु बिकायब कम भऽ जायत। ओतय मंदी आबि जायत। तैं एसियामे अपन अस्तित्व कायम रखबाक हेतु ओकरा अपन नीति सुधारय पड़ल। संरक्षकक रूपमे पाकिस्तान कैं मानि लेल। किन्तु एसियाक सम्बन्धमे ओकर प्रतिनिधि अपन जे धारणा स्पष्ट रूपें कहल अछि ताहिसँ समस्त एसियाकें चेतना लेब आवश्यक। एसियाक सभ देशक हेतु ई विचारणीय अछि कि ओ सब अमेरिकाक संग कोन सम्बन्ध राखय – अमेरिकाक नेतृत्व मानैत पड़ोसी चीनक विरुद्ध युद्धक तैयारीमे अमेरिकाक संग दिअय अथवा एसियाक एकताक निश्चयकय अमेरिकाकें एसियासँ निकालबाक हेतु दृढ़प्रतिज्ञ हो। एसियाक अनेक देशक राजालोकनि अमेरिकाक जालमे फँसले छथि। ओलोकनि कखनहु अमेरिकाक संग नहिं दै छथि त अपन विवेकें नहिं, जनताक डरें। तें एसियासँ अमेरिकाक बहिष्कार हेतु, अमेरिकाक प्रचण्ड शोषण तथा तृतीय महायुद्धक विभीषिका सँ बचबाक हेतु समस्त एतियाक अविलम्ब संगठित हयब अनिवार्य।

ब्रिटेनक रानी

काँग्रेस सरकार भारतकें ब्रिटिश कॉमनवेल्थ मे जे रखने अछि तकर बराबरि विरोध भऽ रहल अछि। काँग्रेसी लोकनि यद्यपि दिन-दिन अंगरेजक मुकुटकैं भारतक शिर पर दृढ़े केने जाइछथि। कहै छथि ब्रिटिश छत्रछायामे रहला सँ एइदेशकें अनेक लाभ अछि। एक अर्थमे से ठीक। देशक शासक निर्वाचित नहिंयों रहलापर अपनाकैं देशक प्रतिनिधि मानैत अछि, भारतक कांग्रेसी शासक जनताद्वारा निर्वाचित छथि-निर्वाचन पद्धति लाख दुष्ट रहओ। तें ई लाभ देशहिक लाभ भेल-देशक लेल से भेल कि नहिं से निर्णय कठिन। अंगरेजक छत्रछायामे काँग्रेस शासक वर्गक प्रत्यक्ष लाभ अछि-गद्दी लैत ई लोकनि राजकीय सुख ओ विलासक भोग करय लगला जे अंगरेजक विरोधें असम्भव होइत। 1917 मे रूसमे शासन परिवर्तन भेल त अंगरेज लोकनि लेनिन, त्रोत्स्की आदि राजनेतालोकनिक विरोध कयल। फलतः कइ वर्षतक ओ लोकनि बेचैन रहल। देशकें अंगरेज-अमेरिकन शत्रुसँ बचाओल परन्तु राजपदक सुख ओ विलास किछु नहिं बूझल। एखन चीनक माओ अमेरिकाक विरोधें ताही स्थितिमे छथि। देशकैं शत्रुसँ बचौने छथि। दुःखसँ उबारि सुखमे खूब द्रुतगतियें लऽ जारहल छथि, परन्तु स्वयं निशिदिन दुश्चिन्तामे पड़ल साधारणहु लोकसँ कम सुखमे छथि।

भारतक जवाहरलालजीक नसीव दोसर अछि। यश-अयश जे हो, इतिहास नीक कहओ वाअधलाह राजपदक सुख एहन दोसर राष्ट्र नेताकें नहिं भेटल। ताहि सुखक आयोजनमे सबसँ पैध सहायक अंगरेज जातिक शिरोभूषण रानी एलिजाबेथक अभिषेकयज्ञमे नेहरू जी, अच्छत लय नहिं पहुँचथि त बड़ कृतघ्नता ओ बुद्धिबिहीनता होइत। सुनै छी पण्डितजी बड़ बुधियार छथि। ताहिमे कोनो संदेहनहिं। से नहिं रहितथि व हुनक सुखक सिहन्तावाला कते छथि तकतहि रहला, तकैत-तकैत मरि गेला, नेहरू कूदि फांदि सब सुविधा पाबिलेल, सर-कुटुम्बकें तारि देल, संगहि त्यागी बैरागीक सुयश सेहो नहिं छूटल। देश बुझै अछि अकाल अछि राजनीतिसँ किछु अन्नवस्त्र आनय गेल छथि, रानी बुझै छथि हमर मुकुटक भारतीय हीरा कोहीनूरकें अक्षुण्ण बनबय आयल छथि। भारतमे लाखलाख लोकक साष्टाङ प्रणाम, ब्रिटेनमे सम्मान भोजक अमार। भूखल भूखें मरओ, ईर्ष्यालु ईर्ष्यामे जरओ, महानायक महात्मा जवाहरलालक जयकार केओ नहिं रोकि सकत!

(11 मई 1953)

□□

मिस्त्र

सेनापति मुहम्मद नजीब मिस्त्रदेशकें प्रजातंत्र घोषित कयदेल। ई घोषणा मिस्त्रहिक नहिं समस्त संसारक हेतु महत्वक अछि। मिस्त्रक शत सहस्त्रवर्षमे राजतंत्र द्वारा पीड़ित जनताकें एहिसँ एक महान् त्राण भेटल अछि। आन अनेक देशक सीदित जनसमूहकें निर्दय अनाचारी अत्याचारी राजवर्ग सँ संघर्षलेल प्रेरणा भेटल अछि।

भारतक प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू लण्डन जाइत काल काहिरा एयरपोर्ट मे सेनापति नजीबसँ भेंट केने छला। फिरती फेर हुनकासँ मिस्त्रमे भेंट करता। नेहरुजी कने देखथु त छोटसन मिस्त्रदेशक प्रधानमन्त्री नजीब अंगरेजी फौज सँ घेरल रहितहुँ कोन तरहें एकहिसंग इंगलैंड अमेरिका आदि बाहरी प्रबल शत्रु तथा अन्दरक राजतंत्रक मुकाबला कयल अछि। जखन कोनो जनकल्याणक वा देशक आत्मसम्मानक काजक प्रसंग आओत कि नेहरू कहता एखन देशपर विपत्ति अछि-पाकिस्तान झपटयलेल तैयार अछि, कश्मीरमे झंझट अछि, कम्युनिस्टक उपद्रव अछि आदि-कने शान्ति होअय दिअऽत सब हयत। एहि तरहें बेचारे आठवर्ष खेपि गेला। देशहितक काजलेल कहिया ओ चैन हयता कहब कठिन। मिस्त्रक नजीब वा चीनक माओ यूरोप, अमेरिकाक विकट विरोधमे अपना देशक अभूतपूर्व कल्याण कयल छथि। नेहरू बुझै छथि जे हयत से इंगलैण्ड अमेरिकाक प्रतापें। हुनक ई पराधीनवृत्ति हुनक प्रतिष्ठा तथा भारतक गौरव ओ कल्याणकें संगहि नष्ट कय रहल अछि।

(29 जून 1953)

मिस्त्र

भारतक प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू मिस्त्रक राष्ट्रपति ओ प्रधानमन्त्री सेनापति मुहम्मद नजीबक प्रति आस्था देखाओल अछि से बड़ साहस ओ बुद्धिमानक काज कयल अछि। नेहरूसँ साधारण रुपें आशा नहिं रहै अछि जे ओ अंगरेजक विरुद्ध कोनो न्यायक पक्षकें ग्रहण करता – मलयमे ओ पूर्व अफ्रिकामे अंगरेजक दिसँ कोनो अत्याचार बाकी नहि रहल परन्तु नेहरू अंगरेजहिक संग दै छथि। मिस्त्रक ओ इरानक संग अंगरेजक जे झगड़ा अछि ताहिमे नेहरू अंगरेजक

अन्यायक विरुद्ध मिस्त्र ओ इरानक समर्थन कयने छथि। एहिसँ नेहरूक तथा भारतक दुनूक प्रतिष्ठा ओ गौरव बढ़ल अछि।

(6 जुलाइ 1953)

कोरिया

दक्षिण कोरियाक अध्यक्ष सीङ्मन री चीनक च्याङ्काइ शेकक सदृश अमेरिकाक आश्रित थिका। बेचारे आशामे छला अमेरिकाक मददिसँ समस्त कोरियापर राज करब। ताहिमे कोरियाक जनता चीनक सहायतासँ हिनका निराश कयदेल। आब देखै छथि हुनक सहायक अमेरिका सेहो कम्युनिस्टक संग सन्धिलेल व्याकुल अछि ओकर समक्ष झुकय लेल प्रस्तुत अछि। तखन त री महोदय कतहु नहिं रहला। अठहतरि वर्षक वृद्ध वयसमे जानक बाजी लगादेल। राजपदलेल जनताक विरुद्ध विदेशीक संग धयल। ताहिमे असफल भऽ राजपदक आशा गेल। देशमे प्रतिष्ठा त पहिनहि नष्ट छल। आब सब दिससँ हताश भऽ अमेरिकाक ओ कम्युनिस्टक विरुद्ध संगहि झण्डा तानि देल। एहि तरहें बेचारे री प्रायः देशद्रोहक किछु प्रायश्चित करय चाहै छथि।

भारतक जवाहरलाल नेहरू सेहो चीनक च्याङ् ओ कोरियाक री सदृश अमेरिका ओ इंग्लैण्डक बलें देशपर राजकायम राखय चाहै छथि। च्याङ्कें चीनक जनता ताइवान् द्वीप पर खिहारिं देल, कोरियाक सीङ्मन री पराजित भऽ प्राण हेतु व्याकुल छथि। भूत तथा वर्तमानक अनेक समाजद्रोही आत्याचारी शासक एहि तरहें नाश भेल अछि। परन्तु नेहरू ओ हुनक कांग्रेस प्रायः एहि सबसँ भिन्न सदा गर्वोन्नत रहयक आशा रखै छथि।

(29 जून 1953)

सन्धिलेल जे प्रयास अछि तकर झंझट बढ़ले जाइ अछि। सीङ्मन री कहै छथि भारतक सेना जँ कोरिया प्रवेश करत त हमरालोकनि ओकर मुकाबला करब। एहन स्थिति मे भारतक प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू जे बाजल छथि से खूबनीक। हुनक कहब अछि कोरियामे हमरालोकनि युद्धक हेतु नहिं शान्तिक हेतु जायब। यदि कोनो पक्ष सन्धिलेल तैयार नहिं हो त प्रथम ओहि पक्षकें ताहि हेतु तैयार करी, पश्चात् स्थायी शान्तिक प्रबन्धलेल ओतय पहुँची। राष्ट्रसंघक

सभालेल जे नेहरूक आग्रह अछि सेहो बहुत उचित, कारण कोरियाक झंझट राष्ट्र संघहिक बेसाहल थीक, वैह एकरा सम्हारऽ। ताहिमे भारतसँ जहाँ तक हो ओकरा सहायता दिअओ।

(6 जुलाइ 1953)

कोरिया

तीन वर्षक बाद आखिर युद्ध बन्द भेल। अमेरिका कहुना बुझलक जे एसियावासीक संग मेल करब आवश्यक, ई लोकनि केवल दासत्वहिक नहिं मैत्रीहुक पात्र थिका।

अमेरिकामे बड़ बुद्धिमान छथि सब विषयक, इतिहासहुक। ओ बुझथु भूतकालमे कोना उन्नतिक चरमपद पर पहुँचि व्यक्ति ओ राष्ट्रक पतन भेल अछि। अमेरिकासन उन्नत देश पहिने भेल अछि, एक नहिं अनेक, एक युगमे नहि अनेक युगमे-भारत, चीन, इरान, इराक, मिस्त्र, ग्रीस, रोम, फ्रांस आदि। ओ सब कतय अछि एखन? अमेरिका आब कतय अछि? कतय जायत? जाहि पदपर ओ पहुँचल अछि ताहिसँ आगाँ रास्ता ओकरा लेल नहिं छै। आब अवनतिहिक मार्ग टा ओकरा हेतु खुजल अछि। ताहिमे जयबाक अपेक्षा त वर्तमान पदपर स्थायी रहय सैह बढ़िया। ताहि हेतु अहंकार छोड़ि मैत्री अपनाबओ। ताहीखन ओकर अपन तथा संसारक कल्याण हयत।

एम्हर कम्युनिस्ट पक्षहु व्यवहारमे चातुर्य कें किछु कम कय सरलता आनथु कारण चातुर्य पबै अछि प्रशंसा, सरलता पबै अछि सहयोग। समाजबाद कैं चाही लोकक सहयोग, प्रशंसा नहिं।

(3 अगस्त 1953)

रूस

1924 मे लेनिनक मृत्युक बाद रुसमे त्रात्स्की ओ स्टालिनमे जे संघर्ष चलल तकर आवृत्ति शुरु भेल अछि बेरियाओ मालेंकोव्मे। 1917क क्रांति ओ तत्पश्चात् रूसक उन्नतिकर्म मे त्रोत्स्कीक जे अतुल योग छल से सब स्तालिन ओ हुनक पक्षक ईर्ष्या-द्वेषमे विलीन भऽ गेल। त्रोत्स्की रहि गेला रूसक शत्रु, रूससँ निर्वासित, रणे-बने बौआइत। 15 वर्षक अपार यातनाक बाद 1940 मे दूर मेक्सिकोमे नृशंस हत्याकारीक हाथें मृत्युक आलिंगन लेल।

मालेंकोव छथि पदस्थ, स्तालिनक उत्तराधिकारी बेरिया भेल छथि हुनक कोपभाजन। मालेंकोवमे स्तालिनक संगठन बुद्धि ओ राष्ट्रीय उन्नतिक कामना हो वा न हो, विरोधीक प्रति हुनक निर्मम भाव त जरुर बुझना जाइ अछि। एहि वृत्तिमे सुनैछी बेरिया हुनको गुरु छथि। एतावता मालेंकोव-बेरियाक कथा त्रोत्सकी-स्तालिनक कथासँ भिन्न अछि। त्रोत्स्की छला अलौकिक प्रतिभाक पुंज, विद्या, वाग्मिता, शौर्य ओ औदार्यक आगार। स्तालिन छलाह ईर्ष्यालु, कठोर ओ पदलोलुप। त्रोत्स्की-स्तालिनक संघर्ष छल औदार्य ओ स्वार्थक, मालेंकोव-बेरियाक संघर्ष अछि दू स्वार्थवृत्तिक।

त्रोत्स्की-स्तालिनक संघर्ष रूसहिक नहिं, समस्त संसारक अकिंचन जनसमूहक उन्नतिमे बाधा भेल। मालेंकोव् बेरियाक कलहसें फेर वैह बाधा शुरू भेल अछि। रूसी नेता-लोकनिक दुर्वृत्ति सँ रूसहिक रक्षा वा प्रतिष्ठा नहिं समस्त संसारक कल्याण संकटक पथ धयलक अछि।

जर्मनी

बर्लिनमे हालमे जे उपद्रव भेल छल ताहिमे अमेरिकाक पूरा हाथ छल से आब स्पष्ट भऽ गेल। अमेरिका रूसकें अप्रतिष्ठ ओ संकट ग्रस्त करबालेल सन्नद्ध अछि। परन्तु जर्मन जनताकेँ रूसक विरुद्ध उसकाय कय की अमेरिका यूरप मे अपन स्थिति कायम राखि सकै छथि? सब जनै अछि अमेरिका द्वारा शासित पश्चिम जर्मनीमे जनताक कष्टक कोनो पार नहिं अछि। एते कष्टगत असन्तुष्ट प्रजाकें अमेरिका रूस द्वारा शासित पूर्व जर्मनी दिस कहाँ तक हुलकाय सकै अछि? एहि तरहक दुर्नीति ओ कोरिया आदिक युद्धक्षेत्रमे अमेरिका कयबेर देखार भऽचुकल; चीन, रूस आदि प्रजातन्त्रसँ हारल। आबहु चेतओ। धन, बल ओ बुद्धिक जे अहंकार रहलै अछि तकरा शान्त करओ। ताहीसँ ओकरा अपना तथा संसार कें शान्ति तथा कल्याण हयतै।

कम्बोज

फ्रांस कोनो तरहें नहि मानत। कारण ओ अपना बलें नहिं नचै अछि। ओ अपने एते शक्तिशाली नहि अछि कि एकोदिन कम्बोज पर कब्जा राखि सकत। ओकरा पीठ पर छै अमेरिका। अमेरिकहि बलें फ्रांस कम्बोज उत्तर अफ्रिका ओ

भारतक पाण्डीचेरी मे इंग्लैण्ड मलय, पूर्व अफ्रिका ओ स्वेजमे तथा पोर्तुगाल भारतक गोआ आदिमे अपना झण्डा नेने कुदै अछि। अमेरिकाकेँ चाही समस्त विश्वपर अपन आधिपत्य। ताहि हेतु सब ठाम फौजक हेतु ओकरा आवश्यक अछि अड्डा। अपना अधिकारक भूमि सबतरि छै नहिं और ने अपन फौज जहाँ तहाँ कटबय चाहै अछि। ओ चाहै अछि अपन खदुका इंग्लैण्ड, फ्रांस, पोर्तुगाल आदिक अधिकृत भूमि ओ ओकर फौजसँ समस्त संसारकें मुट्ठीमे राखी। परन्तु कोरियामे अपन अनुभ्रव मे अमेरिका एखन तक कियै नहिं सिखलक अछि कि हमर खदुका सब हमरासँ कम बुधियार नहिं अछि; ओ हमर अन्न खाय हमरा हेतु गरदनि नहिं कटाओत; खायक बेर खाय लेत, मुड़ी दैक बेर पैरपाछू कय लेत ओ तखन हमरा एकसर सम्हारैत-सम्हारैत दुर्गति भऽ जायत?

(20 जुलाइ 1953)

❑❑

पोट्टीश्रीरामुलु

(1901-52)

अठावन दिनक अनशनक बाद पोट्टी श्रीरामुलुक देहान्त 15 दिसम्बरकें मद्रास मे भेलनि। भाषा ओ संस्कृतिक आधार पर आन्ध्र प्रान्तक तुरत निर्माण हो यैह छल श्री रामुलुक अनशन व्रतक कारण।

श्रीरामुलु गांधीजीक सेवाग्राम आश्रममे चारिवर्ष रहल छला। गांधीजीक मृत्युक बाद अनशन केने छलाह। 1930 क नमक सत्याग्रह ओ 1941-42क व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 'भारत-छोड़ू' आन्दोलनमे भाग नेने छला। ओ दूबेर जेल भोगने छला।

श्री रामुलुक आत्मवलिदान यतीन्द्रनाथ ओ टेरेन्स मेक्खिनीक् कोटिक भेल। मृत्युक सामना बहुतो करै अछि किन्तु दीर्घकाल व्यापी मृत्युक्रियाक जे वरण करै छथि पीड़ित समाजक कल्याणपथ बनयबाक हेतु से थिका दिव्य लोक, देव तुल्य मनुष्य। एहेन नरदेवक महाप्रयाण सें कोटिशः क्षुधार्त, वस्त्रहीन नरनारी कोना नहिं उद्विग्न हो! श्री रामुलुक आत्माहुति कांग्रेस सरकारक दानवीय अत्याचारक प्रति मानवीय विद्रोहक ज्वलंत प्रतीक थीक, एकर प्रमाण थीक कि एहि देशक आत्मा एखनहुँ अलुप्त अछि, बेर पाबि जाग्रत हयत ओ सहस्त्र रूपमे सौम्य वा ताण्डव-प्रकट भय निर्बलहु में बलदय देश ओ समाजक शत्रुके पराभूत करत।

महात्मा श्रीरामुलुक जीवन ओ मरण आन्ध्रहिक नहिं, मिथिला, भोजपुर, झारखण्ड, अवध, व्रजभूमि, बघेलखण्ड, बुन्देलखण्ड, छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्णाट ओ केरलक जनताक लेल महान् प्रेरणा थीक। एक श्रीरामुलुक वलिसँ जँ आन्ध्रदेशमे एतेक टा हाहाकार ओ प्रलय सन स्थिति भेल तँ भारतक अन्य अनेक पराधीन प्रान्तहुमे एहन घटना भेलासँ कांग्रेस सरकार की हयत? ओकर अहंकार एवं उद्दंड व्यवहार कतय जायत? क्षण भरि शक्ति सम्पन्न भेला सँ जे उन्मत्त भय प्रलयक आह्वान करै छथि से बुझि राखथु जे ओ प्रलय पथ्यापथ्यक विचार नहिं करत सर्वभक्षी हयत, ओकरामे सब भस्म हयत।



स्तालिन

(1879-1953)

गरीबकें घनक सङ सङ बुद्धिहुक कमी रहै छै। धनी व्यक्ति अपन धन ओ प्रभुताक रक्षाक हेतु जतेक उपाय जनै ओ करै अछि से गरीब सँ हयब विरल। रूसक जनतामे गरीबी ओ तकलीफ भारतहि जकाँ प्राचीन ओ दृढ़ छल। धनी लोकनि चतुर ओ संगठित छला, गरीब सभ छल अनाड़ी ओ असंगठित। धनी उत्पीड़कक विरुद्ध तेँ ओकर कोनो दृढ़, व्यापक संघबद्ध प्रयास नहिं होइ छलै। कहुखन भयानक काण्ड धनी वा राजाक विरुद्ध भऽ जाइ छल, परन्तु ओकर तात्कालिक फलमे गरीब वर्गकें और बेसी अत्याचार भेटै छलै। 1825 मे रूसक राजाक हत्याक आयोजन भेल। 1881 मे राजाक हत्या भइये गेल। 1905 मे व्यापक क्रांति भेल। सभक लक्ष्य असिद्ध रहल, परन्तु ओकर मार्ग बराबरि प्रशस्त होइत गेल। उन्नइसम शती इस्वीक रूसी साहित्यक विश्वमे जे एते उच्च स्थान अछि तकर आधार, विषय छलै रूसी जनताक दुःख, ओकर विवशता, मुक्तिक हेतु जखन-तखन ओकर विफल प्रयास। लोकक एहन दुःख तँ जहाँ तहाँ-अपनहिं धर्म देशमे भेटत परंच रूसक साहित्यकार लोकनि जे ओकर वर्णन देने छथि से अनतऽकतय?

1917 मे क्रांति भेल तँ रूसक धनी वर्ग तथा विदेशक जनविरुद्ध राजालोकनिकें आशा भेल रूसी क्रांतिक नेतालोकनि पदक हेतु, द्रव्यक हेतु आपसहिमे लड़ि कटि मरि जेता, तखन फेर अत्याचारी जारक प्रतिष्ठा हयत। आपसी भगड़ा भेलो, बेस विकट। परंच क्रांतिकारी लोकनि चेतल। संगठित भऽ शोषक पर आक्रमण कयल। विजय भेल। रूसमे गणराज्य चलय लागल। विदेशक शोषक वर्ग तखन लाजसंकोच छोड़ि सोझे धावा कयल। सेहो विफल गेल। लेनिन, त्रोत्स्की आदिक नेतृत्वमे रूसक क्रांति अजेय रहल।

1924 मे लेनिनक मृत्युपर त्रोत्स्की ओ स्तालिनक झगड़ा सँ शत्रुक दुष्ट आशा फेर जागल। क्रांतिक विरुद्ध, जनकल्याणक विरुद्ध फेर षड्यन्त्र होमय लागल। स्तालिनक नेतृत्वमे रूस फेर सम्हरल।

1939 मे महायुद्ध शुरु भेल तँ यूरोप तथा अमेरिका पूंजीपतिवर्ग कें हिटलरक खिलाफ रूसक सहायताक अत्यन्त प्रयोजन भेलै। युद्धकालतक तें रूसक प्रति अपन द्वेषकें शान्त रखलक। युद्धक अंत होहितहिं रूसक संहार लेल

यत्नशील भय गेल। एहि दुष्टकर्मक हेतु अपना मे असामर्थ्य पाबि फेर रूसहिक गृहयुद्धक कामना ओ आशा करय लागल। स्तालिन आब वृद्ध भेला तँ हुनक देहान्त हयत ओ हुनक अनुयायी लोकनि हुनक स्थान लेल मुगल सम्राट शाहजहाँक पुत्रसभजकाँ आमरण यत्न करता ताहीमे मग्न रहय लागल।

धनीकक एहि दुष्ट कामना ओ आशामे कई वर्ष बीति गेल। आखिर हुनक देहान्त भेल तँ दुष्ट वृन्दक आधा तृप्ति भेल, परंच स्तालिनक पदलेल रूसमे एखन तक जे गृहयुद्ध नहिं शुरु भेल अछि ताहि सँ ओ वड़ विकल छथि। कहै छथि मालेंकोव जे प्रधानमन्त्री भेला अछि ताहिसँ गृहयुद्ध बिना भेने नहि रहत!

1917-18 ओ 1924-27 मे रूसक जनताओ नेता शत्रु पक्षकें अपन विवेकशक्ति द्वारा निरस्त कयलक। फेर सैह करओ ओ रूसक सुख ओ बुद्धि कें अक्षुण्ण राखओ।

(16 मार्च 1953)

खुशाल शाह

प्रोफेसर के०टी० शाहक देहान्त देशक दुर्भाग्य थीक। भारतक अखबारसभ एहि दुखद समाचारकें बड़ साधारण रुपें छपलक। कारण स्पष्ट अछि। प्रोफेसर शाह बड़ साधारण व्यक्ति छलाह तें नहिं। ओ छला गरीबक बन्धु। अखबार सभ अछि धनिकक हाथ मे। गरीबक संग देइतहि नीक सँ नीक प्रतिभाकें कोन दुष्टभावें ओ विकटरूपें धनीवर्ग झांपयक प्रबन्ध करै अछि तकर ज्वलन्त उदाहरण भेटल शाहक देहान्तक सम्बाद वितरणमे।

दिल्लीक पार्लियामेंटक निर्माण जाहि संविधान सभा द्वारा भेल प्रोफेसर शाह तकर एक प्रमुख सदस्य छला। परंच धनीवर्गक अद्भुत प्रभाव कि पार्लियामेंट मे शाहक हेतु शोक प्रस्तावो टा नहिं। सभाक सदसार नेहरू हुनक जिक्र तक नहिं कयल। कतय गेल हिनक गुणग्राहित्व ओ औदार्य?

शाह छला कांग्रेस सरकारक विरोधी। 52 क बड़का चुनावमे हुनका तें जेना-तेना हराओल गेल। जीतिकय पार्लियामेंट मे बैसितथितँ राजाधिराज नेहरूकें कते उकरु होइत! सरकारक अन्याय ओ दलक सहाय्यक प्रसंग कतेक प्रश्न कय धनीवर्गक शान्ति भंगकरितथि! शाह हरला, राजवर्ग ओहि सभ संकट सँ बचल। हुनक मृत्यु भेल, ओहि वर्गक एक महाकंटक टरल!

परंच शाह साधारण कोटिक नहिं छलाह कि मृत्युमे हुनक अन्त हो। गत तीस वर्षक अवधिमे भारतक आर्थिक दुर्वस्थाविषयक दर्जनसँ ऊपर ग्रन्थ लिखलनि,

नेशनल प्लानिंग कमिटीक महामन्त्री रूपें 1937-49 मे तीससँ ऊपर ग्रन्थ तैयार कयलनि। ई विशाल ग्रन्थ समुदाय हुनक पाण्डित्य, विवेक, करुणाक अकाट्य प्रमाण थीक। हुनक कृतिकें के धनकुबेर मेटा सकत?

(23 मार्च 1953)

बुद्ध

हजारवर्ष बाद आइ फेर भारतमे बुद्धक नाम गुंजित अछि। हुनक जीवन ओ धर्मक प्रति देशमे फेर आकर्षण ओ निष्ठा बढ़ि रहल अछि। ब्राह्मणधर्मी ओ बौद्ध सबकें हुनक स्मरणमे उत्साह देखै छी।

अढ़ाइ हजारवर्ष पूर्व बुद्ध राजपद ओ जन्मपदक विरुद्ध क्रांति कयने छला। भारतक से युग आजुक सदृशे विकट छल। शक्ति ओ विलासक हेतु सम्पन्न वर्गक संघर्षमे जनसमूह अन्न-वस्त्रलेल हाहा करै छल। राजकुमार गौतमक हृदय कोमल ओ चित्त दृढ़ छल। दरिद्रयक प्रति चिन्ता ओ विलासक्रीड़ाक प्रति विकर्षण लागल। तखन अनेक वर्ष तक शाक्य राजधानी कपिलवस्तुमे हुनक मन ओ शरीरक जे संघर्ष चलल, विराग ओ त्याग भेल तकर कल्पना साधारण मने हयब कठिन। नदी, वन, पर्वतसँ भरल दुर्गम पथमे शाक्यसिंह सिद्धार्थ दीन ओ सम्वलहीन, एकाकी उद्विग्नचित्त, अवांछितक त्यागसँ तुष्टपरन्तु वांछितक प्राप्ति हेतु विकल।

से बांछित भेटल छ वर्षक कठोर तपस्याक बाद-दुक्खं, दुक्खसमुदयं, दुक्खनिरोधं, दुक्ख निरोधमग्गं। पृथ्वीक सागर समूहक समस्त जलराशिहुसँ अधिक अछि दुःखित अश्रुजल। दुःखक एहि भयावह कल्पनाकें बुद्धहिक विशाल ओ दृढ़ चित्त धारण ओ बहन कय सकै छल।

देशमे फेर दुःखं दुःखंकेर सर्वत्र शोर अछि। एहिदुःखक समुद्रसँ उद्धार करयवाला केओ नजरि नहिं अबै अछि। बुद्धक स्मरण समाजकें विपत्तिमे सान्त्वना ओ कल्याण पथमे चलबाक प्रेरणा देत।

(8 जून 1953)

विजयलक्ष्मी

विजयलक्ष्मी पण्डित अमेरिकामे कहलनि अछि हम आबसँ देशहिमे रहि सेवा करब, विदेश नहिं आयब। विदेशमे रहय योग्य ओ नहिं छथि। हुनक रहन-सहन जे छनि ताहिसँ साधारण व्यक्तिहुक रूपमे हुनक वा हुनक देश भारतक प्रतिष्ठामे वाधा होइ छल, राजदूत सन महापद पर जाय और अनर्थ करै छली।

पूर्वहि यदि ओ वा हुनक जेठ भाय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु एहि विषयमे सतर्क रहितथि त विजयलक्ष्मी, नेहरू परिवार एवं भारत देश बहुत अप्रतिष्ठासँ बचैत।

परंच विजयलक्ष्मी सन लोक लोभमे असफल भेनहि विरक्त होइ अछि। 1945क सन फ्रांसिसको सम्मिलनमे विजय लक्ष्मी भारतक हेतु नीक काज कयने छली। तखन छली हो पीड़ित—भाय जवाहरलाल जेलहिमे छलथिन, अंगरेज सरकारक कोप छले, ओतय गेल छली भारतक कोनो राजपदस्थ भय नहिं, अंगरेज राजक विरुद्ध संसारक समक्ष अपन देशक फरियाद राखय। ताहि स्थिति मे तखन भोग-विलासक चमक-दमकक अवकाशे नहिं छल। किछुये दिनक बाद कांग्रेसी लोकनि जेल मुक्त भेल। अंगरेजक स्थानमे राजा भेल। बस विजयलक्ष्मी राजदूत भय रूस ओ अमेरिका गेली'। हुनक विलास प्रियता ओ उच्छृंखल वृत्तिसँ सबठाम लोक क्षुब्ध छल। रूस वा अमेरिका जतय गेली अपन तथा भारतक अप्रतिष्ठा कयल। हुनक आचरणसँ विरोध हुअय लागल—विदेसस्थ भारतीय ओ अभारतीय, राजकीय तथा अराजकीय क्षेत्रमे-आखिर हारि प्रधानमन्त्री जी हुनका देश वापस आनल। परंच विजयलक्ष्मीक मनत बढ़ल। देशमे ओ स्वच्छंदता कतय? भायसाहेब नेहरू धू ताकल-पठबय लगला हुनका अमेरिका, इंगलैंड, फ्रांस आदि देशमे राष्ट्र संघक भारतीय प्रतिनिधि रुपें, प्रधान प्रतिनिधि।

विजयलक्ष्मीक पदलिप्सा जेठभायसँ कनियो कम नहिं। राष्ट्रसंघमे परुकाँ साल अध्यक्ष पद लेल ठाढ़ भेली। हिनका वोट भेटल 4 ओ कनाडाक लेस्टर पियर्सन कें 51। पिअर्सन अध्यक्ष भेला। फेर हालहि राष्ट्रसंघक प्रधानमन्त्रीक जगह खाली भेल। विजयलक्ष्मी फेर ओहि पद लेल ढाढ़ भेली। 60 मे एक देश मात्र हिनका वोट देल, सब स्वेडनक अर्थशास्त्री हामर्सजोल्टक पक्ष कयल।

जखन-जखन विजयलक्ष्मी राष्ट्रसंघमे कोनो पदलेल ढाढ़ भेली कि भारतक धनीवर्गक समस्त अखबार हुनक गुणगाथासँ देशकें तोपि दै छल। प्रेसट्रस्टक प्रतिनिधिक तारपर तार अबै छल ओ बम्बइसँ गौहाटी तकक अखबारमे छपै छल कि बस एहिबेर सौंसे संसार नेहरूक बहिन विजयलक्ष्मीक पक्षमे उनटि आओत!

दू बेरक फल त हालहि देखल। एहि तरहक प्रचारक की आधार छल? प्रेसट्रस्टक प्रतिनिधिकें राष्ट्रसंघक स्थिति बुझयक लूरिये नहिं छनि कि जानिकय देशमे नेहरु परिवार, नेहरू ओ कांग्रेसक सरकारकें प्रतिष्ठित राखय लेल असत् प्रयास करै छथि?

(20 अप्रिल1953)



प्रजापति मिश्र

(1898-1953)

मिश्रजीक मृत्यु दुःखद घटनाथीक। हुनक जीवन भर्तृहरिक सदृश बड़ शिक्षाप्रद रहल–स्वार्थ ओ परमार्थक संघर्षसँ भरल; करबनहु पद, प्रतिष्ठा ओ सम्पत्तिक लोभ, कखनहु त्याग, तपस्या ओ सेवावृत्तिक वरण। एहन व्यक्तिसँ राग ओ द्वेष हयब स्वाभाविक। दुनूक हेतु हुनक चरित्रमे स्थान छल। बहुतकें हुनकालेल, श्रद्धा ओ कटुताक शाश्वत, विकट झंझामे पड़ल बेचारे बारबार विह्वल होइ छला। अन्त मे मायाक समस्त बन्धनकें निर्मम भऽ शान्त मुखें तोड़ि परलोकक पथ लेल। हुनक विशाल मृत शरीरक संग कते स्नेह, कते ईर्ष्याक आधार भस्मीभूत भेल हयत! वा नहिं? स्नेहक पराजयमे ईर्ष्याक विजय उन्माद तक त नहिं पहुँचत? असम्भव की? समाजक कल्याण पथ क्षीण ओ दुर्घट देखै छी।

(11 मइ 1953)

कवि रवीन्द्रनाथ

रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1861-1941) जन्मदिवस भारतमे बड़ उत्साहसँ मनाओल गेल अछि। राष्ट्रीय जीवनक ई नीक लक्षण थीक। अपन गौरवक वस्तुकें चिन्हब-अपन उन्नतिक प्रथम कारण थीक।

रवीन्द्रनाथक पूर्व भारतमे कविकर्म कई शताब्दीसँ निन्दितप्राय छल। संगीत, नाट्य, ओ नृत्यत निन्दित छले। कारण भारतक अधोगतिमे ओ समस्त कला आनन्दक नहिं, विलासक वस्तु बनि गेल। धन ओ प्रभुत्व श्रम तथा सेवाक फल नहिं रहल। ओकर साधन बनल अपहरण एवं नृशंसता जीवन पथ ममताहीन ओ कठोर भऽ गेल। कविकर्म भावनाहीन भऽ छन्दोवृत्ति मात्र रहि गेल। कविक अन्त भेल, ओकर कंकाल नेने चारण ओ भाट दरबार दरबार घूमय लागल; निर्मम, नृशंस, धनवान, विलासमग्न प्रभुताशालीक स्तुति करय लागल। कवीर, सूर, वा तुलसी सन देशमे कते कवि भेल जे एहि संकटक स्थितिमे नरकाव्य बनयबासँ अपनाकें बचौने हो?

भारतक चरम दुरवस्थामे रवीन्द्रनाथ कलाक मूल्य बुझल। ओकरा विलास ओ उन्मादक नहिं, आनन्द ओ उन्नतिक पथ मानि भारतीय जीवनमे पुनः प्रतिष्ठित

करबाक अदम्य साधना ठानल। काव्य, संगीत, नाट्य, चित्र, मूर्ति आदिक सृजनकें क्रीड़ा ओ हास्यक क्षेत्रसँ उठाय तपस्या ओ ज्ञानक लोकमे आनि बैसाओल।

महाकवि से दिव्य पथ आइ भारत वा मिथिलामे कते कवि धेने छथि? एक दिस प्रतिभाक प्राचूर्य देखि हर्ष होइ अथि। निकट भविष्यमे उन्नतिक प्रबल आशा होइ अछि। दोसर दिस ओकर दुरुपयोग देखि जीवनक गति मन्द भऽ जाइ अछि। राजनीतिक क्षेत्र मे ईर्ष्या ओ द्वेषसँ भयभीत भऽ जँ काव्य ओ साहित्यक क्षेत्रमे जाउत ओतय ओकर और विकराल रूप देखब। साहित्यक उन्नति द्वारा समाजमे ज्ञानक प्रसार हो तकर स्थानमे अधिकांश कवि परनिन्दा ओ आत्मप्रशंसाक हेतु दिनराति गोलैसीमे लागल रहै छथि। एहि आचरणसँ अपन तथा समाजक एकहि संग अनिष्ट कय रहल छथि।

(25 मइ 1953)

श्यामा प्रसाद मुखर्जी
(1901-1953)

पिता आशुतोष मुखर्जी (1869-1925) हिक समान श्यामा प्रसाद मुखर्जीहुक मृत्यु अकालमे भेल अछि। कश्मीरक राजधानी श्रीनगरमे जाहि स्थिति मे हुनक देहान्त भेल अछि से किछु रहस्ययुक्त बुझि पड़ै अछि। एहि विषयमे लोकक सन्देह मेटयबालेल आवश्यक छल कलकत्तामे हुनक शरीरक पोस्टमोर्टम परीक्षा करायब।

श्यामा प्रसाद धनी वर्गक छला। अपन वर्गक गुण ओ दोषसब हुनकामे प्रचुर मात्रा मे छल। बेचारेक जेहने शरीर पुष्ट छल तेहने कलेजा। पार्लियामेन्टमे वा बाहर प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरूक अहंकार ओ असंयमक प्रतिकार वैह टा करै छला। हुनकसन निर्भीक किन्तु नम्र प्रतिरोध आन कोनो व्यक्तिमे भेटब कठिन छल। नेहरूक सदृशे श्यामा प्रसादहुक जन्म बड़ पैघ घरमे भेल, दुनू पैध पद ओ सम्पत्ति पाओल। सिद्धान्तमे जवाहरलाल गरीबक पक्ष तथा श्यामाप्रसाद मध्यम ओ धनीवर्गक पक्षमे रहला। परन्तु स्वभाव रहल नेहरू साहबक उच्छृंखल राजा तथा श्यामाप्रसादक उदार एवं भयहीन योद्धाक समान। आशुतोष अंगरेजी राजक राष्ट्रीय पराभव मे देश कें विद्या, बुद्धि ओ आत्मबलक अस्त्र धराओल, श्यामाप्रसाद ताहिद्वारा कांग्रेसक नृशंस शासकसँ पराभूत देशक रक्षालेल संघर्ष कयल। से श्यामा प्रसाद असमयमे अचानक मरि समस्त देशकें शोकमग्न कय देल।

(29 जून1953)

रोजेन वर्ग

जुलियस ओ एथेल रोजेन वर्गक हत्यासँ अमेरिका की पौलक?

पूर्वकालमे आत्मरक्षाहेतु विरोधीक हत्याकरब राजवर्गमे आवश्यक मानल जाइ छल, कारण विरोधीकेँ पूर्णरूपें बशमे राखयक जेल आदिक सुदृढ़ प्रबन्ध करब कठिन छल। एखन वशीभूत शत्रुक प्राण लेब केवल आत्याचार थीक। न्यायक नामपर प्राण हरण करब शुद्ध पाखण्ड थीक। दण्ड हो एहन जे गलत साबित भेलापर वापस लेल जाय। मृत्युकें वापस लेब मनुष्यक शक्तिसँ बाहर अछि। तेँ प्राणदण्डक विरोध संसारमे मनस्वीलोकनि द्वारा युगसँ भऽ रहल अछि। कते देशमे ई दण्ड बन्दो भेल अछि। भारत मे जखन अंगरेजक राज छल ओ कतेक देशभक्तो लोकनिकें अंगरेज शासक प्राणदण्ड दै छल त कांग्रेस दिससँ एकर विरुद्ध कते विशाल आन्दोलन भेल छल, जहाँ तहां प्रतिज्ञा होइ छल स्वराज होइतहि ई अमानुषिक व्यवहार बन्द कयल जायत। स्वराज भेल प्रतिज्ञा केनिहारलोकनि राजा बनला, परन्तु प्राणदण्ड कायम अछि। अमेरिका पर जखन अंगरेजक जुल्म छल त ओहि देशक नेतालोकनि कते सद्भावनासँ भरल छला। सबल होइतहिं सब सुबुद्धि नष्ट भऽ गेल, बलक अहंकारमे विवेक पराजित भऽ गेल। ताहूसँ पूर्वक कथा लिअऽ। अमेरिकामे जेलोकनि एखन बसल छथि तनिक पूर्वज इंगलैण्डसँ राजाद्वारा पीड़ित भऽ भागल छला। विपत्तिमे बड़ धर्मभावना रखै छला। परन्तु अमेरिका पहुँचि ओहिठामक प्राचीन अधिवासीकें नृशंस भऽ मारि समस्त भूखण्डके अपना हेतु अकंटक बनाओल। मनुष्य बलमे नृशंस भइये जाइ अछि।

अमेरिका हो वा भारत वा अन्य देश, एहन बलक आयोजन नहिं करय कि मनुष्य विवेकहीन भऽ पशु बनि जाय।

रोजेनवर्ग दम्पतिक प्राणरक्षालेल समस्त संसार यत्नशील छल। मानव-जातिक एहि किंचित बचल खुचल कोमल भावनाक तिरस्कार कय अमेरिकाक राजवर्ग अपन पशुवृत्तिक परिचय देलक अछि। रोजेनवर्ग दम्पतिक प्राण गेल परन्तु अमेरिकाक राजवर्ग औदार्यविहीन अन्ध पथहीन जगतमे कते दिन रहत?

(29 जून1953)

सुरेन्द्रनाथ दासगुप्त
(1887-1952)

सुरेन्द्रनाथक मृत्युसँ भारतीय दर्शनक एक तेजस्वी नक्षत्र अस्त भय गेल। हिनक 'भारतीय दर्शनक इतिहास' (5 ग्रन्थ मे) अपूर्व पाण्डिन्य ओ साधनाक फल थीक। एहि महाग्रन्थक अनुवाद मूल अंगरेजीसँ मैथिली ओ अन्य भारतीय भाषामे हो तँ एहिदेशक लोककें अपन प्राचीन ज्ञान-भण्डारकें देखबाक एक अलौकिक साधन भेट जायत। भारतीय दर्शनपर एहि इतिहासक अतिरिक्त आरहु अनेक ग्रन्थ अंगरेजी तथा बंगलामे ओ संस्कृत साहित्यक महत्त्वपूर्ण विवेचन सुरेन्द्रनाथ उपस्थित कयने छथि।

पारिवारक झंझटें जीवनक अन्तिम समय हिनक बड़ अशान्त रहल। शरीर ओ मन दुनू अस्वस्थ भय गेलनि। एहन विद्याक संग एहि तरहक शारीरिक ओ मानसिक क्लेश हयब मनुष्यकें क्षुब्ध कय दै अछि।

(12 जनबरी 1953)

सुभाष चन्द्र

तेइस जनबरी कैँ समस्त देशमे नेताजीक 57म जन्मदिवस मनाओल गेल। दुखक विषय मिथिला भरिमे कतहु ई दिवस मनयबाक समाचार एखन धरि नहिं भेटल अछि। सुभाषचन्द्र मिथिलाक कतेक गाम, कतेक इलाका किसान, मजदूर वा विद्यार्थीक कष्टमे संग देबाकलेल गेल छथि, मिथिलाक कतेक समाजसेवी हुनकासँ अनुप्राणित भेल छथि तथापि हुनक स्मृति एहिठाम एहन क्षीण हो एकर आशंका नहिं छल। हुनक स्मरणसँ हमरा लोकनिक कल्याण हयत, उदारकार्य मे प्रेरणा भेटत तें अपना हेतु, अपन सन्ततिक हेतु सुभाष चन्द्र सन दिव्यात्माक जीवन दर्शन राखब आवश्यक।

हुनक अलौकिक जीवनक महत्त्वकें झाँपबाक बड़ प्रयास भेल अछि, भय रहल अछि। तें हुनक स्मरण करब, समाजकें करायब विशेष आवश्यक। 1945 मे जखन लोक सुनलक हवाई जहाजक दुर्घटनामे सुभाष चन्द्रक प्राणान्त भय गेल तें भारतभरिमे हाहाकार मचि गेल। ओ एवं हुनक आजादहिन्द फौज एहि देशक कतेक पैघ आशाक आधार छल! ताहि आधारक मेरुदंड जखन लुप्त बुझनागेल तें दुर्दिन मे पड़ल समाजक विकल हयब स्वभाविक।

नेताजी सुभाषचन्द्र वसु ओ हुनक आजादहिन्द फौजक नाम लय तखन जवाहरलाल ओ अनेक कांग्रेसी नेतालोकनि देशमे अपन प्रतिष्ठा बढ़ाओल। परंच हुनक नामक डोर धय जखन प्रभुतापर पहुँचला तँ हुनकहि यशक प्रति असहिष्णु भय उठला। हुनकहिं डरे, हुनके आजाद हिन्द फौजक दुआरे अंगरेज नेहरू आदि कांग्रेसीकें गद्दीदय ई देश छोड़लक ताहि बातकें झांपयक अनेक प्रयत्न भेल। हुनक स्मृतिरक्षाक आयोजनक तँ कथे कोन!

सर्वथा उपकारे भेटलहुपर प्रतिभावान् स्वजनक प्रति लोक अनेकठाम ईर्ष्यालु ओ असहिष्णु भऽ जाइअछि। सुभाषचन्द्रक प्रति जवाहरलालक ईर्ष्या स्वाभाविक। परंच देश तँ जवाहरलाल नहिं थीक। हुनक ईर्ष्यामे संगदय सुभाषचन्द्र सन महान् उपकारी आत्माक अवहेला ओ कियै करत? अपन चरित्र कें एहि तरहें हीन ओ निन्द्य कियै बनाओत?

नलिनी रंजन सरकार
(1883-1953)

नलिन सरकारक देहान्त सभक हेतु दुखद भेल। बहुत साधारण स्थिति मे जन्म लय सिर्फ अपन उद्यमक बले ओ विद्या, धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त कयल। धनसंग्रह हुनक एकान्त लक्ष्य नहिं छल। प्रभुता सेहो हुनक सर्वोच्च काम्य नहिं। धनवान् रहितहु वेचारे आजीवन अविवाहित रहला। बड़ा लाटक कौंसिलक सदस्य छला तँ 1943मे गान्धीजी जेलमे उपवास शुरु कयल। मरनासन्न भेलापर नलिन बाबू आदि अंगरेज सरकारसँ आग्रह कयल गांधीजी कें छोड़ू। नहिं छोड़लक तँ ओकरा विरोधमे पदक त्याग कयल।

1919 मे जालियावाला हत्याकाण्डक विरोधमे रवीन्द्रनाथ बड़ा लाटकें 'सर' क उपाधि फिरौने छला। 1943 मे गांधीजीक जीवनक अवहेला अंगरेज कयलक तकर विरोधमे नलिन सरकार अपन महापद त्यागल। पद ओ जीवनक प्रति ई प्रचुर अनासक्ति बेर बेर बंगालहिमे देखल।

आजाद हिन्द फौज

15 दिसम्बर (1952ई०) कें दिल्लीक राज्यपरिषद् (काउन्सिल अव् स्टेट्स) मे एक गैरसरकारी प्रस्ताव पेश हयत कि आजाद हिन्द फौजक सदस्य लोकनिकें भारतीय सेनामे शामिल कय लेल जाउन।

नेताजी सुभाषचन्द्रक आजाद हिन्द फौजक प्रति जवाहरलाल नेहरुक कांग्रेस

सरकार जे अदम्य ईर्ष्या ओ अक्षम्य अन्यायक आचरण कयलक अछि तकर प्रतिशोध भारतक वर्तमान समाज नहिं कय सकै अछि। ओ अत्यंत त्रस्त अछि, दीनअछि नेहरू ओ हुनक झुण्डक ओतय दँतखिसरी कय जीवन यापनक किछु सड़लोपचल वस्तु लेबय चाहै अछि। ओकरा मे ओ दम एखन कतय कि ओ अंगरेजक चंगुल सें एहि पुरातन देशके बचेबाक अतुलनीय प्रयास कयनहार सुभाषचन्द्र ओ हुनक सैनिक बन्धुक सम्मान करत ओ देशक स्वार्थान्ध पतित एवं निर्मम सरकारसँ कराओत!

आजाद हिन्द फौजक वर्त्तमान दुर्दशा संसारक एक अभुतपूर्व घटना थीक। देशकें विदेशीक हाथसें मुक्त कयनिहार सेना विदेशीक संग मिलि देशकें पराधीन रखनिहार बन्दूकचीक अधीन रहय ई एहि जीवनक महा-असह्य विडम्बना थीक। परंच के बाजय? जकरा देशद्रोहक अभियोग मे प्राण दण्ड भेटय चाहै छलै से बनि गेल सेनाक ओ राष्ट्रकक माइनजन, जकरा देशक प्रति भक्ति एवं ओकर उद्धारक हेतु महान् त्यागक कारणें राजमुकुट भेटयक चाहै छलै से अन्न-वस्त्रक अभावमे गली-गली भटकल फिरै अछि! अंगरेज गेल परंच अपनहुँसँ विकट अपन भारतीय भूत एहि अभागल देशकें पदे-पदे अपमानित ओ सीदित करै लें छोड़ि गेल।

स्वाधीनता संग्रामक इतिहास

सातवर्ष पूर्व कांग्रेसी लोकनि दिल्लीक गद्दी पौलनि ताही समयसँ सुनै छी अंगरेजी राजक विरुद्ध भारतक स्वाधीनता संग्रामक इतिहास लिखयबाक उद्योगमे ओ लोकनि छथि। प्रथम हिनकालोकनिक प्रयास भेल भारतक स्वाधीनताक संग्राम चलयबाक ओ ओकरा प्राप्त करबाक सोलहो आना श्रेय कांग्रेसमे गांधी-नेहरू आदि गुटकें दी-सुभाषचन्द्र ओ हुनक आजाद हिन्द फौज, सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट आदि पार्टी, बंगालक अनुशीलन ओ पंजाबक गदर पार्टी, भगतसिंह, खुदीराम, ताहूसँ पूर्व 1857क सैनिक विद्रोह आदिक कतहु उल्लेखक विचार नहिं छल। राष्ट्रीय श्रेय के लुटबाक नेहरू आदिक एहि षड़यन्त्रक देश भरिमे जहाँ तहाँ विरोध भेल। गत वर्ष 29 मार्च 1952 कैं दरभंगा टाउन हौलमे सन् सत्तावन दिवस मनाओल गेल जाहिमे एहि रूपक एक प्रस्तावो पास भेल छल।

हर्षक विषय जे दिल्ली सरकार आब एहि विषयमे अपन नीति सुधारलक अछि। सरकारी सूचनाक अनुसार आब स्वाधीनता संग्रामक जे इतिहास लिखल जायत ताहिमे सब प्रमुख व्यक्ति ओ दलक उल्लेख रहत, इतिहास यथासम्भव निष्पक्ष रहत। बेस, पूर्वक दुर्नीतसँ ई नवीन योजना अवश्य नीक। परंच जाहि लोकनि पर एहि इतिहासक भार देल गेल छनि से कांग्रेसी छथि वा कांग्रेस

सरकारक खैरख्वाह। आनहु क्षेत्रमे इतिहासक जननिहार छथि, लिखिनिहार छथि, स्वयं सेह संग्राममे भाग नेने छथि। हुनका लोकनिक सहयोग सरकार कियै नहिं मांगै अछि से कारण ततेक दुर्बोध नहिं अछि। कांग्रेस सरकार शासनमे जे निकृष्ट स्वार्थपरता रखै अछि ताही भावें विद्याहुक क्षेत्रमे चलै अछि। एहि सँ ओ सत्यपर आवरण नहिं दय सकै अछि। केवल अपनाकें अप्रतिष्ठ करै अछि, घृणास्पद बनबै अछि।

(2 फरवरी 1953)

स्वराज दिवस

गत 26 जनबरी कें कांग्रेस सरकार दिससँ जहाँ तहाँ स्वराज दिवस मनाओल गेल। सैन्य बलक प्रदर्शनक संगहि संगीत, नृत्य, नाट्य आदिहुक शोभा छल। प्रान्तीय राजधानी सभक राजभवन ओ दिल्लीक राष्ट्रपति भवन धूमधाम सँ बेस जगमग छल।

तेइस वर्ष पूर्व, 1930 इस्वीक 26 जनबरी कें पहिलेपहिल कांग्रेस आयोजनमे एहि देशक लोक स्वतंत्रता दिवस मनौलक, ओ समय छल विचित्र। दिसम्बर 1929क अन्तिम सप्ताहमे कांग्रेसक महासम्मेलन लाहोरमे भेल, वर्तमान प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू छला सभापति, ई देश ओ कांग्रेस अंगरेज सरकारसँ सब तरहें तंग भऽ गेल छल। पच्चीस धूये स्वराज देव टारबेटा अंगरेज शासक लोकनिक मुख्य वृत्ति बुझना गेल। 1928क कलकत्ता कांग्रेस आखिरी एक वर्षक समय-1929क 31 दिसम्बर पर्यन्त-सरकारकें देलक। ताहिमध्य यदि ओ भारतेकें 'डोमिनियन स्टेट्स' अर्थात् आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रिका ओ कनाडाक पद दिअय तँ बेस, नहि तँ पूर्ण स्वराजक घोषणा कयल जायत।

लाहोरक रावी तटपर 31 दिसम्बर 1929क रातिमे लाखों व्यक्ति कांग्रेसक संग-संग कठोर शीतमे 12 बजे तक लण्डनक राजभवने सँ अर्धस्वराज (डोमिनियन स्टेट्स)क घोषणाक प्रतिक्षा करै छल। समस्त देश लाहोर ओ लण्डन दिस टकटकी लगौने छल। बड़ संकटक घड़ी देशक समक्ष उपस्थित भेल। स्वराज-अर्धसही-वा विदेशी शासनक प्रति विद्रोह।

रातिक बारह बाजल। लण्डन वा दितली सँ कोनो वार्त्ता लाहोर नहिं गेल। प्रस्ताव पास भेल पूर्ण स्वराजक, अंगरेजी राजसँ पूर्ण सम्बन्ध विच्छेदक ओ तीन सप्ताह बाद 26 जनबरी 1930 कें स्वतंत्रता दिवस मनयबाक। देशमे अंगरेजक विरुद्ध आगि उठि गेल। 30क 26 जनबरी कें देशक कोन-कोनमे विद्रोहक दृश्य उपस्थित भऽ गेल। कतेक ठाम लाठी चलल, गोली चलल। कतेक लोक आहत भेल। परन्तु के मानै अछि। स्त्री पुरुष, नेना-बूढ़, विद्यार्थी-गृहस्थ सभ उन्मत।

के मारि बुझै अछि, के गारि बुझै अछि!

एतेक जे अंगरेजक गंजन-गारि, मारि, लूटो हत्या-30 क 26 जनबरी ओकर बाद प्रति सालहि अभागल देशक लोक सहलक से कोन आशासँ? अंगरेज विदेशी छल तें ओकर गारि-गंजन नीत छलै। कांग्रेसी लोकनि अपन बन्धु-बान्धव छथि। तें हिनक अनिष्ट वृत्ति मधु हयत ताहि लेल? नहि। विदेशक अधीनमे देशक दुर्दशा छल – अन्न-वस्त्रक कष्ट छल, शिक्षा, दवा, घर आदि सभ वस्तुक असुविधा छल तकर निवारण हेतु।

पन्द्रह वर्षक बाद 1945 मे जवाहरलालक नेतृत्वमे कांग्रेस दिल्लीक गद्दी पर बैसल। देशक हृदय प्रफुल्ल भऽ उठल। सहस्त्र कोसक दुर्गम पथ-पांतर पार कय भग्न-दुर्बल शरीर यात्री जखन तीर्थ मंदिरक घण्टा सुनै अछि, ओकर शिखर देखै अछि तँ ओकर मनोरथक कथा की कहू! एहि देशक एहने कोटिशः यात्री स्वराज-मन्दिरक घण्टा सुनलक, ओकर शिखर देखलक 1945 मे जखन लाहोर कांग्रेसक जवाहरलाल नेहरु दिल्ली राधानीक अधिकारी भेला। युग-युग सँ मुक्तिक यज्ञ-कुण्डमे जे यत्किंचित् सुखक, मानक ओ प्राणक आहुति पड़ल छल तकर समस्त विकीर्ण आशा एकहि बेर संचित हो पूर्णकाम लेल विकल भय उठल।

परन्तु दिल्लीक ई जे महानमंदिर, ताहिठाम महादेव कहाँ छथि, अढ़रन-ढ़रन, शिव, दीनहितकारी जे लोकक दुख हरता? लाहोर कांग्रेसक देल तऽ ओतय प्रभुता ओ विलासमे दानव बनि अति जनमंडलक क्रन्दन ओ हाहाकारमे संगीत-ध्वनिक आनन्द लय रहला अछि!

ई थीक दैवक विडम्बना! परन्तु ओ छथि विचित्र। एहन देवतुल्य पुरुषकें दानव-वृत्ति कय देशकें यदि विपन्न कयल तँ संगहि एकरहु अपूर्व साहस दय एहि असुरक संग संघर्षक हेतु तैयार कय देल।

देश एखन विकट स्थिति मे अछि। कांग्रेस-राज स्वराज नहिं, एकर विपरीत असुरराज बनि लोकक हेतु असह्य भऽ उठल अछि। कखन कतय ज्वालामुखी फटत से के कहय? कांग्रेसी लोकनि तँ कतेक गोटय वेद-पुराण पढ़ने छथि। असु-वृत्तिक फल जनै छथि। तखन कियैक एना देवासुर-संग्रामक आयोजन कय रहल छथि?

(2 फरवरी 1953)



राजपीड़ित

देशभक्त वा हुनक परिवार कतहु कांग्रेस सरकारक ओहिठाँव जीविकाक हेतु धरना दिअय, ई ग्लानिक विषय थीक – सभक लेल, सरकारक लेल ओ समाजक लेल। समाज अपन एखन से अज्ञानदशा मे अछि कि तिरस्कार, अपमान वा अन्याय बुझितहि नहिं छै, केवल ठांहिपठांहि प्रशंसा वा गारि-मारिक अन्दाज कय सकै अछि। सरकारमे जे कांग्रेसी लोकनि एखन छथि हुनकामे विवेक ओ औदार्य स्थापना करब मूढ़ता थीक। ओलोकनि जाहिलेल कांग्रेस मे अयला से आब स्पष्ट अछि – गद्दी भेटो, सुख भेटो, वैभव ओ विलास भेटो। सब भेटल। आब? संतोष बाकी अछि। तें एते हांवडांव मचल अछि हुनका और चाही और! कते? कोनो ठेकान नहिं! धन, प्रभुत्व ओ विलासक अनन्त, अक्षय्य भण्डार चाही! एकरे हेतु अनन्त, अनवरत प्रयास भयरहल अछि। हुनका फुर्सति कहां कि अन्न, वस्त्र, गृह, औषध ओ पथ्यसँ हीन व्यक्तिक ध्यान करथु, हुनक हाहाकार सँ द्रवित ओ विकल भय हुनक उद्धार लेल दौड़थु?

केओ केओ अनुतप्त देशभक्त कहै छथि कांग्रेसी सरकार कृतघ्न अछि, जकरे बलें पद पौलक, सब सुख पौलक तकरहि बिसरि देलक। की करैत? विचारु तऽ। देशभक्त कें ज्ञानहीन जनि बनबियौ। स्वराजक लड़ाइक हेतु की छल? केवल परमार्थ लेल? स्वार्थक ओहिमे कतहु लेश नहिं छलै। अपन-अपन हृदयसँ एखनहु पुछू। सब स्वार्थहि लेल छल। 'नबै सर्वस्य कामाय सर्वमस्ति, आमनस्तु कामय सर्वमस्ति।' जे किछु क्लेश ओ भर्त्सना देशक हेतु सहल सभक आधार छल दुःखक अन्त ओ सुखक प्राप्तिक आशा-सब काजमे प्रेरणा छल हृदयस्थ आत्मकल्याण भावना। संघबद्ध भय काज कयलन्हि स्वार्थहीन नहिं भेलहुँ-ताहिसँ स्वार्थ केवल सुलभ भेल। क्रियाक समाप्ति सँ यदि तृप्ति नहिं भेल तँ अपन भाग्य के दोष दिअय, से सफल भेला, पद पौलनि सुखमे छथि-अतृप्ते सही-हुनका प्रति सहिष्णु होउ। हुनक निन्दा वा भर्त्सना कथीलेल? हुनकालोकनि ताहि मदमे ने मत्त छथि कि कोन निन्दा, कोन स्तुति? सब बराबरी। ओ लोकनि आब 'विदेह' भऽ गेल छथि। अहाँक उपद्रव पर कहुखन हँसि देताह, अन्ठाय देताह, कहुखन आंखि निहारि तकवा ओ जहल वा फांसी पर पहुँचाय देता! लाजधाक कतय पाबी? ओ सब एखन निर्द्वन्द्व छथि-निर्लज्ज ओ भयहीन, 'एकां लज्जां परितज्य सर्वत्र विजयी भवेत्।'

निराश भय यदि वेदांतक शरण लेल तँ कोनो बेजाय नहिं। अही लेलतँ सन्याससन सर्वोच्च आश्रमक व्यवस्था भेल। यदि स्वार्थक, ऐहिक सुखक मोह अछिये तँ खुशामद, कानब, धरफरन देव आदिक रास्ता छोड़ू। ओहिमे सिर्फ कष्ट छै, उपहास छै, कोनो लाभ नहिं संघर्षक पथ धरु-ओ पथ जे अंगरेजक ओतय धेनेरही। ओ पथ जकरा धय अंगरेज सन प्रबल शत्रुक संहार कयल। कांग्रेसी शत्रु तँ देशी थीक। चिन्हल गमल। एकरासँ जीतब कोन कठिन? जरियो टा एखन नहिं जमलै अछि। बेहूरल खाम अछि। सतत हुरितहि रहै अछि तैयो डोलिते रहै छै। एक धक्का कसिकें लागाउ तँ धाँहि दय खसत। ई देवता विनती बुझनिहार नहिं। विनतीक अर्थ हिनका ओतय होइ अछि अबलता-सिर्फ उपहास ओ अपमानक कारण। से छोड़ू, पौरुष धरू। मृत्यु वा सुख, एक तँ हयत। ई हुकुर-हुकुर जीवन कियै लेब?

राजपीड़ितक सहायतार्थ 1945 मे बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटी छ लाख टाका जमा कयलक। बहुतो कें सहायता भेटलै। 1946 मे कांग्रेसक सरकार बनलतँ और सहायताक आशा लोक बन्हलक। बस राजपीड़ित मे नाम लिखाबय लागल जतेक अंगरेजक संग पुरनिहार छल से सब। तकर विरुद्ध राजपीड़ित लोकनि हल्ला कयल तँ सरकार हुकुमनामा जारी भेल जे लोक दरखास्त दिअय। जाँच हयत तखन सहायता भेटत। बेस, सेहो भेल। जाँच लेल बहालभेल अंगरेजक खैररवाह कठपिंगल पेंसनभोगी हाकिम लोकनि। सर्टीफिकेटक परिपाटी चलल ओ से देवाक हक देल गेलै कलक्टर लोकनि कें। जे छल भक्षक से बनाओल गेल रक्षक! ताहिसँ राजपीड़ितक जे गंजन भेल से कि व्यर्थ जायत! अंगरेजक मुहलगुआ हाकिम द्वारा जे राजपीड़ित लोकनिक उपहास, अपमान कांग्रेस सरकार करौलक अछि तकर निर्णय भय रहल अछि, ओकर जे प्रतिशोध लोक सोचि रहल अछि तकर कल्पना कय कांग्रेसी मिनिस्टर लोकनि कियै नहि सम्हरै छथि? चीनीमे लुप्त चुट्ठी जकाँ एखन भोगलिप्त छथि। जखन सोझे प्रहार पड़तनि तँ नीन टुटतनि ओ सिराजुद्दौला जकाँ प्राणदान लेल विकल हयता। प्राणक लेल पापीक ओ वैकल्प तथा उपहास, अपमान एवं अत्याचार सँ पीड़ित, उत्तप्त मानवक निर्मम, निष्ठुर प्रतिकृतिक कोन निराकरण हो?

(23 फरवरी 1953)



राजपीड़ित

किछु दिन भेल एक बाबाजी प्रातःकाल सूर्योदय सँ पूर्वहि 'मिथिला' पहुँचला। श्यामरंग; बेसनाम ओ पातर शरीर, गेड़ुआ वस्त्र, केस-दाढ़ी खूब बढ़ल, बगलमे पीयर रंगक एकटा छोट झोरी, छोटेसन एकटा पीतरक कमण्डल। झलफले मे दुआरिपर आबि ढाढ़ भेला त हुनक रूप किछु भयाबह लागल। सशंकित भऽ पूछल-'अपने'? किछु काल गुम्म रहि-निश्चल नेत्रें-दृढ़ किन्तु किछु------सन- ताकि बजला ''42क फरार!' 'एखन कांग्रेसक राज-स्वराज-मे अहाँ फरार?' 'कांग्रेसक राज, स्वराज नहिं!' फेर चुप्प। दीर्घ सांस लेल, अश्रुपात रोकबाक यत्न करैत बजला-स्वराज रहैत एखनत गृहस्थ रहितहुँ, लोकवेद बाल-बच्चाक संग जीवनक सुख लैतहुँ, ई विकट कष्टकर रूपक आयोजन नहिं करय पड़ैत।'

बाबाजीसँ पता लागल 42क आन्दोलनमे जेलमे छला त हुनक सब वस्तु अंगरेजक पुलिस ओ हाकिम लूटि लयगेल। जेलसँ अयलाक बाद देखल जे किछु खेत छल सब गंगामे कटि गेल। वृद्धा रुग्ना माय, स्त्री, पांचटा बाल-सखाक निर्वाहक कोनो आसरा नहिं रहल। कांग्रेस सरकारसँ सहायताक हेतु निवेदन कयल त कलक्टरसँ राजपीड़ित हयबाक सर्टिफिकेट माङल गेल। अंगरेजक दिससँ अर्थक लोभें जे निर्मम भऽ स्वराज-आन्दोलनमे भाग लेबयवालापर प्रहार केने छल तकरासँ अपन देश सेवाक प्रमाणपत्र माङ्य जाइ ई सर्वथा अकल्पनीय मानि बेचारे बैस रहला। किछु दिन कोनो तरहें परिवार सम्हरल। पश्चात् हिम्मत हारि बाना बदलि साधुमण्डलमे शामिल भेल। गृहस्थ ओ साधुजीवनक अपन कते मार्मिक कथा कहल। 'जेलमे परिवार ओ जीवनक चिन्ता भेलापर अहाँक वेदान्त, मायावाद, विवर्तवाद एवं संगहि सांसारिकवाद समाजवादक कथा द्वारा मन बहटारै छलहुँ। बाहर मे ओहि कथापुराणसँ काज नहिं चलल त ई रूप धयल। एहिसँ अन्तर्व्यथा मेटत तकर आशा नहि। एहि साधु रूपक भीतर वर्तमान पूर्वक भीषण अभिलाषा सतत अद्विग्न केने रहै अछि-जेना केओ सदिखन कहैत हो, रे अंगरेजी राज भेटलहु नहिं, छौहे, एकरा मेटा, मेटा-------- से फेर 42क विकराल अग्निक खोजमे चलल छी, ओकर पुरोहित केओ भेटैत कि फेर

ओइमहाज्वालामे प्रविष्ट कऽ दैत! की, छौ दम्म बचल, बनबऽ ओ काल-पुरोहित? 42क चारि सय हम सिपाही सिर्फ बिहारमे साधुवेष धेने घूमल फिरै छी, हृदयमे कांग्रेस राजक प्रति उत्कट भावना नेने! कहां गेल रे विकल देश, दुर्गति समाज! चल, तिल-तिल कय जुनि मर। उठ, शत्रुसें युद्ध हेतु चल 'हतो वा प्राप्तस्यसे स्वर्ग ज़ित्वा वा मोक्ष्यंसे महीम्।'

देखै छी खुदीराम ओ भगतसिंहक गीतापाठ फेर देशमे घांय-घांय बढ़ि रहल अछि। की हयत? राजालोकनि प्रभुताक मदमे आन्हर भेल छथि, प्रजा पीड़ित ओ त्रस्त रहितहु सर्वथा निश्चेष्ट नहिं होइ अछि। राजवर्गमे विलास ओ अहंकारक जिद्द, प्रजामे क्रांतिक अजेय वृत्ति। दुनूक संघर्ष कहिया धरि चलत?

(1 जून 1953)

❑❑

भारतक प्रतिष्ठा

यत्रतत्र अपन आलोचना सें विकल भय कांग्रेसी लोकनि बाजि उठै छथि, देशमे जे हो विदेशमे तँ नेहरूक प्रतापें भारतक प्रतिष्ठा बढ़ि गेल अछि। ताहि हेतु ई देश कांग्रेसक प्रति कृतज्ञ नहिं भय ओकर निर्मम आलोचना जे करै अछि से कहाँ तक न्याय्य?

विदेशक प्रतिष्ठासँ भुक्खड़, विकल, अनाड़ी देशवासी कें कहाँ तक सान्त्वना हो? 'कुल गौरव कि धो-धो चाटब?' एहि अभागल देशकें चाही अन्न, वस्त्र, घर, रोगीक हेतु औषध, नेना लोकनिक हेतु स्कूल। एतेक हो तँ देश-विदेशक प्रतिष्ठो लोक बुझि सकत। नहिं तँ क्षुधासँ उद्विग्नकें वेदान्तक वचन कहि ओकर घाव पर नोन छीटब ओ अपन पाखण्ड तथा अविवेकिताक परिचय देब हयत।

परंच देशक प्रतिष्ठा कि सचमुच अनतऽ बढ़ल अछि? बढ़ल कि घटल, वा ठामहि ठाम अछि से तँ सूरदासक घी जकाँ प्रकट भइये जायत। दिन-दिन भऽ रहल अछि।

की पबैछी? जाहि कोनो काजमे भारतक प्रतिनिधि विदेशी लोकनिक समक्ष किछु प्रस्ताव वा सिद्धांत कथा रखै छथि से तिरस्कृते होइ अछि।

हालहि अमेरिका मे राष्ट्रसंघक सम्मेलन मे जवाहरलालक बहिन विजयलक्ष्मी भारतक प्रधान प्रतिनिधिक रूपमे कानिंकयँ बजली जे राष्ट्रसंघ मे भारतक बड़ उपेक्षा होइ अछि कारण पांच वर्ष पूर्व भारत ओतय पाकिस्तान पर नालिश कयलक जे ओ हमर क्षेत्र कश्मीर पर हमला कयने अछि। राष्ट्रसंघ तकर एतबे कयलक जे मुद्दइ भारतकें मुद्दालह पाकिस्तानक संग सानि देलक।

सिंहलमे जे भारतीय लोकनिक दुर्दशा भऽ रहल अछि ताहि प्रसंग महामंत्री जी अपनहि कै बेर कै तरहें बाजि उठला, कोनो असर नहिं भेल।

फ्रांस ओ पुर्तगालसन नान्हिटाटा देश भारतक छातीपर अपन अनेक दोहट चला रहल अछि। जव्राहरलाल की कयलनि? पाण्डीचेरीक सीमापर ठाढ़े छला। जखन हजारों विरोधी कें फ्रांसक पक्षपाती अपन सीमासें लठियाय हिनका दिस बड़लाय देलकनि। ई महापुरुष खौंझाय उठलाह। फ्रांस कहलकनि हम भारतमे रहबे करब, हमर के की करत? गोआमे पुर्तगालक ओहने सन कथा। फ्रांस आ पुर्तगाल अपनहिं बलें नहिं कुदै अछि। ओकरालोकनिक पीठपर छै अमेरिका जकरा पण्डितजीओ माइनजन मानै छथि।

पूर्व आ दक्षिण अफ्रिकामे भारतीय दुर्गतिक कतेक विरोध जवाहरलाल जी कयलनि। की फल भेल?

कोशी योजनाक खेल

भारतक पंचवर्षीय योजनामे पहिनहि जकाँ फेर मिथिलाक अवहेला कयल गेल अछि। एहि योजनाक अन्तर्गत कांग्रेसी सरकार 2069 करोड़ टाका खर्च करत किन्तु रोग ओ बाढ़िसँ पस्त मिथिलाक पौने दू करोड़ भुक्खड़क हेतु किछु नहिं। ने कोशी, कमला, वागमती ओ गण्डकक उपद्रव रोकबाक हेतु कोनो व्यवस्था, ने मोकामा मे पुल, ने एकोटा विश्वविद्यालय, ने एकहुटा रेडियो स्टेशन। मिथिलाक लोक कें फुसिअबैक हेतु योजनामे एक ठाम कोसीक नाम राखि देल गेल अछि। कहल गेल अछि जौ दामोदर योजना आदि सँ सरकार चैन हयत तँ योजनाक अन्तिम दू सालमे कोशीक पहिल स्टेज कार्यान्वित करत-एकटा रेलवे लाइन ओ एकटा बांध बनाओत जाहिसँ ने बाढ़ि रुकत ने सिंचाइ इयत। गण्डक, कमला आदिक एतबहु चर्चा नहिं। जवाहरलाल मिथिलाक लोककें गमने छथि। जनै छथि एकरा सब पर कतबो अत्याचार करब तथापि एक बेर जँ स्वयं पहुँच जायब तँ मिथिलाक लाखक लाख लोक हमरा पैरक धूरा अपन माथ पर चढ़ेबालेल टूटि पड़त।

जनसंख्या ओ क्षेत्रमे मिथिला दुनियाक अनेक स्वतन्त्र देशमे पैघ अछि। उन्नतिक सब साधन एकरा प्राप्त छैक। एखनहु बिहार राज्य-कोषमे प्रतिवर्ष मिथिला से 14 करोड़ टाका जाइ अछि। स्वतन्त्र मिथिला सब तरहें सम्पन्न हयत से निश्चित। तैयो ई गुलामहि बनल रहत?

(22 दिसम्बर 1952)

□□

नेहरू ओ भ्रष्टाचार

कांग्रेस सरकार भ्रष्टाचारक अखाड़ा थीक से सर्वविदित अछि। किन्तु कांग्रेस लोकनि जनताक समक्ष बजै छथि प्रान्तीय मन्त्री लोकनि, कांग्रेसक छोट-छोट नेता कार्यकर्त्ता लोकनि भ्रष्ट भऽ गेल छथि अवश्य परन्तु नेहरू स्वयं बड़ इमानदार छथि। अज्ञान जनता एहि प्रचारमे पड़ि नेहरू कें सब भ्रष्टाचारसँ मुक्त देवता बुझय लगै अछि। जखन ओ जनताक बीच पहुँचैत छथि लाखलाख लोक हुनकै पैरक माटि माथ पर लयबाक लेल दौड़े अछि।

किन्तु वास्तवमे नेहरू भ्रष्टाचार सँ मुक्त छथि? कांग्रेसक प्रान्तीय नेतालोकनि सँ नेहरू बेसी ईमानदार छथि? वस्तु स्थिति एहि धारणाक विपरीत अछि। जिला ओ प्रान्तक कांग्रेसी नेता लोकनि हमरा सभक समीप छथि। हुनकालोकनिक आचरण प्रत्यक्ष अछि, तें भ्रष्ट कहैत छियनि। नेहरू साहेब हमरा सब सँ चारि सय कोस दूर दिल्ली मे रहै छथि। हुनक आचरणक विषयमे अखबारहिसँ समाचार भेटै अछि। प्रमुख अखबार सब भ्रष्टाचारसँ लाभ उठनिहार पूँजीपतिक हाथमे अछि। नेहरूजीक आचरणक ठीक ठीक पता तखन कोना पायब? तथापि संसदमे समय-समय पर जे रहस्योद्‌घाटन होइ अछि ताहिसँ नेहरू सरकारक भ्रष्टाचारक यथेष्ठ प्रमाण भेटल अछि। किन्तु रहस्यक उद्‌घाटन विरोधी दलक द्वारा भेल अछि। किन्तु दुइ चारि भ्रष्टाचारक भंडाफोर तँ नेहरू साहेबक अपनहिं दलक सदस्य सब कयने छथि।

नेहरू साहबैक सोझहिं मे फौजक हेतु जीप खरीदबामे जनताक लाखलाख टाका पार भऽ गेल। खादक व्यवसायमे, गृहनिर्माण सम्बन्धी वस्तुक कारखानामे, हीराकुण्ड योजना ओ दामोदर वैली कारपोरेशन मे करोड़क करोड़ टाकाक चोरी भेल। हालहिमे 'औद्योगिक वित्त कारपोरेशन' क सम्बन्धमे भ्रष्टाचारक भंडाफ़ोर भेल अछि। ई सब भ्रष्टाचार ककर थीक-नेहरूक अथवा ककरो आनक? ई सब विभाग जवाहरलाल क मंत्रिमंडलक जिम्मा अछि। जाहि विभाग मे भ्रष्टाचार होइ अछि केवल ताहि विभागक मंत्री नहिं, सम्पूर्ण मंत्रिमंडल ओ विशेष रूपसँ प्रधानमंत्री भ्रष्टाचारक हेतु जिम्मेदार छथि। कैटा भ्रष्टाचारमे ओहि बिभागक मंत्रीक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हाथ छलनि तकरहु पता समाचार सबसँ भेटै अछि। एहि सम्बन्धमे नेहरुक अपन कथन की छनि? आइधरि संसद मे जखन-जखन भ्रष्टाचारक रहस्योद्‌घाटन भेल अछि ओ एहि पर गर्मागर्मी बहस चलल एछि,

नेहरू साहेब स्वयं संसदमे आबि सदस्यगण कें डाँटि बहस समाप्त करा देने छथि। संसदक सदस्यगणकें डँटबामे हिनका कोनो संकोच नहिं। प्रभुताक मदमे नेहरू साहेब डॉ० मेघनाद साह, प्रो० खुशाल साह ओ प्रो० हीरेन्द्रनाथ मुखर्जी सन सन विद्वान लोकनिकें डाँटि दैत छथि। ओ सर्वशक्ति सम्पन्न छथि। हुनका सँ भ्रष्टाचारक सफाइ के लिये।

चीनमे च्याङ्काइशेकक शासनमे एही कोटिक भ्रष्टाचार छल। ओहो सर्वशक्तिसम्पन्न बुझल जाइ छला। हुनका सँ भ्रष्टाचारक सफाइ के लैत? पूरा कोमिङ्तांङ् हुनका हाथमे। किन्तु नहिं। चीनमे भ्रष्टाचारक सफाइ पूछयवाला उठला। अत्याचार सँ तंग भऽ कय चीनक जनता जागल। च्याङ्काइशेक कें चीनसँ हटौलक। हुनका टाइवानमे जाकय शरण लेबय पड़लनि।

भारतक जनतामे एखन ओ पैरुख नहिं जे भ्रष्टाचारक हिसाब-किताब लेत-शक्तिक कमी नहिं, केवल ज्ञानक कमी।

(5 फरवरी 1953)

❑❑

डाक्टर

पटनाक भारतीय डाक्टर सम्मेलनमे अनेक महत्वपूर्ण भाषण ओ निर्णय भेल। भारतक सर्वश्रेष्ठ डाक्टर लोकनि सँ अनेक एहि समारोहमे उपस्थित छला। डाक्टरी विद्या ओ व्यवहारक उत्तम विवेचन हयबाकतँ एहिसँ बढ़ि दोसर स्थल नहि।

रुग्न ओ दुखी जनताक सेवा ओ कष्टनिवारण डाक्टरी विद्यहि नहिं आनहु विज्ञानक सिद्धांत कहल ओ मानल जाइ अछि। परन्तु एहि सिद्धान्तक पालन क्वचिते होइ अछि। आन विज्ञानक दुरुपयोग विशेषतया युद्ध कालमे होइ अछि मेडिकल साइन्सतँ रोज गरीब जनताक हेतु एखन रक्षकसँ बेशी भक्षक भऽ रहल अछि। एकर कारण स्पष्ट अछि। विवेकशील डाक्टरहु लोकनि एकरा जनै छथि, कतहु कतहु गछितहुँ छथि।

बीसपचीस वर्ष पूर्व डाक्टरी विद्यामे एहिदेशक लोककें निष्ठा नहिंये जकाँ छलै। शहरमे किछु रहबो करै देहातमे तँ टोना-टापर, जड़ी-बूटी गहबर ओ भगताक विभूति आदिये धन्वतरि छल। धीरे-धीरे विद्याक प्रचार सँ अन्धविश्वास टूटय लागल। पुरान अन्धविश्वासक पराजयक सबसँ प्रबल ओ प्रत्यक्ष फल देखल डाक्टरीमे। जेलोकनि अस्पताल ओ डाक्टर कें कलि ओ पापक प्रतीक मानय छला सेहो आब क्लेश सँ त्राणक हेतु ओहिठाम आबय लगला। अस्पताल ओ डाक्टर धीरे-धीरे त्याज्यसँ ग्राह्य ओ पश्चात् अनिवार्य भय गेल। एकर अनिवार्यताहि एकरा दुष्ट बना देलक। रोगसँ विकल लोक सर्वस्व दय प्राण बचयबाक हेतु एहिठाम दौड़य लागल। डाक्टर लोकनिक लोभ जागल। युवक द्रव्यार्थी लोकनिक ध्यान एमहर गेल। मेडिकल स्कूल ओ कालेजमे पहिने भंगलोटाइ छल, आब नाम लिखाइक हेतु थहाथै होमय लागल। एके उद्देश्य-रोगसँ विकल लोकक जान हाथ मे लय चटपट धनी बनि जाइ। एक दिस जमींदारी ओ ब्रिटिश साम्राज्य मिटयबाक आयोजन होइ छल, दोसर दिस डाक्टर लोकनिक नवीन जमींदारी ओ साम्राज्य बनि रहल छल। एखन देशसँ अंगरेजक राजगेल, जमींदारहु लुप्तप्राये छथि। परन्तु अस्पताल सभक हालत देखूतँ। रुग्न जनमण्डलीक दैन्य ओ विवश क्रन्दन तथा डाक्टरक नृशंस द्रव्यार्जन पद्धति! आर्तलोक त्राणक हेतु आब कतय जायत?

डॉ० मुले अध्यक्षपदें अपन भाषण मे आयुर्वेदक प्रति निष्ठा प्रकट कयलनि,

किन्तु पं० नेहरू ओ दोसर मंत्री लोकनि अपन भ्रमणक चमक-दमकमे भुलल छथि। पं० नेहरू महाराष्ट्रक अकालपीड़ित सँ बजला अहाँक हाल त दोसर ठाम सँ नीक अछि। हमरा सामने तँ एहन आधा दर्जन सवाल अछि। राजस्थानक आयमंत्री सुखाडिया बजला बीकानेर आदि डिवीजनमे अकालक बात निराधार अछि।

बंगालक विधान सभामे सुन्दरवनक अकालक दिस सरकारक ध्यान आकृष्ट कयल गेल त 7 लाख भूखसँ तडपैत जनताक हेतु डेढ़ लाख टाकाक भददिक बात कहि खाद्यमंत्री-संतोष कऽलेल। पंजाब एवं पेप्सूमे सरकार कन्ट्रोल हटा कऽ स्थिति और गम्भीर बनौने जा रहल अछि।

पार्लियामेन्टमे सदस्यलोकनि छालक रोटी पेश कयने छल। तकरा विषयमे फेर राजस्थानक मंत्री क कहब अछि किछुलोक छालक रोटी बनाकऽ ओकर प्रदर्शन करबै अछि। और ओ बजला एक गोटयक अकाल मृत्युक जाँच कयल गेल त डॉक्टर कहल भूखसँ नहिं बेसी खयने मरल अछि।

तारानगरक प्रजासंघक प्रधानमन्त्री श्री फकीरचन्द बांडिया बजला बीकानेरक बारानगर तहसीलक हाल बड़ खराब अथि। दू सालसँ लगातार अकाल पड़ि रहल अछि।

केन्द्रीय मन्त्री श्री कृष्णमाचार्य बजला हम पं० नेहरूसँ कहब तामिलनाडक हाल बड़ दुखद अछि। एतय शीघ्र मददिक आवश्यकता अछि।

एहन स्थितिक उपेक्षा कय कांग्रेस सरकार भूखक आगिसँ खेल रहल अछि। केन्द्रीय खाद्यमन्त्री किदबइ अपन कलाबाजी देखाकऽ जनताक भूख मेटाबय चाहै छथि और पं० नेहरू अपन भ्रमणक ऊपरी चमक-दमकक खुशीमे फुलल छथि।

(12 जनवरी 1952)

❑❑

छात्र ओ सरकार

कराचीमे पाकिस्तान सरकार भीषण ओ घृणित हत्याकाण्ड कयलक अछि। 8 जनवरीकैं चारि हजार छात्रक जुलूस पर पुलिस गोली चलौलक। सरकारक कथनानुसार 11 गोटयक मृत्यु ओ सैकड़ों घायल भेल। सरकारी रिपोर्ट ओ वास्तविक स्थित मे भारी अन्तर रहिते छै। अन्दाज अछि 11 सें बहुत बेसी लोकक हत्या भेल।

हत्यामात्र भयावह होइ अछि। निरस्त्र विद्यार्थी लोकनिकतँ और नृशंस ओ दुःखद। ताहू मे कराचीक विद्यार्थी लोकनिक मांग केहन निर्दोष ओ उदात्त छल। स्कूल-कालेजक फीस कम हुअय कि गरीबो लोक पढ़ि सकय, पढ़बा-लिखबाक असुविधा दूर हुअय, सुविधा बढ़य, एहिसँ बढ़ि कोन उत्कृष्ट आचरण युवकवृन्द दिस सँ चाही, शिक्षाक प्रति ई आग्रह युवकगणक आदर्श चित्तवृत्तिक परिचायक थीक। एही आग्रह, एही चित्तवृत्त सँ समाजक अज्ञान दूर हयत, ओकर उन्नतिक पथ प्रशस्त हयत। एहि तरहक शुद्ध भावना सँ पूर्ण युवक वर्ग पर कोनो देश वा समाज गर्व कय सकै अछि। परंच पाकिस्तान सरकार ताहि युवक लोकनि पर गोली चलौलक।

चारिवर्ष पूर्व एही तरहक हत्याकाण्ड-एहू सँ घृणित – कलकत्तामे भेल छल जवाहरलाल नेहरूक गांग्रेस सरकार द्वारा। ओहिमे गोली सँ चारि छात्रीक मृत्यु भेल छल।

पाँचवर्ष पूर्व धरि भारत ओ पाकिस्तान एकेछल। दुहू देशक सरकारमे अनेक संगी-साथिये छथि। दुहूक क्रिया ओ पद्धति तखन एके हो से आश्चर्य की?

भारत आ पाकिस्तानमे अनिवार्य ओ निःशुल्क शिक्षाक बदला सरकारसँ गोली वर्षा ओ नृशंस हत्या लोक पबै अछि तकर प्रतिकार की?

दरभंगा मेडिकल कालेजक छात्र लोकनि किछु आवश्यक सुविधा चाहै छथि। मिनिस्टरक ओतय जाइ छथि तँ ओ कहै छथिन हमरा पूछि नाम लिखौने रही? हम नाम लिखबय कहने रही? छात्रलोकनि ताहिपर अधीर भेल छथि। एकदिन हड़ताल कयलनि अछि ओ बड़का हड़तालक नोटिस देने छथि। सरकार एकटा बेस काबिलती भरल वक्तव्य प्रेसमे छपौलक अछि जाहि प्रसंग छात्रलोकनिक कहब छनि ओ फूसि सँ भरल अछि।

छात्रक प्रति सरकारक ई उत्कट भाव एवं हिनका लोकनिक अधैर्य की करत? चारिवर्ष पूर्वक कलकत्ता वा हालहिक कराचीक हत्याकाण्ड की दरभंगहुमे करबाक ओरिऔन सरकार कय रहल अछि?

अपनादेशक जनसंख्या बहुत अछि सही, खयबाक सामग्रीसँ खायवाला बड़ बेसी छी ठीक, परन्तु काजक लोक, पढ़ल-लिखल, स्वस्थ, श्रमशील, कार्यकुशल ओ समाजक हेतु उपयोगी कते कम छी? छात्रलोकनि, खासकय मेडिकल कालेजक तँ एही अल्पसंख्यक उपयोगी व्यक्ति समूह मे छथि। हुनकालोकनिक अनिष्ट करयवाला सरकारक प्रति की कयल जाय? एहिठामक समाज कते दिन और एहि समस्याक प्रति उदासीन रहत? एखन समय अछि। सचेत होउ। आसन्न हत्याकाण्ड ओ बीभत्स अत्याचारकेँ रोकबाक उद्योग करु।

(19 जनवरी 1953)

❑❑

किसान

किसानलोकनि बड़ दुर्दशामे छथि। अन्नक कष्ट, वस्त्रक कष्ट, रहबाक, चलबाक, बजबाक, पढ़बा-लिखबाक, ओपध-पथक आदिक सभक कष्ट अछि। एहिसँ बचबाक उपाय?

किसान-मजदूरक अपन राज हो, ओलोकनि अपन सुखक व्यवस्था स्वयं करथि ताहिखन हुनक दुखक अन्त हो।

हुनक राजतँ कायम भेल। हुनके प्रतिनिधि बनि कांग्रेसी लोकनि आठ वर्ष सँ देशपर शासन करै छथिं। 1945 मे कांग्रेसीलोकनि गद्दीपर अयला ताही खनसँ धनीवर्गक संग हुनक सांठगाँठ ओ गरीबक प्रति उदासीनता एवं विरोध चलय लागल। किछु दिन लोक बाट देखलक। दूतीन सालमे धैर्य टूटि गेल। कांग्रेसराजक आलोचना होबय लागल। देशक आर्थिक स्थिति दिनदिन खराब होइत गेल, कांग्रेसक प्रति लोकक रोष बढ़इत गेल। जहाँ तहाँ, घरमे, स्कूल-कालेज मे, बाट-घाट मे, बाजारमे, रेलगाड़ी मे, सभामे, अखबार मे, सर्वत्र कांग्रेस सरकारक कठोर आलोचना होबय लागल। सब कहय लागल आब फेर कांग्रेसकें बोट दय राजा नहिं बनायब। काँग्रेसी लोकनिहु ई सुनि-देखि चिन्तामे पड़ला। चुनावक बेर आयल त हारिक डरें टार-बहटोर करय लगला। कइ सालतक कोनो कोनो धूहें टारि गेला। आखिर कते दिन टारितथि? विद्रोहक सेहो डर छल।

1952 क जनबरीमे चुनाव भेल। चुनाव सँ किछुए पूर्व देशमे अनेक ठाम अकालक स्थिति छल। काँग्रस सरकार कहय सब ठीक अछि, ककरहु कोनो कष्ट नहिं अछि। सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट आदि लोकनि अकालक कथा कहथि अन्नबिना मरबवालाक सूचना प्रचारित करथि तँ सरकार कहि उठय सब फसाद थीक, काँग्रेसविरोधी लोकनि काँग्रेस कें व्यर्थक दूरि करय चाहै छथि। बड़ यत्न कयलनि अकालक कथाकें झांपय-तोपयक। लोकक संकट ओ सरकारक अत्याचार ततेक बढ़ल कि देशमे सर्वत्र हाहाकार मचि गेल। तंग भय, हारि कांग्रेस सरकार अमेरिकावाला सड़ल जनेर आनय लागल। लोक तृप्त भेल, काँग्रेस सरकारकें धन्यवाद होवय लागल। हजारक हजार जे सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट समाजसेवी पीड़ित किसान दिससँ सरकारी कचहरी सभमे अन्नक हेतु धरनादय अफसरलोकनिक मारि-गारि खायल, कष्ट उठाओल से सब किसानभाइ विसरि गेला। वोटक समयमे गाबय 'वोट किसको देंगे? जनेरा खिलाया तिसको देंगे।' सड़ल जनेर

खुआबय वाला कांग्रेसकें वोट ओ चाउर भेटयक आन्दोलन करयवाला सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट बन्धुलोकनि कें व्यंग ओ कटुवचन भेटल। किसानभाइ विसरि गेला कांग्रेस सरकार अकालमे किछु नहिं देबय चाहै छल, कहै छल अकाल अछिये नहिं, भूखल जनता लेल वामपक्षी-लोकनिक आन्दोलनसँ तंग भय चाउरदालिक बदला जनेर पटकय लागल। ई जनेर खायवालामे अनेकक पेट चलल, कष्ट भेल, प्राण गेल। तथापि वोटक काल काँग्रेसी लोकनि बाजय लगला काँग्रेसहि लोकक जान बचौलक, काँग्रेसविरोधी लोकनि की कयलनि? लोकहु ई कथा कहय लागल। काँग्रेस जीतल राजाबनि फेर देशकें नोचय लागल। ओकर अन्याय सँ फेर सर्वत्र कोलाहल अछि।

एकरा के रोकत? कष्टमे केवल कानब-खीझबसें काज चलत? शत्रु-मित्रकें याबत चिन्हबाक होश नहिं करब ताबत केओ उद्धार नहिं कय सकै अछि। चारि वर्ष काँग्रेस पाँचम वर्ष किछु चटाय दै अछि बस ओकर पाछू दौड़य लगै छी, जे एखन धरि संग देलक तकरहि स्वार्थी कहि भर्त्सना करय लगै छी, एहि बुद्धिके कल्याण नहिं अछि। सचेष्ट होउ हित ओ मुद्दइकें चीन्हि अपन पक्षकें दृढ़ भय पकड़ू। छोट-मोट लाभ देखाय पथभ्रष्ट कय दैत अछि तकरा बन्द करु। एक भय, सबल भय बढ़ू, के अहाँक अनिष्ट कय सकत? 'शिवास्ते पन्थानः सन्तु।'

(30 मार्च 1953)

❑❑

Vijay

नेहरूक संकट

नेहरू भारतक राजाधिराज छथि, पैंतिस कोटि भारतवासीक भाग्य विधाता। हिनका संकट कथीक हिनकहुसँ बेसी पराक्रमी राजालोकनिपर संकट आयल अछि, निरीह जनताक नृशंस शोषणक प्रतिशोध भेल अछि। इंगलैंडक चार्ल्स प्रथम, फ्रांसक लुइ सोलहम, हालहि इटलीक मुसोलनी ओ जर्मनीक हिटलर नेहरू साहेबसँ बेसी पराक्रमी छल। ओकरा-लोकनिक अन्तिम दुर्दशा बड़ भयानक भेल। नेहरू साहेब पर एखन ओहि तरहक संकट उपस्थित नहिं भेल अछि। भारतक जनता एखनधरि ताहि स्थिति मे नहिं आयल अछि कि अपन नीक बेजायक हिसाब-किताब नेहरूसँ लेत। जाहि धनीवर्गक ओ पोषक छथि, जाहि कांग्रेस पार्टीक अध्यक्ष छथि तकरहि गुटबन्दीक कारण संकट उपस्थित अछि। अपने खुनल खाधिमे खसै छथि।

काँग्रेसकें धनीवर्ग अपना हाथमे कयने अछि। काँग्रेसकें पाबि देशक दीन जनताक अबाध शोषणक हेतु सभ सुविधा हुनकालोकनिकें प्राप्त अछि। विदेशमे पौरोहित्य कर्म जवाहरलालजी बेस नीक जकाँ करै छथि, परंच करवनहु-करवनहु अपन महत्वाकांक्षाक कारण किछु व्यवधानुपस्थित कय दै छथि। ई भारतक राजा पदसँ संतुष्ट। संसार भरिक नेता कहबय चाहै छथि-अमेरिका ओ रूसक बीच पंच बनय चाहै छथि, अपना समाङकें राष्ट्रसंघक सरदार बनबय चाहै छथि।इंगलैंड, अमेरिका कें अपन चेला बुझै अछि, सरदारक पदकोना गछतनि। तिरस्कार कय दैत छनि। ई महापरुष खौंझाय उठै छथि। रूस-चीन पक्षमे, शांतिक हेतु किछु बाजि दै छथि। ताहिसँ अमेरिका नाराज भय जाइ छनि। ओ अछि संसारक धनीवर्गक नेता। ओकरा विरुद्ध किछु बजलाकि भारतक धनीवर्ग हिनका उकठ करब शुरूकरैत अछि। अमेरिका स्वयं भारतक राजनीतिक जीवन पर अपनधाख जमौने अछि। दुई वर्ष पूर्व ओकरासँ गहुम-जनेर कर्जहु लय नेहरू ओ गद्दी पौलनि।बेरबेर ओकर आशा रहिते छनि। काश्मीरक समस्यामेओ लटपटौनहि छनि। कने किछु बजला कि सब दिससँ विरोध करैत छनि।

जम्मूक प्रजासोशलिस्टपार्टीक प्रसंग नेहूरू गत सप्ताह अनाप-सनाप खौझाय बजै छलाह तँ श्यामा प्रसाद मुखर्जी उत्तरमे कहलथिन ''जखन अहाँक अयोग्यताक भंडाफोर होइ अछि कि अहाँ अहिना खौझाय लगै छी, विरोधी पर सम्प्रदायिकता ओ देशक प्रति अन्याय आदिक आरोप करै छी।' नेहरू साहेब राजमदसँ उन्मत्तभय पार्लियामेन्ट मे पैघ सँ पैघ विद्वान् ओ जनसेवीक अपमान करैत छति। डा०

मेघनाद शाहा सन श्रेष्ठ वैज्ञानिक कें पछलगुआ कहि दै छथि। स्वर्गीय प्रो० शाह ओ श्री कामथ कें अनेक बेर तिरस्कार कयने छथि, एही ऐंठब ओ अशिष्ट आचरणक कारण प्रो० हिरेनमुखर्जीक संग रोज संसदमे संघर्ष होइ छनि। डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ओही धनी वर्गक नेता छथि जकर गोहारि नेहरू साहेबकें सदिखन करय पड़ै छनि। तखन डॉ० मुखर्जी हुनक रोच कोना राखथि?

एखन काँग्रेस सम्प्रदायवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचारक आदिक अखाड़ा बनल अछि। नेहरू ओही कांग्रेसक अध्यक्ष छथि। तें एहि सम्प्रदायवादी आन्दोलनकें दबायब नेहरूक हेतु कठिन छनि।

काश्मीरक मुख्यमंत्री शेख अबदुल्ला कुशल राजनीतिज्ञ छथि, जनसेवाक व्रतमे एखनधरि तत्पर छथि। काश्मीरक गरीब जनताकें सुखसुविधा देवाक हेतु प्रयत्न कय रहल छथि। आन प्रान्तमे काँग्रेसी मन्त्रीलोकनि जमींदारी उठौलनि त क्षतिपूर्तिक रूपमे जमींदारलोकनिकें घूस दय अपना पक्षमे रखलनि। शेख अब्दुल्लाकें गरीब जनताक टाका एहि तरहें घूसमे देब स्वीकार नहिं भेल। देशक धनीवर्ग एहिसँ सशंकित भय गेल। देखलक जँ अब्दुलाक धनीविरोधीनीति सफल भेल तँ काश्मीरहिटामे नहिं, देशभरिमे हुनक प्रभाव बढ़त जाहिसँ पूँजीपति वर्ग पर संकट उपस्थित हयत। पहिने अब्दुल्लाकें मोकदमाक पेंच-पांचमे लटपटाय लागल परंच ओ नहिं मानल। तखन साम्प्रदायवादी आन्दोलन ठाढ़ करौलक। एहि आन्दोलनमे समस्त धनी वर्गक सह छै।

नेहरू आब धनीवर्गक फाँसिमे तेना फाँसि गेल छति कि हुनका ओहिसँ बहरायब कठिन छनि। राज भेटबाक बाद भोगलिप्सा ततेक जागि गेलनि कि भविष्यक किछु सुधिये नहिं। लेनिन, स्तालिन ओ माओक प्रशस्त, परन्तु कंटकाकीर्ण पथक अनुसरण करबाक बेर बीति गेलनि। आबतँ धनीवर्गक जेनातेना मनुहारकय, गरीबकें फुसियाय गद्दी कायम रखबाक छनि। एहिहेतु जयप्रकाश नारायण आदि प्रजासोसालिस्ट नेता लोकनिक सहयोग चाहै छथि। नेहरू ओ जयप्रकाश नारायणक सिद्धान्तमे पूर्ण साम्य अछि। जयप्रकाश नारायण और बेसी दुर्बल हृदयक छथि। राज पदबी पयबासँ पहिनहि धनीवर्गक ओतय आत्मसमर्पण कयने छथि। गत चुनावमे ओ बड़ निराश भेला। हिनक सहयोगसँ नेहरू कें प्रायः किछु बल भेटत। परन्तु एहितरहक सांठगांठसँ ओ कतेक दिन खेपता? भारतक पैंतिस कोटि अन्नहीन, वस्त्रहीन, औषधहीन आर्त्त प्रजा कतेक दिन धरि सूतल रहत?

(6 अप्रिल 1953)



अग्निकाण्ड

देशमे अनेक ठाम भीषण अग्निकाण्डसँ हाहाकार मचल अछि। अनेक मनुष्य ओ पशुक मृत्यु तथा लाखों टाकाक सम्पत्तिक नाश भेल अछि।

एहिबेर बाढ़ि ओ रौदीसँ बचिखुचि जहाँ तहाँ किछु अन्न उपजि गेल छल। लोक सोचै छल आब प्रायः देशक दिन फिरत। ताबत् पछबाक प्रचण्ड रूप चलल। अग्निदेवक ताण्डवसँ संहार भयावह भय गेल।

मृत्यु ओ धनक्षय सतत देखै त लोकक कोमल भाव नष्ट नहिं त कुण्ठित अवश्य भय जाइ छै। तथापि विनाशक उपस्थिति मे विचलित रहब अनिवार्य। वैशाखक रौद ओ बिहारिसँ बचबाक हेतु लोक घर लेल बेहाल रहै अछि। जकरा जे रहल, कोठा सोफा वा टूटल मड़ैया ताहि मे शरीरकें झांपिझूपि प्रकृतिक रोषसँ रक्षा लेबयक प्रयास करै अछि। अचानक अग्निक ज्वाला उठल, पश्चिमसँ पूब समस्त गांव कें क्षणभरि मे लपटिलेल। जहिंतहिं लोक प्राण ओ सम्पत्तिक रक्षालेल व्याकुल भय उठल, कोरमे कनैत टेल्ह ओ हाथमे कनतोर-कैंचा कैंचाकय संचित जीवनभरिक धनपूंजी-नेने प्राण हेतु सीऽ सीऽ जरैत सर्वग्रासी आग्निक मध्य अन्ध भय दौड़ैत, घरसें पड़ायबा पर, फेर आहारक चिन्तामे फिरि घरमे कोठीपर राखल धानक मोड़ि उठबैत, पड़ाइत, अग्नि ज्वालसमुद्रसँ संघर्ष करैत, चीरैत, आगू बढ़ैत, किछु दूर जा असमर्थ भय खसैत पुरुष,-माया, शौर्य ओ अकाट्य देहपातक केहन भीषण नाटक! कोन वेदान्त क्षुद्र मनुष्यचित्त कें एहन ठाम राखि सकत! 'समः सुखेच दुःखे च।' बेस। दोसर उपाय? सान्त्वनालेल किछु गोटय देखल सृष्टि-स्थिति-संहारमय समस्त विश्वक ध्यान करै छथि, संसार मे आनहि जीव ओ तत्वक सदृश मनुष्यो सुख ओ दुखक क्रिया करै अछि, ओकर फल पबै अछि तें ओकर विपत्तिकें ओकरे सिरजल कीट, पतंग, मत्स्य, छाग, हरिण, शूकर, व्याघ्र आदि जीवक विपत्तिक सदृश मानि विफलता कें शान्त करयक यत्न करैत अछि। शोक ओ परिताप सँ उदासीन थिक स्थितप्रज्ञता।

विपत्तिमे मन कें बहटारयलेल ई ज्ञान जाल बेजाय नहिं। बल्कि विपन्न व्यक्तिक ई कर्त्तव्य थीक। परंच देशक राआलोकनि अनाथ, अकिंचन, दारुण यातनाक मारल आक्रोशयुक्त जनसमूहकें अन्न, वस्त्र, घर ओऔषधक बदला यदि यैह वेदान्तवाद देथि त अनर्थक गति विकराल ओ सर्वग्रासी भय जायत। राजपद स्वयं भेल माया ओ आसक्ति। माया सक्त व्यक्ति आन कें अनासक्त,

अमायिक, वेदान्तधर्मी बनऽ कहय ई एहि जीवनक एक असह्य विडम्बन थीक। भोग-विलासक प्रति साधारण रूपें अनाशक्त रहितहु कते व्यक्ति राजवर्गक एहि पाषण्डक प्रति असहिष्णु होइ छथि। हुनक ई असहिष्णुता हुनक अनासक्तिक कहातक व्यत्यय भेल कहब कठिन। अपन वा समाज ओ प्राणी समूहक दुःखकें सर्वथा बिसरि देव प्रायः असंभव। तखन साधु जीवन प्राप्त करय लेल अपनाकें यथासाध्य छोड़ि मनुष्य ओ प्राणीसमूहक कल्याणक हेतु कामना ओ यत्न करी से सम्भव ओ कर्त्तव्य। राज्यसुख, स्वर्गसुख ओ मोक्षपदहुसँ बढ़ि जे 'दुःखतप्तानां प्राणिनाम् आर्त्तिनाशनम्' क अभिलाषा कयलसे पुरुष बताह छला वा दिव्य?

(4 मई 1953)

❑❑

बंगाल

बंगाली लोकनिक कहब अछि मानभूमि आदि इलाकाक अधिकांश व्यक्ति बंगलाभाषी छथि तें ओ क्षेत्र बंगाल मे मिला देल जाओ। कलकत्ताक विधान सभामे एहि रूपकक एक प्रस्ताव पास भेल ओ दिल्ली सरकारक पास पठाओल गेल। दिल्ली सरकारक ओइ प्रस्ताव कें पटना सरकारक ओतय विचारक हेतु पठाओल। पटना सरकार ओतयक विधान सभामे बंगालक प्रस्तावक खण्डनवाला एक प्रस्ताव पेशकयल। चारि दिनतक बेस गरमा गरम व्याख्यानक बाद कौंसिल ओ एसेम्बली दुनूमे बंगालक माङ्क खण्डन-प्रस्ताव पास भेल। विधानसभाक बाहरो पटना आदि स्थानमे बंगालक आन्दोलनक विरोध मे सभा भेल अछि।

बंगाल ओ झारखण्डक सीमा क्षेत्रमे बंगाली ओ झारखण्डी लोकनि दुनूक बजनिहार रहथि से स्वाभाविक। सीमा रेखाक निर्णय जनसंख्याक हिसाबें केद्रीय सरकार करय से उचित। एहि हेतु विशेष हो-हल्ला हयब से अनुचित।

परन्तु सिद्धान्तमे विषय जेहन सरल बुझना जाइ अछि तेहन व्यवहारमे नहि अछि। कारण बंगाल ओ बिहार दुनूक शासक छथि धनबोदी-दुनूक लक्ष्य अछि धन ओ सम्पत्तिक संग्रह, लोक सुखक आयोजन नहिं। झारखंड थीक लोह, कोयला, अबरख, लाह आदि मूल्यवान् वस्तुक भण्डार। कलकत्ताक बंगाली ओ पटनाकमगही (बिहारी) धनपति शासक लोकनि सबहि एहि रत्नभूमिलेल व्याकुल। एखन ई बिहारीलोकनिक अधीन अछि। ई लोकनि एकरा छोड़य नहिं चाहै छथि। वंगाली लोकनिकें एकरा नेने बिना चैन नहिं होइ छनि।

बंगाली-लोकनि भाषाधार प्रान्तिक जे सिद्धान्त अछि तकर शरण लै छथि कारण ओ कहै छथि विवाद-क्षेत्रमे वङ्लाभाषीक संख्या अधिक अछि तें ओ बंगालक संग रहथु। बिहारी धनपति लोकनि भाषाधार प्रान्तिक नाम नहिं सुनय चाहै छथि कारण हुनक घर अछि मगध, भोजपुर वा मिथिलामे, सम्पत्ति पड़ै छनि झारखण्ड मे। भाषाधार प्रान्त भेलासँ झारखण्डक सम्पत्तिपर मगही, भोजपुरी वा मैथिल धनपतिक अधिकार डमाडोल भऽ जायत।

बंगाली लोकनिक मनोवृत्ति विचित्र अछि। ओ झारखण्डक खान क्षेत्र लेबालेल ततेक व्याकुल छथि कि ओइ हेतु सब सिद्धान्त बिसरि गेल छथि। नाम लैत छथि ओलोकनि भाषाधारप्रान्तिक परन्तु ई नहिं खयाल करै छथि कि

मानभूमि आदिक झगड़ा थीक सीमाक, भाषाधार प्रान्तिक नहिं। भाषाक आधारपर हुनकालोकनिकें बंगाल प्रान्त छनिहें। सीमा-विवादक निर्णय हयत समस्त भारतक भाषाधार प्रांत मे विभक्त भेलाक बाद। बंगाल ताबत धैर्य धरओ। एखन मिथिला, भोजपुर,झारखण्ड, बुन्देलखण्ड आदिक भाषाधार आन्दोलनमे योग दय भारतक नवीन विभाजनमे तत्पर होअओ। भाषा, भूरचना आदिक अनुसार जाहीखन भारतक विभाजन पूर्ण हयत कि सीमाक विवादपर विचारक अवसर आओत। समस्त भारतक भाषाधार विभाजन भेल नहिं तखन बंगालक सीमारेखा निश्चित हो ई नीति अत्यन्त धड़फड़ भरल अछि। एहिमे बंगाली लोकनि आन भारतीयक सहायता नहिं पौता।

वकील

समाजक नेता होइ अछि शिक्षित सम्पन्न वर्ग। शिक्षितमे छथि वकील, शिक्षक, पत्रकार आदि।

मानभूमिक आदिक झगंड़ामे बंगालक विरुद्ध बिहार विधानसभामे प्रस्ताव पासभेल अछि। एहि सभामे 330 में प्रायः आधासदस्य मिथिलाक छथि। सदस्य लोकनि कमबेस पढ़ल लिखल छथि। तथापि एते नहिं सोचल वा बूझल कि मान भूमिक झगड़ा बंगालओ झारखण्डक थीक, मिथिलाक नहिं। मिथिलावासी ओइ विषयपर केवल भारतीय दृष्टीयें देखथि। परन्तु आश्चर्य अछि एखनहुँ मिथिलाक अधिकांश शिक्षित अपनाकें बिहारी बुझै छथि, कहै छथि। ख्याल नहिं रखै छथि कि भाषा, भूरचना, शासनक सुविधा आदिकआधार पर बिहारक अस्तित्व नहिं रहत। बिहारक बनावटे भेल विजयपर। साढ़े सात सय वर्ष पूर्व मुसलमान लोकनि नालन्दा आदिक बौद्ध विहार पर कब्जा कयल तें ओतबक विजित क्षेत्रकें बिहार नाम देल। पश्चात् निकटक जेजे भूमि ओलोकनि जीतल तकरा बिहारमे शामिल कयल। मिथिला त चारिसय वर्षक बाद मोगलक शासन-कालमे बिहारमे परिगणित भेल। अंगरेज शासकलोकनि मोगलहिक व्यवस्थाकें मानि चलल। भारतक स्वराज्य सरकार विजेता मुसलमान ओ अंगरेजक पद्धतिकें मानि चलय ई पूर्वक कांग्रेस सिद्धान्तक दुःखद परिहास थीक।

एहि राजनीतिक परिहासमे वकील लोकनिक शिक्षित समुदाय सेहो बड़ उत्साहसँ शामिल भेल अछि। मिथिला मे अनेक ठामक बार एसोसियेसन अपनाकें

बिहारी कहि बंगालक विरोध कयलक अछि। मिथिलाक विधानसभासद् कांग्रेसक मातहत छथि। पटनाक कांग्रेस अछि मगधवासीक अधीन। तें हुनक भयभीत हयब स्वाभाविक। मिथिलाक बकील लोकनि ककर अधीन छथि कि धांय-धांय मगधक कांग्रेसी राजक हुकुम बजौने जाइ छथि?

चुनाव

भागलपुर पुर्णियाक चुनावमे आचार्य कृपालानी प्रजासोशलिस्ट पार्टीक उम्मीदवार छथि। कांग्रेस घोषणा केने छल हम कृपालानीजीक विरोध नहिं करब। पश्चात् दोसर सीटमे प्रजा-सोशलिस्टक विरोध देखि कांग्रेस दुनू वोट अपन बक्समे खसबयक हेतु लोकसँ आग्रह कयलक। श्री जयप्रकाश नारायण एहिसँ क्षुब्ध छथि। चुनावमे कांग्रेसक एहि दुर्नीतिक ओ खूब निन्दा कयल अछि।

गत आमचुनाव मे कांग्रेस एहिसँ बहुत बढ़ि दुर्नीतिक अवलम्बन केने छल-वोटरकें डराओल गेल, विरोधीकें लाठी, गरांस, बन्दूकसँ लैस हसेरी द्वारा पोलिंग बूथसँ भगाओल गेल। अफसर ओ छट्ठू वोटरकें घूस देल गेल, हरिजन वोटरकें तारी पिआओल गेल, बक्सातोड़ि वोटक संख्या घटाय बढ़ाय अनुकूल बनाओल गेल, गिनतीक बेर तीनकें तेरह, तेरहकें तीन कराओल गेल। एहि तरहें आचार्य कृपालानी, नरेन्द्रदेव, ज्ञानचन्द, खुशाल शाह आदि सन बड़-बड़ यशस्वी ओ प्रतिष्ठित नेता हराओल गेला। परन्तु जयप्रकाशजी तखन चुनाव पद्धतिक निन्दामे कोनो उत्साह नहिं देखाओल। प्रायः कांग्रेससँ मेलक अभिलाषामे एकरा उचित नहिं बूझल। एखन त कांग्रेसक गड़बड़ी घटल अछि कारण कांग्रेसी लोकनि स्वयंहु बहुत गोटय एहि वृत्ति कें अलाभकर मानि संयत भऽ गेल छथि, सरकारी किरानी, छोट अफसर आदि जाहि आशासँ बड़का चुनावमे कांग्रेसकें जितबयक अन्धाधुन्ध व्यवहार कयल से फलीभूत नहिं भेल तें आब धर्मक ध्यान करै छथि, वोटरलोकनिकं सेहो घूस ओ तारी क नशा किछु टूटल अछि, ओहो आब आंखि मीड़ि देखै छथि पाओल त किछु नहिं। सब कांग्रेसराज, कांग्रेस पार्टी दिससँ सजग भेल त जयप्रकाशजी अपन चैतन्य वाणी प्रकाश करै छथि। ई नेतृत्व नहिं छुच्छे स्वार्थ वृत्ति सन लगै अछि।

(25 मई 1953)



कश्मीर

शेख मुहम्मद अबदुल्लाक रुखि बदलल सन अछि। से स्वाभाविक। 1947 मे कश्मीरक जे स्थिति छल ताहिसँ एखन नीक अछि। छऽ वर्ष पूर्व जखन पाकिस्तान कश्मीर पर कब्ज़ा करयलेल हमला कयलक त ओकरा भारतक सहारा छोड़ि कोनो आन उपाय नहिं रहल। इंग्लैंड ओ अमेरिकाक ह्रदय पाकिस्तान दिस छले। एतय भारतक प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरूकें कश्मीरक प्रति पितृभूमिक हयबाक कारणें ममता ओ भारतीय राजवर्गकें क्षेत्रवृद्धिक खूब लोभ रहल। तें सब मिलि पाकिस्तानक विरुद्ध अबदुल्ला कें सहायता देल। पाकिस्तानक कमजोरी ओकरा हेतु शुभ भऽ गेल कारण ब्रिटेन तथा अमेरिकाक अभिलाषा रहल पाकिस्तान कें भारतक भय देखाय ओ भारतकें पाकिस्तानक संग भिड़ाय दुनूकें अपना अनुकूल राखी। ताहि निमित्त अप्रत्यक्षरूपें पाकिस्तानक समर्थन करय लागल। एम्हर कश्मीरमे अबदुल्ला भूमिक नवीन व्यवस्था द्वारा जनता के अनुकूल बनालेल। ब्रिटेन ओ अमेरिकाक आब इच्छा जे कश्मीर स्वतंत्र रहओ जाहिसँ ओकरा सभकें रूसक विरुद्ध ओतय षड्यन्त्र करयमे सुविधा हो। अबदुल्ला सेहो भारतीय पूँजीवादक प्रतिकूल रुखि देखि कश्मीरक स्वतन्त्रता दिस झुकला। बुजना जाइ अछि कश्मीर आब भारतसँ भिन्न भइये जायत।

भारतक शासकवर्ग एहिसँ सबक लेथु। रूसओ चीनमे सीमान्त प्रदेश सभ भिन्न जाति भिन्न धर्मक रहितहुँ केन्द्रक संग रहयलेल उत्सुक रहै अछि। ओ देखै अछि संग रहलहिसँ हमर भाषा, साहित्य ओ अर्थक उन्नति हयत। भारतमे उलटा हाल अछि। एतयक राजालोकनि प्रजाकें चूसि सिर्फ अपन सुख ओ वैभवकें बढ़बयमे लागल छथि। एहन स्थिति मे ईर्ष्या तथा द्वेषक बढ़ब स्वाभाविक। दिल्ली सरकार एवं ओकर शाखा सभक उपेक्षावृत्ति देखि प्रान्तसभ अपन-अपन बौद्धिक तथा आर्थिक विकास हेतु भिन्न ह्यबालेल तैयार अछि। भारत ओ पाकिस्तानक बटबारासँ पूर्व बंगाल स्वतंत्र बनबाक किछु प्रयास कयलक। आब फेर ओ प्रयास हयबालेल अछि। दक्षिणमे कते दिनसँ दिल्लीसँ मुक्त हयबाक आन्दोलन अछि।

केन्द्र विरोधी एहि आन्दोलन सभकें केवल संकीर्ण बुद्धि वा स्वार्थ वृत्ति कहने काज नहिं चलत। समस्त भारतकें एकसूत्रमे राखयलेल चीन ओ रूसक अर्थव्यवस्था लागू करय पड़त। जाहि व्यवस्था सँ प्रजा सुख नहिं पाओत तकर

कतबो गम्भीर विवेचन करू प्रतिष्ठा हयब असम्भव। फौज ओ पुलिसक बल सरकारकें चोर डाकूक शासन लेल भेटै अछि समाजकें दबबै लेल नहिं। जतय कतौ फौज ओ पुलिसक उपयोग जनताक विरुद्ध कयलगेल अछि ततय समय पाबि ओ फौज तथा पुलिस शासकवर्ग कें पछाड़ि जनताक राज कायम कयलक अछि। रूस ओ चीनक उदाहरण त आब पुरान पड़ल जाइ अछि। टटका हाल मिस्त्रदेशक देखू। एखन सम्हरैक बेर अछि। किछुदिनक बाद सब बेसम्हार भऽ जायत तथा देशमे से दुर्घट काल उपस्थित हयत जाहिमे गरीब प्रजाक संग शासक ओ धनी लोकनिक सब शानबान स्वाहा भऽ जायत।

कश्मीर

पाकिस्तानक खतरा कम होइतहि नेसनल कनफरेंसक नेतागणमे पद ओ प्रतिष्ठा हेतु इर्ष्या-द्वेष बढ़ि गेल। शेख अबदुल्ला जे हटाओल गेल छथि तकर प्रधान कारण थीक कश्मीरमे 'पावर' लेल आपसक संघर्ष। कहल गेल अछि अबदुल्ला एहि बीच बड़ गड़बड़ करय लागल छला– शासनमे पक्षपात, अमेरिकासँ मिलि कश्मीरकें भारतसँ भिन्न करयक प्रयास आदि। ई सब मानल। परन्तु एतबहि लेल अबदुल्ला सन सर्वोच्च जननेता प्रधानमन्त्रीक पदसँ 'डिसमिस' होथि, गिरफ्तार होथि से युक्ति पूर्ण नहिं बुझना जाइ अछि। भारतक प्रधानमन्त्री नेहरूओ शासनमे अत्यन्त पक्षपात करै छथि, जे केओ अंगरेजी राजमे अंगरेजसँ मिलि कांग्रेसक विरुद्ध देशक प्रति शत्रुता केने छल परन्तु राज बदलितहि नेहरूमे मिलिगेल ताहि सबकें पूर्वहुसँ उच्च पद, अधिक अधिकार दय देशकें पुनः लुटबाक सुविधा प्रदान कयल; अंगरेज जे हिनका भारतक राजपद देल तकर उपहारमे भारतकें ओ हुनक 'कामनवेल्थ' अर्थात् आधिपत्यमे राखि अयला। ताहि सब स नेहरू कहाँ अपदस्थ भेला, कहाँ गिरफ्तार भेला? कश्मीरक प्रति अबदुल्लाक जे व्यवहार भेल अछि से भारतक प्रति नेहरुक क्रियासँ हीन कतय अछि? कश्मीरक गरीब जनताकँ अबदुल्ला जे अधिकार ओ सुविधा देने छला तकर शतांशो भारतक जनताकें नेहरू दय सकला?

अबदुल्लाक दुर्गतिसँ नेहरू सबक लेथु। जनता हिनकहुसँ बड़ तीव्र गतियें विमुख भ रहल अछि, कांग्रेसक पार्टीमशीन नेहरूक प्रभावमे ने छल ने अछि। जाहि दिन पार्टीक सूत्रधारगण देखता कि नेहरूक पैरपर आब लाखक लाख लोक

खसब छोड़लक, ताही दिन हुनका पार्टी ओ गवर्नमेंट सबठाँसँ हटाओत। तकर प्रयास कय बेर भऽ गेल अछि। परन्तु कांग्रेसी लोकनि वोटमे नेहरूक उपयोगिता देखि थम्हि गेला।

पार्टी ओ जनतापर प्रभाव कायम राखयक पूर्ण प्रयास अबदुल्ला कयल। नेहरूओ कांग्रेस ओ भारतीय जनता पर प्रभाव राखय लेल पूर्ण यत्नशील छथि–भारत सेवक समाज नामक नवदल संगठित भेल अछि। कांग्रेस पार्टी ओ कांग्रेस सरकार सन प्रतिष्ठावाला संगठन यदि देशकें संग नहिं राखि सकल त एहि नवनव कनिया-पुतरासँ घर आंगन सम्हरत?

जमीन्दार

कांग्रेस, सोशलिस्ट, कम्यनिस्ट आदि पोलिटिकल पार्टी सभक बहुत दिनसँ यत्न छल जे जमींदारी उठय। अंगरेज यावत् राजा छल त थोमथाम लगबै छल कारण जमीन्दार, रजवाड़ा, व्यवसायी आदि धनपतिये छला भारतमे अंगरेजी राजक स्तम्भ। अंगरेज देशसँ गेल ओ कांग्रेसहु तकर बदला धनीवर्गक खूब पक्ष कयल। परन्तु गरीब जनताक संख्या अछि देशमे बहुत बेसी, ओकर माङ रहल शोषक वर्गक लोप करब। कांग्रेस बड़ तारबहटोर कयलक परन्तु लोकक रुखि देखि जमीन्दारी उठौलक। उठौलक की, अपना हाथ मे लेलक। पुरान जमीन्दार गेला, कांग्रेसी मिनिस्टर लोकनि नवीन जमीन्दार बनला। इच्छा विरुद्ध जे जमीन्दारीक प्रथा तोड़य पड़ल तें खौंझाय जनताकें पूर्वहुक जमीन्दार लोकनि सँ बेसी पेड़य लगला। आबजे स्थित अछि ताहिमे जमीन्दार लोकनि अपनामे बजै छथि सोशलिस्ट नङटबेसब बड़ उत्पात करै छला त आब लेथु, बुझथु। सोशलिस्ट लोकनि देखै छथि चौबेसँ छब्बे बनय चाहलतँ दूबे बनि गेलहुँ-पूर्वमे जनताकें जे कनेमने सुविधा छल ताहूसँ घटि गेल। सोशलिस्ट लोकनिक क्रोध कांग्रेसराजक प्रतितें उचिते।

जमीन्दारलोकनिक जमीन्दारी गेल ताहिसँ ओ कांग्रेसपर रंज नहिं छथि। ओ बुझै छथि-से ठीके-जे सोशलिस्ट सभ हल्ला नहिं करैत कांग्रेस जमींदारी नहिं लैत। बेचारे संगहि ई नहिं सोचै छथि जे सोशलिस्टक दोषें जमीन्दारी गेल सही परन्तु कांग्रेस ओकरा लय जमीन्दारक वा सोशलिस्टक वा जनताक की उपकार कयलक? जमीन्दार बुझै छथि कांग्रेस कम्पेन्सेसनहुक गप्प करै सोशलिस्ट दिससँ सेहो नदारद! केवल एतबे हिसाबमे रहै छथि कि सोशलिस्ट सभ ई लेत ओ लेत।

की की देत तकर लेखा नहिं। पड़ोस चीनमे जमीन्दार लोकनि सोशलिस्ट राजसँ जे संतुष्ट छथि ओ ओकरा सब तरहक सहयोग दै छथि तकर कारण हुनका लोकनिक सम्पत्ति किछु लेल गेल अछि जरुर ताहि बदलामे सुख सुविधाक अनेक सामग्री जुटाओल गेल अछि। अपना देशक ज़मीन्दारकें धन अछि, मकान अछि, मोटर अछि-परन्तु समस्त शहर यदि गन्दा अछि, सड़क नीक नहिं अछि त बाबू शुद्ध वायु कतय लेता, मोटरपर चलयमे आराम कोना पौता, साधनहीन जनता यदि नीक अन्न, फल, दूध, मक्खन नहि उत्पन्न करत तँ धनपति कें खेबा-पीबाक सुख कतय भेटत? भारतक उच्चवर्ग कें धन, मकान ओ सुख लेल की एतबे वस्तु चाही? यदि सोशलिस्टहिक राजमे सुखक और सब वस्तु भेटय त ओकर संग चलयमे तारतम्य किअय? सोशलिस्ट प्रबल रहत त अनिच्छा रहितहु कांग्रेस ओकर अनुकूल चलबे करत यथा जमीन्दारी उठवयमे प्रयास रत अछि। तखन सोशलिस्ट सोशलिस्टहिक अनुकूल एखनहि किअय नहिं चली जाहिसँ देशक शोषक नहिं कल्याणपुरुषमे गिनती हो?

(16 जुलाई 1953)

❑❑

अखण्ड भारत

कश्मीरक बटबारा हयब आब निश्चित जकाँ अछि। दक्षिणक जम्मू ओ पूर्वोत्तरक लद्दाख भारतमे तथा पश्चिमक आजाद कश्मीरवाला भाग पाकिस्तानमे जायत, मध्यक श्रीनगर क्षेत्र स्वतंत्र देश बनि रहत।

अखण्ड भारतक लक्ष्यवाला लोकनि एहिसँ बड़ चिन्तित छथि। हुनक ई चिन्ता भारतमे कोनो नवीन बात नहिं। एहि देशक सब युगमे एकताक कल्पना ओ प्रयास भेल अछि-हिमालयसँ कुमारिका तथा कामाख्यासँ द्वारिकातक एक राष्ट्र; एक धर्म हो। एखनतक ई प्रयास असफल रहल अछि। कारण सर्वे भवन्तु सुखिनः क जप तँ सुनल अछि परन्तु शासक क्रिया एहिसँ बड़ भिन्न रहल अछि, तें सब क्षेत्र सब वर्गक आस्था प्राप्त करब राजाकें कठिन भेल अछि। एखनहु सैह स्थिति अछि। दिल्ली, पटना आदिक राजालोकनि सतत देशक एकता ओ सर्वसेवाक वचन त कहै छथि किन्तु आवरणमे अपन वर्ग, अपन क्षेत्रक लाभ लेल अन्य वर्ग, अन्य क्षेत्रक अनिष्ट कय दैत छथि। एहन राजामे ओकर ऐक्य वा कल्याणक वचनमे प्रजाक निष्ठा हयब असम्भव। एही निष्ठाक अभावमे त्रिवांकुरक दीवान श्री रामस्वामी अय्यर अखण्ड भारतमें त्रिवांकुरक रहबाक विरोध कयने छलाह। तखन ओ सफल नहिं भेला। कारण तहिकाल कांग्रेसमे लोकक निष्ठा छल ओ रामस्वामीक विरोध कयल। त्रिवांकुर भारतीय संघमे शामिल भेल।

कांग्रेसक राज आबलोक आठ वर्ष तक देखि लेलक। कल्याणक जे आशा छलै सब लुप्तप्राय अछि। देश आब एकताक मोल बुझब फेर छोड़य लागल अछि। कश्मीर हटत, बंगाल-दुनू, पूर्व ओ पश्चिम-मिलि स्वतंत्र हयत, दक्षिण भारत-आन्ध्र, तमिलनाडू, केरल, कर्णाटक ओ महाराष्ट्र-फूट हयत। उत्तरमे हिन्दी वालाके जुल्म सँ मिथिला, झारखण्ड, मगध, भोजपुर, अवध, बघेलखण्ड छत्तीसगढ़, बुन्देलखण्ड आदि अलग हयबाक विचारमे अछि। दिल्लीक संग तखन के रहत? कियै रहत? कुरुपाण्डव युगसँ आइघटि दिल्लीसँ अन्य प्रान्त आक्रमणे अपहरणे प्राप्त कयलक अछि, सेवा वा कल्याण नहिं। ऐक्य कथीलेल? बहिया बनय लेल? वा साम्य ओ साहाय्य लेल? एखन त देखै छी मिथिलासन क्षेत्र पटना वा दिल्लीक राजालोकनिक अधीन अछि केवल हुनक सेवा टहल हेतु, अपन उन्नति हेतु नहि, टहलू बनै अछि ओ जे असहाय ओ बुद्धिहीन अछि। मिथिला ओ एहितरहक अन्य दलित क्षेत्र सब दिन असहाय ओ बुद्धिहीने रहत?

दिल्लीश्वरक द्वारा अपन अर्थ ओ मानक अपहरण देखैत रहत, अपन मूढ़तापर हुनक वाग्वाने सहैत रहत? बिलारिसन जीव सब दाव हारि आत्मरक्षालेल आक्रमणकारीक गरदनि मोचरै हेतु कूदि पड़ै अछि। अधीर जनसमूहक विरोध और कते विकट हयत!

(13 जुलाई, 1953)

❑❑

कोशी

सरकारक कोन दोष?

छ वर्ष तक अपन दुर्वृतिक परिचय देलाक बाद जखन 1951-52मे कांग्रेस चुनावमे ठाढ़ भेल त जनता ओकरा बक्समे वोट उझलि देल। कोशी क्षेत्रक लोकक उत्साहत कांग्रेसक पक्ष मे कहल ने जाय। कांग्रेस फेर देशक राजा भेल। बुझलक देशकें किछु करू, कतबो उलाउ, पकाउ अन्तमे किछु कौर घोंट दय ओकर संग लय लिअऽ।

कोशीक्षेत्रमे एखन त्राहि मचल अछि। बाढ़िमे धानसब डुबि गेल, माल जाल घर भसिआइ अछि। लोक मचान पर कोनो तरहें प्राणरक्षा कय रहल अछि। कतहुजाइ लेल नाव नहिं, खयबाक अन्न नहिं, रौदीक दबाइ लेल कोनो इंतजाम नहिं।

सब भरोस केने छल कोशीमे बान्ह हयत, नहर हयत, बिजली बहरायत त लोकक दुःख मेटत।

आब सुनै छी बान्ह, नहर, बिजली आदि सबहक गप्प फेर टारि देल गेल।

पटना ओ दिल्लीक कांग्रेस सरकार ई खेल करितहि रहत। जाधरि कोशीवासी लोकनिक अक्ल बदलत नहिं ताधरि हुनक उद्धार अरम्भव। ओ कहै छथि दीन। दीन जन बुद्धिमानो होत ओकर मोजर सम्पन्नक ओतय नहिं। एहन जन जँ बुद्धिहीन हो त सम्पन्न ओ राजाक ओतय ओकर सब तरहें उपेक्षा निश्चिते बुझी। बुद्धिहीनक सबसँ पैध लक्षण थीक ओकर अहंकार, अपन बुद्धिकें निकट जनक बुद्धि सँ बेसी लगायब, ओकरा मोजर नहिं देब, अपनादोषें यदि अनिष्ट हो त से नहिं मानि दोष मढ़ि देब बुधियारक माथें।

कोशीवासीसँ गप्प करू, सरकारक प्रसंग जिज्ञासा करू त बड़-बड़ ज्ञानक कथासब सुनयता। दुष्ट सरकारक विरुद्ध संगठन करय कहू, ओकरा संग संघर्ष ठानय कहू त तेहन वेदान्तक रूप धारण करता कि अन्दाज नहिं हयत जे विपत्तिक पहिले झोंकमे बाबू किकियाय लगता।

कोशीवासी बड़ कष्ट भोगल, एते कहुना सीखथु जे राजा हो वा प्रजा शक्तिहीनक सम्मान नहिं होइ छै। शक्तिक हेतुहिं संगठनक आवश्यकता अछि। संगठन ओ संघर्षकें मूलमन्त्र बनबथु ताहीसँ जे किछु कल्याणक काज भऽ सकत।अन्यथा अरण्यरोदनमे लागल रहता।

(27 जुलाई, 1953)



बाढ़ि

समस्त मिथिला एकहि बेर डूबि गेलअछि। गण्डक, वाग्मती, कमला, कोशी ओ अन्यान्य नदीसब अचानक संगहि उछाल दय हजारो गाँव कें जलमग्न कय देलक अछि।

सर्वत्र हाहाकार अछि। जे दृश्य पहिने केवल कोशी क्षेत्रमे देखै छलहुँ से एहिबेर कमला, वाग्मती, गण्डक आदि सबठां व्याप्त अछि। कोशीनिवासी साल साल एहि विपत्तिमे रहि किछु अभ्यस्त जकां भऽ गेल छथि-नाव आदिक इन्तजाम पहिनहि सँ कय रखै छथि। कमला, वाग्मती, गण्डक आदिक लोक एकाएक एहन भीषण बाढ़िमे पड़ि गेलासँ बिल्कुक असहाय छथि। ने नावक कतहु पता, ने अन्नवस्त्रक, ने रोगीक हेतु औषध-पथ्यक। सरकारी हाकिम लोकनि दौड़धूप करै छथि, परन्तु बेचारे कें ने साधन, ने ओकरा जुटयबाक सामर्थ्य वा उत्साह। ऊपरसँ नीचा जकरा जेना हुकुम आयल, आंखि मुनि पालन करैत गेलहुँ सैह भेल सरकारी अमलाक एकमात्र क्रिया। अपन बुद्धिबल वा कौशलसँ संकट ग्रस्त लोकक सहायता करब एहि तरहक प्रवृत्तिक सर्वथा अभाव अछि।

दरभंगा मेडिकल कालेजक शिक्षक डा० हरि प्रसाद आदिक दुःखितक प्रति करुणा ओ सेवाभाव देखि किछु सान्त्वना भेल। बाढ़िमे पड़ल लोकक मध्य वेचारेकें दबाइ बटैमे व्यस्त देखल, पथ्यक सामग्रीक अभाव हिनका विकल केने छल, व्यग्र छथि कि कोना कोनो संस्था एहन ठाढ़ हो जे एहि सब वस्तुक संग्रह कय, स्वयंसेवक जुटाय लोकक मददि लेल स्थान स्थान पर पहुँचि जाय। हुनक ई अभिलाषा ओ विकलता कते उदात्त अछि? परन्तु के ई देखै अछि, सुनै अछि? जकरालेल ई अश्रुपात होइ अछि वा साहाय्य संग्रह हयत सेहो बुझनिहार नहिं- सेवक कें स्वार्थी कहि हुनक भर्त्सना करता, वहिष्कार करता, धूर्त ओ पाखण्डीकें परमार्थी भूझि, कहि आप्त बनाय रखता, हुनक सम्मान करता। एहन स्थितिमे उदारवृत्ति कुण्ठित भऽ जाइ अछि। सेवाक भाव रहितहु कते व्यक्ति क्रियामे नहिं पड़ै छथि। एहिसँ गुणवानक गुण निरर्थक होइ अछि तथा समाज संकटमे सहायतासँ वंचित रहै अछि।

अपन समाजक अवस्था एखन अत्यन्त पतित अछि। एहिसँ एकर उद्धार हयब कठिन अछि। परन्तु मनस्वी माया हाथ दय बैसि कोना रहत? ओतँ पीड़ासँ मुक्ति लेल संघर्ष करबे करता—एकसर हो वा संघबद्ध। तखन फल। से विधाताक हाथ।

10 अगस्त 1953



कांग्रेस

जवाहरलालजी बड़ यत्न मे छथि कि कांग्रेस फेर सबल होअय, देशपर राज कायम राखय। परन्तु ताहि मे हुनक सफलताक आशा कम देखै छी।

बिहारिक कांग्रेसमे नहिं, सर्वत्र-बंगाल, मद्रास, उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान आदि-धन ओ पद हेतु अखण्ड संघर्ष अछि। पूर्वक सिद्धान्त-समाजक कल्याण - लुप्त भऽ गेल, केवल ओकर नाम लेल जाइ अछि जनताक वोट लेबाक हेतु। विजित नगरमे विजयी सेना करितहिं जेना लूटि मचबै अछि तहिना कांग्रेसी लोकनि खाउं खाउं कय जहाँ तहाँ दौड़ि रहल छथि, नेता होथि वा कार्यकर्त्ता सबहक एके हाल।

कांग्रेसक एहन दुर्गति हयब स्वाभाविक। प्रकृतिक नियमक अनुकूले एकर दशा भेल अछि। एकरा आबसे संक्रामक महाव्याधि ग्रसि नेने छै कि जे बचबै लेल लग जायत सैह ओकर चंगुलमे पड़ि छटपटाय मरत। बुधियार होअयसे एकरा घरसँ बहार कय अपने कात भऽ जान बचबय। जवाहरलाल जी जीवनमे बड़ प्रतिष्ठा प्राप्त कयल, आब वृद्धावस्थामे दुर्दशा लिखल छनि तें असाध्य साधन मे लागल छथि।

कम्युनिस्ट

रूसक नेता लोकनिक प्रसंग जे 'मिथिला' मे किछु लिखल गेल ताहि हेतु कम्युनिस्ट बन्धुलोकनि रंजछथि। हुनक इच्छा जे सहयोगी व्यक्ति सतत पार्टी 'लाइन'क पक्षेटा धरथु, विपक्ष नहिं। ई हयब असंभव। बीस वर्षसँ जे कम्युनिस्ट पार्टीक सहायक रहल अछि, कतेक विरोधक छोट वा पैघ प्रसंग अयलहुपर पार्टीक हितक कारणें चुप रहि गेल अछि, ओकरा प्रति पार्टीक रुखि की रहलै अछि? यदि दुर्बल अछि त तिरस्कार, यदि किछु बल छै त ईर्ष्या ओ बहिष्कार। एहन स्थितिमे केवल सहकारीहिक दुर्गति नहिं पार्टीक उन्नति मे बाधा होइ अछि।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक वयस तीस वर्षस ऊपर भेल। पार्टीकें अपन संगठनक पद्धतिक बड़ गौरव छै। परन्तु बड़ बुधियार छी त तीस वर्षमे की कयल अछि? आपसक घोंघाउजमे तीन अबै अछि त कहुखन तीन, कहुखन दू, कहुखन चारि घसकै अछि। फलतः पार्टीक उन्नतिक पाछुये लागल अवनति चलै अछि।

आगूक गति बड़ मन्द अछि। पार्टी यदि चीनक कम्युनिस्ट पार्टी जकाँ मानो कि बाहरहुक सहायक वर्गस धन ओ जनक संग संग बुद्धिहुक सहायता भेटि सकै अछि त देशमे एकर संस्था ओ प्रभाव बहुत जल्दी बढ़त। सहायक वर्गकें यदि सतत मोटैते बना राखय चाहबै त ओकर धैर्य ओ नम्रता कते कालधरि स्थिर रहि सकत? ईर्ष्या ओ अहंकारक कारणें कम्युनिस्ट नेतालोकनि अनेक अत्यन्त उपयोगी व्यक्तिक ओ समूहक सहयोगसँ वंचित भऽ गेल छथि। आगू फेर एहन दुर्घटना नहिं हो ताहि दिस ओ लोकनि कहाँधरि ध्यान दै छथि।

प्रजासोशलिस्ट

आंध्रक एक चुनावमे प्रजासोसलिस्ट कांग्रेसक संग मिलि कम्युनिस्ट पार्टीक विरोध कऽ रहल अछि। बम्बइक हड़तालहु मे प्रजासोशलिस्ट ओ कांग्रेस मिलि कम्युनिस्ट पार्टीक विरोध कयलक अछि।

भारतमे क्रान्तिक विश्रृंखलताक ई चरम स्थिति भेल। एकर कारण के? प्रजासोशलिस्ट वा कम्युनिस्ट? प्रजा सोशलिस्ट कम्युनिस्टसँ खौंझाय क्रांतिवादक प्रधान शत्रु कांग्रेससँ संग करय से निश्चय ओकर मूढ़ता थीक। अपन विरोधी कम्युनिस्ट कें पछाड़यलेल शत्रु कांग्रेसमे अपनाकें मेटाय दी से कोन बुद्धिमत्ता? परन्तु कम्युनिस्ट पार्टीहु समस्त क्रांतिवादी कें एक सूत्र मे बान्हयक हल्ला करितहु क्रिया एहन-एहन करैत आयल अछि जाहिसँ लोक ओकरासँ भड़कैत रहल अछि। ओकरा प्रति जे आरोप अछि कि सबसँ सहायता लय केवल अपनाकें ओ पदस्थ ओ प्रतिष्ठित करय चाहै अछि से सर्वथा निराधार नहिं। हैदराबादक म्युनिसिपल चुमावमे कांग्रेस खूब कसि कय जीतल अछि। कम्युनिस्ट ओ प्रजासोशलिस्ट दुनू आपसमे लड़ि कांग्रेस कें प्रतिष्ठित कयल अछि। कम्युनिस्ट, प्रजासोशलिस्ट आदि पार्टीक ई पद्धति रहल त भारतमे क्रांतिवाद कहिया विजयी हयत?

कम्युनिस्ट लोकनि व्यवहारमे कने उस्तादी कम करथु, जेना तेना प्रजासोशलिस्ट आदि रूसल संगीकें कांग्रेस डाइनक घरसँ बौंसि फिराय आनथु ताही सँ हुनक बुधियारी साबित हयत ओ सबल भऽ देशकें कांग्रेसक चाण्डालवृत्तिसँ बचा सकता।

17 अगस्त 1953



चन्द्रधारी कालेज

बीस सौ सँ ऊपर विद्यार्थी एखन एहि कालेजमे अछि ताहिमे बीसोटा संयत ओ अध्ययनशील भेटब मुश्किल। कालेज जाउ तँ उच्छृंखलताक जंगल बुझना जायत। बगलहिक टाउनहालमे आम सभा आदि होइ अछि जाहिमे अपढ़ दरिद्र लोकसभक-रिक्शावाला, बीड़ी वाला पान-वाला आदिक-बाहुल्य रहै छै। परंच ताहू ठाम एखन तक सभामे आगत स्त्रीगनक प्रति कोनो असंयत आचरण देखयमे नहि आयल अछि। कालेजमे देखै छी क्लासमे लड़का लोकनिक उपद्रवें अल्पसंख्यक लड़की लोकनिक बैसब कठिन छै। बात-बातमे हल्ला, बात-बातमे पिहकारी। एकसर भेटल तँ वेश शुद्ध बुद्ध, जेर पड़ितहिं उन्मत्त। ई पशुवृत्ति एतय एते प्रबल कियै?

छात्र लोकनिक दोष अवश्य। ओलोकनि स्कूलक विद्यार्थी जकाँ नबालिग नहिं। तथापि परिपक्व बुद्धि ओ आचरण हयबामे तँ देरी छनिएँ। ओतँ एतय विद्या ओ सदाचरण सिखयक हेतुएँहि अबै छथि। से कहाँ तक सिखै छथि?

कहाँ सँ सिखता? किनकासँ? सिखौनिहार लोकनिक संख्या अछि पचहत्तरि। अपने जनै छियनि? एहिमे अधिकांश एहने छथि जिनक जीवनक सर्वोपरि लक्ष्य छल वा अछि जेना तेना डिपटी बा सब डिपटी भय दरमाहा ओ बाइली आमदसँ यथेष्ट टाका कमाइ ओ औजमौजसँ रही। से आशा पूर्ण नहिं भेलनि तँ सेकण्ड क्लाश डिगरीक बलपर कालेजमे गुरु भ गेला। ओ स्वयं जखन छात्र छला तँ संयम, अध्ययनसँ कम सरोकार रखै छला। इम्तहान पास करै छला 'इम्पौर्टेण्ट' हि रटिकयँ, पोथी पढ़ि नहिं। पटना कालेजमे पढ़ै छल हयता तँ अपनहुँ कहियो अवश्ये कोनो छात्रीकें उपद्रव कयनहि हयथिन बेचारे गुरु तखन अपने जेहन छथि तेहन शिष्य बनौने छथि।

ई पचास पचपन पंचमकारी गुरु लोकनि यदि एहि निर्धन,सब तरहें दुर्गत समाजक दू हजार होनहार युवककें दुष्टे बनयबामे प्रवृत्त होथितँ साढ़े सतरह लाख टाकाक वार्षिक क्षतियेटा नहिं एहि समाजक चौपट हयबो निकट भविष्यमे निश्चिते। फेर एहि दुर्घटनासँ उद्धार? 'उत्तिष्ठत, जाग्रत' कहैत कहैत तँ मुँह दुखायल। 'प्राप्य वरान्नि बोधत' कहू तँ एक जेर बी०ए०, एम०ए० थर्ड क्लास, सेकण्ड क्लास, गोटेक फस्टो कलास देखओता, कहता एहि सँ बढ़ि के?

नवीनशिक्षा

मधुबनीक 'नई तालिम विद्यालय' 1950 मे स्थापित भेल। गांधीजीक 'बेसिक' पद्धतिपर शिक्षा देल जाइ छै। 'बेसिक' प्रणाली मोण्टेसरी आदिक प्रणालीहिक समान अछि। ई शिक्षापद्धति एही देशक हेतु सिर्फ नहिं समस्त संसारक हेतु उपयुक्त अछि ओ सब सभ्यदेश्मे एखन चलै अछि। अपना देशमे ई पद्धति शुरु भेल चौदह वर्ष पूर्व परन्तु एखन धरि सरकारक उदासीनताक कारणें कोनो खास प्रगति नहिं भेल अछि़।

मझौलिया आदि आन विद्यालयक समान मधुबनीहुक शिक्षाभवन बड़ दुःस्थितिमे अछि। एकर उद्घाटन कयने छलाह प्रायः बिहारक वर्त्तमान शिक्षामंत्री स्वयं। परन्तु एखनतक सरकारसें एकरा एको पाइक मददि नहिं भेटलै अछि। आर्थिक त्रुटिये योग्य शिक्षक राखब कठिन। एखन जे शिक्षक लोकनि छथि से शुद्ध,सज्जन ओ सेवाभाव युक्त। परन्तु शास्त्रीय ज्ञानमे दुर्बल। एहि ज्ञानक अभाव वा त्रुटिमे आत्मबल क्षीण रहब स्वाभाविक ओ अवश्यम्भावी। साधारणक क्रियामे पदपद पर ओलोकनि सशंकित रहैत छथि, 'बेसिक'क बाहरी आचार्य लोकनि कहूँ रंज ने भय जाइथि। एकर सबसें प्रबल प्रमाण ओ लोकनि बालक बालिकाकें अपन मातृभाषा मैथिली मे पढ़ायब सर्वथा वर्जित कयने छथि। टेल्ह सभ आपसमे खाइत खेलाइत वा अन्यकाल मैथिलीमे गप्प करत, परन्तु क्लासमे ओ शिक्षकक संग दिल्ली-बुलन्द शहरक भाषा हिन्दीमे। एहिमे ओकरो लोकनिक दशा बेश दयनीय देखना गेल। मातृभाषा मैथिलीक अभ्यास करब तँ दूर ओहिमे बाजबो अनुचित मानि छोड़बक कोशिश होइत देखल। पुस्तकालयमे कइ सौ किताबमे मैथिलीक छल सिर्फ एक गोट। मातृभाषाकें एहि रूपें बहिष्कार कय नेनालोकनिक पढ़बा-लिखबा ओ चरित्र गठनक आयोजन हयब असंभव। समाजक आनहि क्षेत्र जकाँ शिक्षहु मे ई अस्वभाविक गति कतेक दिन चलत? संध्याकाल सामूहिक प्रार्थना देखल। संस्कृतक पद छल, हिन्दीक पद छल, मैथिलीक एकोटा नहिं। ई ककर दोष? सरकारक? ओ एखन धरि कैंचानहिं देलकनि अछि तें व्यवस्थहुमे कोनो हस्तक्षेप नहि केलकनि अछि। शिक्षक लोकनिहि सर्वोपरि छथि। प्रधान ओ अन्य अधिकांशक मातृभाषा मैथिलीये थिकनि। विद्यालयमे तें भाषा सम्बन्धक ई भ्रष्टाचारक कारण शिक्षक लोकनिहिक अयोग्यता, सरकारक वा अमैथिली भाषीक दुष्टता नहिं। नेनालोकनिक शरीर वेश स्वस्थ आ आचरण खूब शिष्ट नहिं बुझना गेल। सफाइक अवहेलना देखल। मलयमे देशभक्त

लोकनिकें दबबै लेल अंगरेजक हुकुम पर नेपालक गुरखा फौज भर्ती करबै छथि!

हालहि राष्ट्रसंघक अध्यक्ष पदक चुनाव भेल। उम्मीदवार छलाह दू गोटय- कनाडाक विदेश विभागक मंत्री लेस्टर पियर्सन ओ भारतक प्रधान प्रतिनिधि जवाहरलाल जीक सहोदर बहिन श्री विजयलक्ष्मी पण्डित। जीतला पियर्सन। हुनका वोट अयलनि 51 ओ विजयलक्ष्मी कें 4!

ई सब कथीक प्रमाण थीक? विदेशमे भारतक प्रतिष्ठा वा अप्रतिष्ठाक?

देशक विषयमे झूठ कहब कठिन छैक। दुर्दशा सभक आंखिक समक्ष छै। दूर देशक कथा तँ कमे गोटय जनै छथि। ताहूमे अधिकांश कांग्रेसी लोकनि मालिक लोकनिक समांगे वा अपेक्षिते रहै छथि। एक आध फुटकरबा रहलासँ हुनकहु कर-घोंट दय सरकार मिलाइये लै अछि। गोटेक जे सत्यक जिद्द धेलनि तँ हुनका ऊपर दुर्दिनक भूत। तखन विदेश मे भारतक ओ एहिठामक नेता लोकनिक मखौल होइ अछि तकर भेद के खोलय?

कहब विदेशी लोकनि जँ एहन प्रबल छथि कि नेहरू ओ कांग्रेसकें मोजर नहिं दै छथि तँ से ओ लोकनि खुलिकय कियैक नहिं बजै छथि? डर हुनका लोकनि कें नेहरू वा कांग्रेसक नहिं, डर होइ छनि एहि देशक पैंतीस करोड़ जनताक जे अंगरेजक सन प्रबल राजकें मेटौलक। ओलोकनि बुझै छथि भारतक कोटिशः लोक नेहरू ओ कांग्रेसक अन्धभक्त अछि। ओकर स्पष्ट उपेक्षा केला सँ भारतक जनता रुष्ट भऽ जायत। तें हिनकालोकनि कें बातै चितै लटपटौने रहै छथि।

15 दिसम्बर 1952

❑❑

पटना विश्वविद्यालय

वाइस चांसलर डॉ० भाल इस्तीफा दय देल। कारण सुनल कहै छथि अपन अस्वस्थता परंच बहुतोक कहब छनि हुनक पदत्यागक असल कारण आन थीक। पटना विश्वविद्यालय गुटबन्दीक अखाड़ा बनि गेल अछि। शिक्षक लोकनि पद ओ टाकालेल सुनैछी कोनो कर्म उठा नहि रखने छथि। ताहि सबसँ कहाँ दऽ भाल साहेब तंगभऽपड़ा गेला। धुरफन्दावला शिक्षक, सरकारी अफसर ओ कांग्रेसी मालिक लोकनि से नाचने लगौने रहै छलनि जे हिनक कोनो बाते नहिं चलै छल। बेचारे देखलनि विश्वविद्यालयमे काज किछु भइये नहिं रहलै अछि, तखन कहियो जँ जनता एहि विषयमे सजग हयत ओ कैफियत तलब करत तँ सब पापी मिलि हमरे दोष लगाय, सजा दय अपने पार भय जायत। हम परदेशी, केओ एक शब्द पक्षमे कहनिहार नहिं। ताहि सबसँ पहिनहिं कात भय जाइ।

एहि दुर्घटनासँ पटना विश्वविद्यालयक कोनो विशेष अपकीर्ति हुअय से ठीक नहिं। एहन गुटबन्दी ओही ठामटा नहिं, नीचासँ ऊपर तक-गामक प्राइमरी स्कूलसँ विश्वविद्यालय तक-सर्वत्र व्याप्त भय गेल अछि। शिक्षा विभागक भ्रष्टाचार समस्त शासन विभाग-ग्राम सभासँ पटना ओ दिल्लीक राजसभातक भ्रष्टाचारक प्रतिबिंब मात्र थीक। बिहार विधान सभामे जखन विश्वविद्यालय विषयक बिल उपस्थित छल ताही खन गोलैसी शुरू भेल। बहुतोक विचार ओ आग्रह छल भाषा, संस्कृति ओ जनसंख्याक आधारपर मिथिला, भोजपुर, मगध ओ झारखण्ड क्षेत्रमे अलग-अलग विश्वविद्याय स्थापना हो। पटनिया बाबूलोकनि देखलनि एहिसँ त मिथिला आदिहुक जहिं-तहिं लोक बुधियार भय हमरालोकनिक बराबरि करय लागत कहुना घिरताघीन कय दू विश्वविद्यालय कायम कयल ओ दुनूक गद्दी राखल पटनहिमे। सरकारी गद्दी पटना, व्यापारी गद्दी पटना! शिक्षा आदि सब वस्तुक गद्दी पटनहि। तैयो पटना दिन-दिन गलले जाइ अछि। तरल खाय गलल जायवाला बात भय रहलनि अछि। लूटिकाल लुटिहारा दलमे जे मेल रहै छै से बटवारा काल नहिं। पटनावाला मिथिला आदिक शासन लूटल, पद लूटल, शिक्षा लूटल। आब बंटबालेल मारि शुरु भेल छनि।

शासनमे चरित्रहीन व्यक्ति सभक प्रवेश सँ शिक्षा क्षेत्रहुमे ओहने व्यक्तिक प्रवेश भेल। सेक्रेटारियट मे कांग्रेसी लोकनि जहाँ अंगरेजक मुंहलगुआ चिरत्रहीन, नृशंस, देशद्रोही आइ०सी०एस० सभक पांलग्गी पौलनि ओ हुनका हाथ सभ

भार दय अपने बादशाह जहाँगीर जकाँ हुनका संग भय मग्न भेला कि यत्रतत्र अनर्थ होमय लागल। विश्वविद्यालयक कर्णधार रहला यैह आइ०सी०एस० आदिक लोक। बस प्रोफेसर आदिमे बहाल होमय लागल एहने व्यक्ति जे 1920-22, 30-32 वा 42-44 मे छात्रावस्था काल देशभक्तक विरुद्ध पुलिसक खुफियागिरी कय सरकारी दरबारमे खरखाही बनबै छल। ओ सब आदतसँ लाचार अछि। भ्रष्ट वृत्ति ओकर संस्कारहिमे छै। यदि कोनो कारणें मन्द पड़य लगतै तँ सेक्रटारियटक आइ०सी०एस० हाकिम ओ कांग्रेसी मालिक ओकर ओहि वृत्तिकें तुरतहि जाग्रत कय देथिन।

पटनाहिक विश्वविद्यालय केवल नहिं, प्रान्तक जाहि कोनो कालेजमे जाउ देखब चरित्रहीन व्यक्ति सभक बहुमत। केओ जँ सिद्धान्तवादी शिक्षाशास्त्री समाजसेवी ओतय धोखासँ पहुँचला ओ किछु सद्विचार वा सदाचरण व्यक्त कयलनि तँ हुनका चार्वाक्पन्थी लोकनि पिहकारिये पर उड़ाय देथिन। बेचारे जँ जीविका वा सेवासिद्धान्तक कारणे हिनकालोकनिक सब उद्दण्डवृत्ति सहलनि तँ ओकर कतहु लेखा बड़ विरले होइ अछि। ताहिसँ चरित्रवान् लोकनिक उत्साह घटि रहलै अछि, ओकर संख्या कम भय रहलै अछि। फलतः युवक वर्ग अनाचारमे धांयधांय प्रविष्ट भय रहल अछि। समाजक भविष्यक विषयमे भयानक आशंका उठि रहल अछि।

एकर प्रतिकार? कांग्रेस सरकार किछु करैत, से तँ एहि दुराचारक मार्ग खोलबे कयलक अछि। तखन समाज स्वयं जागय ताहीखन उद्धार अछि। नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।

9 फरवरी 1953

□□

वसंत

एहि वर्षक जाड़ बेस दुःखद छल। कतेक असहाय व्यक्ति कठोर शीतमे कठुआय मरि गेल। बसन्तक आरम्भ तिथि माघशुक्ल पंचमी ओ तकर पश्चात खूब सर्दी पड़ल। तथापि बसन्तक उत्सव नहिं छूटल। ई हर्ष-विषाद दुहूक विषय। 'विपदि धैर्यम्' बड़ बेस। उत्साह और नीक। परंच आनन्द गानक से उच्चस्वर नहिं हो कि लगहुक आर्त्तक्रन्दन नहिं सुनि पड़य।

लहेरियासराय स्टेशन सँ कचहरी चौक जयबाकाल सड़कक काते-काते देखने हयब अन्नहीन, वस्त्रहीन ओ गृहहीनक एक दीर्घ पंक्ति जकां-करुण, हृदयद्रावक स्वरें भिक्षाक आयास करैत। कतहु कोनो गाछ पर कोकिलहुक शब्द सुनि पड़ै अछि। कचहरी वा बाजारक कातमे मग्न अबै जायवाला लोककें ने दुःखितक आर्तस्वरक ध्यान, ने कोकिलक सुन्दर शब्दक स्वाद। अनासक्त, निर्मम जकाँ अपन काजक हेतु धांय-धांय बढ़ि रहल अछि। स्वकार्यमे उत्साह बड़ नीक। परंच समाजक दुःख ओ प्रकृतिक सुखक प्रति ममत्वहीन हयब कतेक अशोभनीय!

अपन समाज बड़ प्राचीन अछि। पाँच हजार बर्षक जीवनमे ई कतेक उदय-प्रलय, आनन्द व्यथा देखलक अछि। कतेक काल अज्ञानदशामे कष्ट पौलक, ज्ञानक संचय कय सुख प्राप्त कयलक। ज्ञान-अज्ञानक, सुख-दुःखक एहन अवछिन्न, सनातन पद्धति क्रम ठांव भेटत।

पशु वृत्तिक संयम अपना समाजमे आइ नहिं, छऽ हजार वर्ष पूर्वहि शुरु भेल। अपनालोकनिक पूर्वज ऋषिगण सूर्य देवसँ गायत्री छन्दमे ज्ञानक, बुद्धिक याचना कयल, 'धियोजोनः प्रचोदयात्'। धन ओ पुत्रक सङ ज्ञानहुक अभिलाषा सतत वर्त्तमान रहल। पाँच हजार वर्ष पूर्व मिथिलामे 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' क सिद्धान्त प्रचलित छल, 'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय', प्रजाक प्रार्थना छल। विपत्तिक सागरमे पड़ल देश एखनहु एहि दिव्य प्रयासकें धयने अछि। यत्र तत्र पथसँ विचलित होइ अछि, कष्ट पबै अछि, तथापि सम्हरि उठि चलै अछि। 'ऊपर पहाड़ पेरिया, रहितहु, 'आबने सकै छै कमरथुआ', रहितहु बमभोलाक नाम लैत स्वेदक्लिब, घूलधूसरित शरीरें, बेमाय फाटल पैरें, शनैः शनैः परन्तु दृढ़मने ई जा रहल अछि। वसन्त पंचमी कें की करुण भावें सरस्वती सँ ई मङै अछि 'रुपन्देही जयन्देही भाग्यं भगवति देहि मे। विद्यान्देहि धनन्देहि

सर्वान् कामान् प्रदेहिमे।' विद्या दिअऽ, धन दिअऽ, सौभाग्य दिअऽ, सब दिअऽ! ई छोट तन, की पैघ मन! एतेक आस कहाँसँ पूरय! सरस्वती तँ वाणी मात्र थिकी, 'शक्ति' नहिं। सप्तमीकें प्रातः स्नान कय सूर्यदेवक अराधना भेल! ताहूसँ हारि शिवरात्रिमे महादेवक आश्रय लेल, 'दुखदारिद्र्‌ यदग्धोऽहं भगवन् पार्वतीपते' निवेदन कयल। सबसँ थाकि फाल्गुनीमे समस्त आधिव्याधिकें प्रज्वलित अग्निदेवमे अर्पित कय चैत्रारम्भमे अन्न, जल, घट आदिक संचय ओ वितरण द्वारा नवीन जीवनक प्रयास भेल। माघशुक्ल पंचमी सँ चैत्रारम्भ तक समस्त वसन्त भारतीय जीवनक आयास, त्याग ओ सृजनक की अद्‌भुत प्रतीक बनल अछि!



अर्थदण्ड

आगामी वर्षक हेतु बिहारक ओ रेलवेक बजट प्रकाशित भेल। बिहारक बजटमे डेढ़ करोड़क घटी अछि, रेलवेमे नौ करोड़क बचत। बिहारक घटीकें पूरयबाक इन्तजाम कयल गेल अछि गरीब लोकपर नवीन कर लगाय तथा रेलवेक नौ करोड़ नफाक उपयोग हयत धनी वर्गक हेतु रेलयात्राकें सस्त ओ सुविधापूर्ण बनयबामे।

बिहारमे चम्पारण ओ शाहाबादक किसान लोकनिकें नहरक जलपर अधिक कर दैक हेतनि, कतहुकतहु जे नव पुल बनल अछि ताहि पर खेवा ओ छोआ, कुसियार आदि पर नव कर लागत। रेलवेमे फस्ट क्लास उठि जायत ओ सेकेण्ड क्लासहिकें तद्वत् कि ताहूसँ बढ़ि सुखद बनाओल जायत, किराया ठामहि रहत। एखन तक फस्ट क्लासमे चलनिहार धनी लोकनि आब फस्टक आधा किरायावला सेकेण्डमे ओतबहि वा ओहि सँ बेसी सुखसँ रेलयात्रा करता।

बारम्बार टैक्सक मारि गरीब लोक पर जेना एहि अनाचारभय धर्मभूमि भारतमे भय रहल अछि से दोसर कोनो सम्य देशमे देखब असम्भव। ब्रिटेन आदि देशमे हरेक व्यक्ति कमसँ कम हाइ स्कूल तकक शिक्षा प्राप्त कयने अछि। पढ़बा-लिखबाक सर्वत्र अभ्यास छै। बहुत वस्तुपर टैक्स छै परन्तु पोथी पर नहिं। टैक्सक बोझ दय विद्या प्रसारमे कनेको बाधा देबक ओहि ठामक सरकार कल्पनो नहिं कय सकै अछि। अपना देशमे सौमे नब्बे व्यक्ति निरक्षर अछि ताहू पर ओकरा विद्यासँ विमुख बनयबाक हेतु पोथी दाममे फी आठ आना पर आधा आना टैक्स बन्हि देल गेल छै! पोथी सँ लोक पड़ायले अछि। पुलपर चलल तँ टैक्स, गुड़ खयलक तँ टैक्स, कुसियार चुसलक तँ टैक्स! कोना चलय गरीबक काज? कोना चलत एहि देशक राज?

रेलमे थर्ड क्लासक भाड़ा पहिने सँ एखन तीन-गुन अछि। सुविधा तृतियांशो नहिं। नफा लेल जाइ अछि थर्डक गरीब यात्री सँ, सुविधा देल जाइ अछि सेकेण्ड, फस्टक बाबू ओ सेठ लोकनिकें! ई अन्हेर शासन कय काल चलत? देशक प्रजा सरकारी हाकिम-मुलाजिमक गारि मारि सहि भीषण शरीरदण्ड पबै अछि, टैक्स-घूसक असह्य अर्थ दण्ड सहै अछि। दण्डक हेतुहि एकर सृजन भेल अछि की?

9 मार्च 1953



विज्ञापन

सम्बाद पत्र सभ अधिकांश चलै छै विज्ञापनक मूल्यसँ। ई विज्ञापन प्राप्त करबाक पद्धतिक हाल बुझब तँ कतेक नामी अखबार सबसँ घृणा भय जायत। पैसेक लोभसँ नीको इच्छा राखयवाला कतेक अखबार कें अश्लील विज्ञापन छापय पड़ै छै। निकृष्ट पद्धतिक व्यवसायी ओ सरकार तथा अन्य सामूहिक संस्थाहिक जिम्मा विज्ञापनक अधिकांश रहै छै। व्यवसायीक विज्ञापन लिअऽ तँ अश्लीलताक प्रचारक बनू, सरकारक विज्ञापन चाहू तँ ओकर बँटनिहार हाकिम लोकनिकें पुरदार घूस दिअऽ। दुनूमे कोनो पसन्द नहिं हो तँ अखबार बन्द करू वा कोनो दानवीरक शरण लिअऽ। गान्धीजीक 'यंग इंडिया' ओ 'हरिजन' मे दाता छलथिन बिड़ला, बजाज आदि। ई लोकनि केहन शुद्ध मने दान देनिहार छला वा छथि सब जनै छी। बिड़ला आदिक दानक हेतु गांधीजी हुनकालोकनिक कम रोच नहिं रखै छलथिन। अश्लीलता, घूस ओ रोच ई तीन टा दानव विवेकशील पत्रकारक कपार पर सतत नचैत रहै अछि।

सेठ, सरकार ओ दाता तीनूमे सरकार पर जनताक सबसें अधिक सोझ अधिकार छै। सम्वाद पत्रभेल जनताक प्रतिनिधि, सरकार ओकर आज्ञा पालक। सरकार अपन विज्ञापन जनतांक 'पत्रकें नहिं दै ई असम्भव यदि समाज जागरूक हो। सरकार, ओकर पब्लिक सर्विस कमिसन, रेलवे, पोस्ट, शिक्षासंस्था आदि लाखक लाख टाका प्रति वर्ष दूरस्थ सूंखार पूँजीपतिक 'पत्र' मे दै अछि। कोटिक कोटि जनगणक 'मुख'-पत्रमे एक कैंचो नहिं। एहिसें दू अनिष्ट अछि-सरकारक टाका अर्थात् जनताक टाकाकें ओकर शत्रु पूंजीपति अपन अखबारमे लगाय जनताहि कें पथभ्रष्ट करबाक आयोजन करै अछि तथा पूंजीपतिक अखबार सब अनठीया भाषा हिन्दी वा अंगरेजीमे रहलाक कारणे सरकारी विज्ञापन सें लोक बहुधा अनभिज्ञे रहि जाइ अछि।

एहि अनाचारकें रोकबक उपाय अछि। पटनाक एसेम्बली ओ कौंसिल तथा दिल्लीक पार्लियामेंटमे मिथिलाक सदस्य लोकनि आन इलाकाक सदस्य लोकनिसे यथा साध्य सहयोग लैत मैथिली आदि प्रान्तीय भाषा सभक पत्रमे विज्ञापन देबालेल सरकारकें बाध्य करथु। ओलोकनि एतबो साधारण परन्तु अनिवार्य काज नहिं करथि तँ की करता? ठाम-ठाम सें एहि रूपक आग्रह तुरत पटना ओ दिल्ली सरकारी महाल मे पठाओल जाय। एतबा भेलासँ हयत कि

मैथिली आदि प्रान्तीय भाषाक पत्र सभकें अश्लील विज्ञापनक प्रयोजन छूटि जेतै, जनताक टाका सरकारसें पाबि सरकारक विज्ञापन जनतातक पहुँचाय जनता ओ सरकारक भारी सेवा कय सकता। एतेक काज एखनतक नहिं भेल अछि से खेद ओ आश्चर्यक विषय। जनता ओ ओकर प्रतिनिधि लोकनि आबहु सजग भऽ जाइथ तँ शीघ्रहि काज सम्पन्न हयत ताहिमे सन्देह नहिं।

ह्वीलर कम्पनी

पूर्वोत्तर रेलवे स्टेशन सब पर पुस्तक, पत्र-पत्रिका आदि बेचबाक सोलहो आना अधिकार ह्वीलर कम्पनी कें देने अछि। ई कम्पनी पहिने अंगरेजक छल-नाम एखनधरि अंगरेजी छैके-आब सुनैमे अबै अछि कोनो बंगाली किनने छथि। ई कम्पनी जे साहित्य चाहे सैहटा रेलवे स्टेशन पर विकाय सकै अछि। एकर चाहयक, नै चाहयक पद्धति की छै सेहो स्पष्ट नहिं होई अछि। यदि व्यवासयक दृष्टि रहितै तँ जे कोनो पाठ्य वस्तु विकाय सकै से सब बेचबा लेल तैयार रहैत, खास कय जँ ओहि वस्तुक अगुआर दाम नहिं लगै। परंच से नहिं करै अछि। 'मिथिला'क दिससँ जखन एकर सेन्ट्रल आफिस इलाहाबाद (15 एलगिनरोड) एजेन्सीक हेतु प्रस्ताव गेलै तँ कई सप्ताह तक किछु जवाबे नहिं देलक। ताबत नमूनालेल पत्रक प्रति अंक एकरा आफिस जाइछल। कइटा चिट्ठियो गेल जवाबक एकटा पोस्टकार्ड आयल- 3 फरबरी 1953क- जाहिमे लिखल छल 'हमरा बुक स्टौल सब पर मैथिली साहित्यक मांग नहिं अछि तें अहाँक एजेन्सी लेबासँ असमर्थ छी'। जे केओ मिथिलावासी छी ओ पूर्वोत्तर रेलवे मे यात्रा करै छी सब कहि सकैछी कि 'मिथिला' कार्यालयक लगले लहेरियासराय स्टेशन पर बम्बइसँ प्रकाशित सेठ रामकृष्ण डालमियांक हिन्दी साप्ताहिक 'धर्मयुग'क दूसय प्रति विकाय, हिन्दीक दूर प्रान्तक वीभत्स, 'रसीलीकहानियां', 'सजनी', 'नोंकझोंक', 'माया', 'मनोहर कहानियां' आदिक सयक सय प्रति बिकाय ओ दू कोटि मैथिली भाषीक एकमात्र पत्र साप्ताहिक 'मिथिला'क मांग नहिं। मांग अछि किनहिं से कोना बुझल जायत? प्रवेशहिक निषेद अछि तँ कीनत कोना? इलाहाबादक सेन्ट्रल आफिसमे बैसल ह्वीलर कम्पनीक मैनेजर एको बेर बिना अजमेनहिं कोना बुझलनि कि हुनका बुक स्टॉल पर 'मिथिला' लोक नहिं कीनत? यदि ओ बेचबाक भार नहिं लेबय चाहै छथि तँ 'मिथिला' पर सँ स्टेशन प्रवेशक रोक उठा लेथु, ओ अपन विक्रीक इंतजाम स्वयं कयलेत। दू कोटि मिथिलावासीक भाषा मैथिली कैं दबयबाक राजकीय षड़यंत्रमे यदि ह्वीलर कम्पनी सामिल नहिं अछि

तँ ओ अपन स्थिति एहि विषयमे स्पष्ट करओ– 'मिथिला' बेचओ अथवा ओहिपर सँ रोक हटबओ। बेचयक शर्त देखू, जाहि स्टेशनपर जतेक प्रति खुशी होनि लेथु, जे बिकेतनि तकर मूल्यक 25 प्रतिशत हुनक वेतन भेल ओ जे नहिं बिकानि से वापस कय देथु। एहि एजेन्सीमे कतय छनि क्षति? आगू दाम देबाक सेहो प्रयोजन नहिं, कोनो जमानतनहिं! तखन विरोधक कारण? मूर्खता? नहिं, दुष्टता। हिन्दी वाला लोकनिक सरकार अछि। ओ लोकनि आनहिठाम जकाँ मिथिला ओ मैथिलीहुकेँ दबायकें राखय चाहै छथि। रेलवे हुनक, ओकर स्टेशन ओ बुकस्टॉल सब हुनक। ओ ओतय 'मिथिला' केँ नहिं जाय देता। हुनकातँ ओहिठाम अपन 'सजनी, 'माया' आदि बेचबाक छनि!

मिथिलावासी ओ मैथिली भाषी एहि अन्यायकें बुझथु। आन भाषा ओ विचार स्वातन्त्रयक रक्षाक हेतु व्यक्ति-व्यक्ति स्थान-स्थान ह्वीलर कम्पनी ओ रेलवेक दिल्लीस्थ मंत्री लाल बहादुर शास्त्री तथा एहि सब अन्यायक परम आचार्य जवाहरलाल नेहरूकें चिट्ठी, तार वा भेंट द्वारा अपन क्षोभ बुझाबथु। एहि अन्यायकें छोट मानि निश्चिन्त नहिं रहथु।

पाठक

'मिथिला'क जे आदर समाजमे भेल अछि से आशातीत, परंच एहनो बहुत व्यक्ति छथि जिनका एकर रीति-नीति सँ दुःख छनि। ई दुःख देव 'मिथिला' कें कदापि अभीष्ट नहिं। परन्तु समाजक कल्याण चाहयवलाकें, ओकर दोष दूर करयवाला कें कतेक अप्रिय काज करय पड़ै छै। एहि तरहक काजसँ बचयक बहुत प्रयास 'मिथिला' करै अछि। तथापि एकरासँ जँ 'अपराध' हो तँ उदार, वृद्ध ओ विवेकशील पाठक समाजक हेतु किछु करय लेल थोड़ेक समय देथि तँ अपना लोकनिक विवेक ओ औदार्यक बड़ प्रतिष्ठा होइत।

दू कोटि लोकक मातृभाषा मैथिलीक एखन प्रायः एक मात्र पत्र रहलाक कारणें 'मिथिला' हुक विवेकक ई जाँचक बेर थीक। आन पत्रक असौकर्जें विरोध पक्षहुक भारवहन एकरे धर्म होइ छै। ताहि धर्मक पालन 'मिथिला' शुरु में एखन धरि यथासाध्य करैत आयल अछि। आगाँ औरो दृढ़ ओ उदार भय करैक प्रयास राखत ताहिमे विरोध पक्षक साहाय्य अपेक्षित। ओलोकनि अपनविरुद्ध मत निःसंकोच पठाओल करथु। 'मिथिला' यथासाध्य प्रकाशित करत। अपन विद्याहीन समाजकें किछु सँ किछु जोर शोर सँ कहि अपना दिस मिलाय विरोधी कें परास्त करब 'मिथिला' के अभीष्ट नहिं। समाज सज्ञान हो। सभ पक्ष बुझओ

ओ जाहि पक्षकें कल्याणकर मानय तकरा ग्रहण करओ। 'मिथिला' कें अपनो एकटा पक्ष छै। ओकर ई शुद्ध ओ ग्राह्य मानै अछि, चाहै अछि समाज ओकरा ग्रहण कय अपन दुःख दूर करय, जीवनक किछु ओ सुख शीघ्र सँ शीघ्र पाबय। परंच एहिमे ओ ककरहु अन्याय पूर्वक अप्रतिष्ठ नहिं करय चाहै अछि। से किये चाहत? ओतँ जनक-याज्ञवल्क्य, मण्डन-वाचस्पतिक मातृभूमिक नाम ग्रहण केने अछि तँ ओइ दिव्य पुरुष लोकनिक संस्कारो किछु लेबाक प्रयास करै अछि। ताहि संस्कारक लेशमात्रो भेने कतय रहत क्षणिक ऐहिक सुखक लेल ईर्ष्या द्वेष पूर्ण बुद्धि आ आचरण?

'प्रव्दा' क इतिहास

संवादपत्र केवल प्रचार ओ आन्दोलनक साधन नहिं बल्कि समाजक निर्माता थीक–लेनिन।

41 वर्ष पूर्व 5 मइ, 1912 के, सेंटपिटर्सवर्ग मे 'प्रवदा' संवादपत्रक प्रथम अंक श्री लेनिनक आदेशानुसार प्रकाशित भेल।

सम्पूर्ण रूसमे 'प्रव्दा' क जन्मदिवस प्रतिवर्ष बड़े धूमधामसँ प्रेसदिवसक रूपमे मनाओल जाइ अछि।

जन्महिसँ 'प्रव्दा' प्रचार, आन्दोलन एवं निर्माण-कार्य अपन कर्त्तव्य बुझै अछि। ओ जनताक आवश्यकताक चित्रण कऽ ओकर निवारण हेतु सामूहिक रूपमे कार्य करबालेल पथ-प्रदर्शन करै अथि। दुरूह देहाततक 'प्रव्दा' पहुँचि प्रजाकें क्रांतिक हेतु उत्तेजित कयलक। लेनिन यथार्थ कहल 1917क क्रांतिक शिलान्यास 'प्रव्दा' द्वारा 1912 मे भेल। लेनिनक अभिलाषा छल संवादपत्र सनसनी पूर्ण राजनीतिक समाचारक पुञ्ज मात्र नहिं, प्रजाक राजनीतिक ओ आर्थिक शिक्षाक साधन हो। से स्वप्न पूर्ण भेल।

सोवियत शासनमे प्रेसक देन, अदभुत् अछि। प्रथम पंचवर्षीय योजनामे सभ रूस निवासीक हाथमे 'प्रव्दा'क एक प्रति हरदम रहै छल। युद्धकालमे मातृभूमिक हेतु वीरता ओ त्यागक शिक्षाक पूर्ण असर भेल।

सरकारी वा सार्वजनिक संस्था वा व्यक्तिक त्रुटिपत्र द्वारा उद्घाटित होइ अछि। रूसमे जाहि व्यक्ति वा संस्था पर कोनो दोषक आरोप होइ अछि तकर ई कर्तव्य कि अपन त्रुटिक समीचीन उत्तर दियय। पत्रद्वारा ओ उत्तर प्रजाक समक्ष अबै अछि।

'प्रव्दा' कें प्रत्येक दिन हजारक संख्या मे एहन पत्र अबै छै। तें अधिकांशक प्रकाशन असंभव। अप्रकाशित पत्रसभ संवादपत्र द्वारा अपेक्षित व्यक्ति वा संस्था कें पठाओल जाइ अछि। परंच लेखकक नाम गुप्त राखि लेल जाइ अछि। ओ लोकनि जे समुचित उत्तर दै छथि से पत्र लेखक कें संवादपत्र पठाय दै अछि। एहि रूपमे रूसमे प्रत्येक पत्रपर उचित ध्यान देल जाइ छै।

सोवियत रूसमे अत्यन्त अल्पसंख्यक लोकनिहुक हेतु हुनका लोकनिक मातृभाषा मे संवाद पत्र प्रकाशित होइ अछि। जारक रूससँ आइक स्थिति एकदम विपरीत अछि। 1913 इ० मे 859 पत्रमे 90 प्रतिशत रूसी भाषामे प्रकाशित होइ छल। आइ 1913 क 24 भाषाक स्थान मे 119 भाषामे संवादपत्र प्रकाशित होइ अछि, ओ 6500, 000क स्थानमे 417,00,000 प्रति छपै अछि। एकर अतिरिक्त 1, 500 पत्रिका अछि।

सोवियत रुसमे अल्पसंख्यकक भाषाकें समुचित प्रोत्साहन भेटल अछि। कुर्द, बलुदिस आदि 40 जातिकें अक्टूबर क्रांतिक बाद अपन भाषामे पोथी, पत्रिका, कुर्द,. संवादपत्र आदि लिखबाक ओ छपबाक प्रोत्साहन भेटल अछि। तदर्थ अ-रूसी भाषा मे 1913क केवल 65 लाख पोथीक बदला 1952 मे 15 करोड़ 80 लाख (24 गुणा) छपल।

पोथीओक प्रकाशन-संख्यामे वृद्धि बेस भेल अछि। 1913 सँ आइ 24 गुण अधिक पोथी छपै अछि। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन ओ स्तालिनक पोथीक 90,40,85,000 प्रति 101 भाषामे छपल अछि। स्तालिन लिखित 'कम्युनिस्ट पार्टीक संक्षिप्त इतिहास' क 4 करोड़ प्रति 66 भाषामे छपल। एहि तरहक उन्नति आनो तरहक पोथीक भेल अछि। उन्यासमे,1913क अपेक्षा 1952 मे 21 गुण वृद्धि भेल। एहि रूपें सोवियत रूसक प्रेस सराहनीय कार्य कऽ रहल अछि।

□□

हिमालय

संसारक सर्वोच्च गिरिशिखर चोमोलुङ्मो पर भारतीय प्रजा तेन्सिङ् जे भारतक राष्ट्रीय पताका गाड़ल अछि से एहि देशक महान् रक्षक, प्रकृतिक वरपुत्र देवात्मा हिमालयपर हमरालोकनिक विजय नहिं, हुनका प्रति एहि देशक श्रद्धादान थीक। प्रकृति कें ई देश कहियो पिशाचिनीक रूपमे नहिं देखलक, सतत माताक रूपमे एकर प्रतिष्ठा कयलक अछि। 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।' हिमालय सब दिन एहिठामक देवलोक, तपोभूमि रहल अछि। भारतक आदि मानवसँ लय आइ तक पर्वतराज शतशत विपन्न विरक्त व्यक्तिक शरणस्थल रहल अछि। एकर वनकन्दरा एखनहु कते योगी मनीषीक आश्रय बनल अछि। ई विशाल किन्तु शीलवान्, उच्च किन्तु नम्र रूप अन्यत्र कतय देखब? भारत, नेपाल आदि देशक ध्वजा अपना माथ पर नेने हिमालय विजित नहिं और उच्च भेल अछि, क्षुद्र ओ विपन्न मानवक उत्साह बढ़यवालेल एक बेर फेर ओकरा ओ अपन महाचुम्बन देलक अछि। पृथ्वीक मानदण्ड, महामानव हिमालयक एहि आलिंगन मे, देख मानव, अपन विजयक अहंकार नहिं, एहि दिव्य लोकक प्रति स्नेह ओ श्रद्धाक उदय हो।

15 जून 1953

□□

3. निबन्ध

भाषा

भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे भारतक भाषा सभक नाम अछि- संस्कृत, असमिया, बंगला, उड़िया, हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी, गुजराती, मराठी, तामिल, तेलगु, कन्नड़, मंलयलम्। (बादमे एहि सूचीमे) सिंधी, नेपाली, मणिपुरी आ कोंकणी सेहो सम्मिलित भेल-सं०)। एहिमे मैथिली, मगही, झारखण्डी (संताली, मुण्डारी आदि), भोजपुरी, अवधी, बघेली छत्तीसगढ़ी, व्रजभाषा, बुन्देली ओ राजस्थानीक कतहु नाम नहिं। कारण प्रायः राजकीय नेता लोकनिक भ्रान्त धारणासे पूर्व मे मिथिला ओ झारखण्डसें पश्चिममे कुरुक्षेत्र ओ राजस्थान तक हिन्दी (उर्दूवाहिन्दुस्तानी) क्षेत्र थिक। ई भ्रान्ति बेस पुरान अछि।

सन् 1937क अपन लेख ''भाषाक प्रश्न''[1] मे श्री जवाहरलाल नेहरु भारतीय भाषा सभक नाम देने छथि-हिन्दुस्तानि (हिन्दी ओ उर्दू) उपभाषा समूह सहित, बंगला, मराठी, गुजराती, तामिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयलम्, उड़िया, असमिया, सिन्धी, पंजाबी ओ पश्तू। हुनक मन जे राजकीय भाषा ओ शिक्षाक माध्यमरूपें स्वीकृत हो हिन्दुस्तानी (हिन्दी-उर्दू), बंगला, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयलम्, उड़िया, असमिया, सिन्धी, पश्तू ओ पंजाबी।[2] संविधान परिषद् मे जवाहरलाल नेहरू सर्वप्रमुख सदस्य छला। संविधानक भाषासूची तें हुनक सूचीक अनुकूल हो से स्वाभाविक।

गान्धीजीक पोथी 'राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी'[3] मे भाषा (प्रान्तीय, राष्ट्रीय, प्राचीन ओ वर्तमान) सम्बन्धी1908-1947क हुनक लेख सभक संग्रह प्रकाशित अछि। एहिमे अपभ्रंश, अर्धमागधी, अरबी, अवहट्ठ, अंगरेजी, उर्दू, उड़िया, एस्पराण्टो, खड़ीबोली, गुजराती, तामिल, द्राविड, नागर, पाली, प्राकृत, फारसी, बंगला, व्रजभाषा, मराठी, महाराष्ट्री, राजस्थानी, संस्कृत, हिन्दी (हिन्दुस्तानी) क नाम ओ चर्च अछि। तुलसीदासक बड़ भक्त छला गांधीजी, हुनक नाम कय बेर श्रद्धापूर्वक लेलनि अछि, परन्तु हुनक भाषा अवधीक कतहु जिक्र नहिं। शास्त्र विज्ञानक अध्ययन ओ ज्ञान गांधीजीकेँ जवाहरलाल सँ कम छलनि तँ शास्त्रीय विषयमे ओ नम्र ओ सतर्क बेसी छला। एहि सबमे ओ विशेषज्ञहिक विचार पर अपन मार्ग निश्चित करैत छला। भाषाक विषयमे एतेक विचारलहु-लिखलहु पर ओ कतहु ओकर संख्या वा इतिहास स्वयं देवाक चेष्टा नहिं कयलनि। ''रचनात्मक कार्यक्रम''[4] मे प्रान्तीय भाषाकें एक मुख्य स्थान दइयो ओकर नामावली नहिं देलनि। 'सच्ची शिक्षा'[5] ओ 'बुनियादी शिक्षा' [6] हुंमे नाम सभक

जिक्र नहिं। गान्धीजीक एहि मौनसें मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि प्रान्तीय भाषा सभक उपकार नहिं भेल से मानल, परन्तु कतेक अपकार सँ बचल। कारण जवाहरलाल जकाँ यदि ओहो अन्धाधुन्ध सूची दय जइतथि तँ एखन भारतीय प्रान्तीय भाषा (मैथिली, मगही, झारखण्डी, भोजपुरी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, बुन्देली, ब्रजभाषा ओ राजस्थानी) सभक उद्धार और कठिन भय जाइत।

उत्तर भारतमे मिथिलासँ राजस्थान ओ हिमालय सँ विन्ध्याचल तक भूखण्डक भाषाक नाम जे कतेक गोटे हिन्दी वा हिन्दुस्तानी कहै छथि तकर कारण इतिहासमे छै। भारतमे अंगरेजी भाषाक प्रचार ओ आधिपत्य जाहि रूपें भेल ताहिमें पूर्वहि ठीक ताही रूपें आर्यावर्त (उत्तर भारत) मे हिन्दीक प्रचार ओ प्राबल्य भेल।

बारहम शती इस्वीक अन्तमे आर्यावर्त पर मुसलमानक आक्रमणकालमे एतय तृतीय प्राकृत अर्थात् अपभ्रंश भाषाक क्षेत्रगत भिन्न-भिन्न रूप क्षेत्रक्रम नामे प्रचलित छल यथा गौड़, मागध, शौरसेन, पांचाल, नागर, मालव, आमीर। एकर पूर्व प्रचलित प्राकृतहुक नाम एंही क्रमे छल। अपभ्रंश भाषाक अवशिष्ट साहित्य सर्वप्रथम प्रकाशित हर प्रसाद शास्त्री[7] ओ हुनक पश्चात् प्रबोधचन्द्र बागची[8] तथा राहुलसांकृत्यायन[9]। एहिमे 700-1200 इस्वीक बौद्ध सिद्ध सरहपा, लुइपा, मत्स्येन्द्र नाथ आदिक पद संगृहीत अछि। हजारी प्रसाद द्विवेदी अपन 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', ''कबीर' ओ 'नाथपन्थ' मे एकर नीक विवेचन कयने छथि।

अपभ्रंश युगक बाद देशीभाषा-विद्यापतिक 'देसिल' बयना-क उत्थान भेल। परन्तु अपभ्रंश-अवहट्ठ-क अभ्यास और दू सय वर्ष-13म ओ 14म शती इस्वीतक कायम रहल। असलमे देशी अर्थात् प्रान्तीय भाषामे रचना करब बारहम शतीमे मुसलमानक आगमनक बादहि शुरु भय गेल। दिल्लीमे मुसलमानी शासन-1200 इस्वी-कायम भेलहुपर दू, सबा दू सय वर्षतक मिथिला स्वतंत्र रहल। हुनका लोकनिक रीति-नीति, रहन-सहन, बोली-बानीक प्रभाव-तें एहिठाम आर्यावर्तक अपन प्रान्तक अपेक्षा बहुत पाछू शुरु भेल।

मुसलमान लोकनि अपन राजधानी दिल्ली बनौलनि। भारतकें ओलोकनि हिन्द वा हिन्दुस्तान एवं एकर भाषा कें हिन्दी वा हिन्दुस्तानी कहै छला। दिल्लीमे विशेषतया रहबाक कारणें ओही ठामक भाषा हुनका हिन्दक-आर्यावर्तक, भारतक-भाषा बुझना गेल ओ ओकरा हिन्दीक नाम देल। भाषाशास्त्रीतँ ओलोकनि छला नहिं, ने भाषाशास्त्र मे कोनो रुचि छलनि। छला ओ विजेता एवं शासक। प्रजासें गप्प सम्पर्कक हेतु एतयक भाषा जानब जरुरी बुझि दिल्लीक भाषा सिखलनि

ओ बुझलनि। हिन्दक-भारतक-भाषा जानि लेल तथा जतय-जतय शासनक हेतु गेला दिल्लीक बोली हिन्दीकें लेने गेला। प्रजा निरुपाय छल। ओ हिन्दीक बोझ माथ पर धयलक।[10] धीरे धीरे अविद्याक प्रसार एतेक बढ़ल कि मिथिलामे कतेक ग्रामीण अपन भाषाकें हिन्दी-मुसलमान शासकक देल नाम-ओ मुसलमान शासकक बोली हिन्दी कें जामनी, जाम्बनी (संस्कृत जाबनी, यवन-मुसलमान बोधक-सँ भाषाक अर्थमे) कयह लगला। सुकुर एतबे जे ओ अपन तथा दिल्ली वला शासकक भाषाकें भिन्न बुझलनि ओ भिन्न नाम, अशुद्धे सही देलनि।

बारहम शतीक अन्तसें सतरहम शती तक मिथिलामे पश्चिमा बोलीक दृढ़ प्रभाव नहि परल। ज्योतिरीश्वर (1300 इस्वी) विधापति (1350इस्वी) ओ गोविन्ददास (1650 इस्वी)क समय धरि मिथिला मे साहित्यक रचना मैथिलीक अतिरिक्त अवहट्ठ ओ संस्कृतहि मे होइ छल, व्रजभाषा वा हिन्दी मे नहिं।

अकबरक समय (1556इ०) सें मिथिला ओ दिललीक सम्पर्क बढ़य लागल। अकबरहिक समयमे मिथिला निश्चित रूपें दिल्लीक अधीन भेल। ताहीकाल आर्यावर्त्तमे तुलसीदास (अवध-प्रान्त) ओ सूरदास (व्रजभूमि)क उदय भेल। पश्चिम से मिथिलाक सम्पर्कक कारण भेल प्रथमतः राजकीय, अकबरक एहिठाम आधिपत्य एवं दृढ़ भेल तुलसी ओ सूरक भक्ति आन्दोलन सें। राजकीय ओ धार्मिक दुनू प्रभाव रहितहुँ दू सय वर्ष (1750इ०) तक मिथिला साहित्य रचनामे पश्छिमा भाषा-अवधी, व्रजभाषा वा हिन्दी-क करवनहुँ अवलम्बन नहिं कयलक। जखन कयलक तँ राजभाषा जांवनी, (यावनी, हिन्दी)क नहिं वल्कि भक्तिवाणी व्रजभाषाक। पच्छिमा बोलीक सर्वप्रथम मैथिल रचना भेटल अछि लालकविक कनरपी घाटक युद्धवर्णन (1746 इस्वी) व्रजभाषामे। तत्कालीने साहेब रामदास मैथिलीक संग-संग किछु पद व्रजभाषाहु मे रचलनि। जांवनी वा हिन्दीक रचना सर्वप्रथम मिथिलामे कयल चन्दाझा 19म शतीक अंतमे, आइसँ प्रायः साइठ वर्ष पूर्व।

महावीर प्रसाद द्विवेदी कहै छथि ''मैथिली भाषा हिन्दी ही है, कोई पृथक भाषा नहीं।''[11] मैथिली हिन्दी कोना भय गेल? मैथिलीक क्षेत्र मिथिला ओ हिन्दीक क्षेत्र दिल्लीमे-पाँच सय कोसक अन्तर अछि। दुनू भाषा क्षेत्रक मध्य पड़ै अछि भोजपुरी, अवधी ओ व्रजभाषाक क्षेत्र। एतेक विशाल भूखण्ड कें नांघि हिन्दी मिथिला, मगध, भोजपुर आदिक शहर बाजारमे कोना प्रवेश कयलक से कथा काशीवाल रामचन्द्र शुक्ल सँ सुनू–

''मोगल साम्राज्य के ध्वंससे---------खड़ी बोली[12] के फैलने में सहायता

पहुँची। दिल्ली, आगरे आदि पछाहीं शहरों की समृद्धि नष्ट हो चली थी और लखनऊ, पटना, मुर्शिदाबाद आदि नई राजधानियां चमक उठी थीं। जिसप्रकार उजड़ती हुई दिल्ली को छोड़कर मीर, ईशा आदि अनेक उर्दू शायर पूरब की ओर आने लगे, उसी प्रकार दिल्लीके आसपास के प्रदेशों की हिन्दू व्यापारी जातियां-अगरवाले, स्त्री आदि-जीविका के लिये लखनउ, फैजाबाद, प्रयाग, काशी, पटना आदि पूर्बी शहरों में फैलने लगीं। उनके साथ-साथ उनकी बोलचाल की भाषा खड़ी बोली भी लगी चलती थी। यह सिद्ध बात है कि उपजाऊ और सुखी प्रदेशों के लोग व्यापार में उद्योगशील नहीं होते। अतः धीरे-धीरे पूरबके शहरों में भी इन पश्चिमी व्यापारियों की प्रधानता हो चली। इस प्रकार बड़े शहरों के बाजार की व्यावहारिक भाषा भी खड़ी बोली हुई।-------यह अपने ठेठ रुपमें बराबर पन्छाह से आई हुई जातियों के घरों में बोली जाती है।''[13] भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक मतें ''इनका (अग्रवालों का) मुख्य देश पश्चिमोत्तर प्रान्त है, और इनकी बोली, स्त्री और पुरुष सबकी खड़ी बोली उर्दू है।''[14]

ई निर्विवाद अछि कि हिन्दी मिथिला आदि पूर्वोत्तर खणडक भाषा नहिं थिक। एहिठाम ई आयल मुसलामान शासक ओ हिन्दू अगरवाल, खत्री आदि व्यापारिक संग। शासक लोकनिकें छलनि सैनिक बल ओ व्यापारी लोकनि कें धनक बल। सैन्यबल ओ धनबल दुनू मिलि हिन्दी भाषाकेँ एहिठामक हेतु अत्याज्यै नहिं, अवश्यकरणीय बना देलक। हिन्दी साहित्य सम्मेलनक भूर्तपूर्व अध्यक्ष महापंडित राहुल सांकृत्यायन कहै छथि-'' यह सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी की मूलभूमि है-सहारनपुर, मुजफ्फरनगर; मेरठ के पूरे तीन जिले एवं बुलन्द शहर की सिकन्दराबाद तहसील तथा विजनौर जिले के कुछ गांव।''[15] तथापि धीरेन्द्र वर्मा अपन 'हिन्दी भाषा का इतिहास[16] मे हिन्दी भाषी क्षेत्रक जे चित्र देने छथि ताहिमे राजस्थान सँ मिथिला ओ हिमालयसँ विन्ध्याचल तक हिन्दीक विस्तार देखौने छथि! लाल रंगमे! अंगरेजी साम्राज्यहुक रंग नकसामे लाले रहै छलै। ई एक और साम्राज्य-दिल्ली वाल हिन्दीक-कतेक काल चलत?

संदर्भ सूचीः-

1. दि युनिटी अव् इण्डिया, लण्डन 1948, पृ० 244.
2. ओतहि; पृ० 259.
3. नवजीवन प्रकाशन मन्दिर; अहमदाबाद, 1947.
4. नवजीवन, अहमदाबाद; 1951; पृ० 31-32.

5. नवजीवन, अहमदावाद; 1950
6. जनजीवन, अहमदाबाद; 1950
7. बौद्धगान ओ दोहा; बंगीय साहित्यपरिषद् कलकत्ता, 1916.
8. 'चर्यापद'; कलकत्ता विश्वविद्यालय जर्नल अव् डिपार्टमेंट अव लेटर्स; 1934.
9. हिन्दी काव्यधारा; प्रयाग, 1945.
10. तारा चन्द- 'हिन्दुस्तानी बोली का इतिहास' गांधीजीक 'राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी' मे उद्घृत पृ० 128-136
11. साहित्यालाप (खड़गविलास प्रेस); पृ० 8.
12. हिन्दी
13. हिन्दी साहित्यका इतिहास; काशी 2008 वि०; पृ० 408.
14. पद्मसिंह शर्माक 'हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी, प्रयाग 1942 इ०, पृ० 34 मे भारतेन्दुक 'अग्रवालों की उत्पत्ति(1928 वि०) क भूमिकासँ उद्घृत।
15. ''आदि हिन्दी की कहानियाँ और गीत'; पटना 1951 भूमिका, पृ०।
16. प्रयाग 1946.

(9 मार्च 1953)

□।□

मिथिलाक मुक्ति

अपन देश मिथिला छोट नहि अछि। उत्तरमे हिमालय सँ दच्छिनमे गंगा तक सोलह योजन-चौंसठि कोस-चाकर ओ पूवमे महानन्दासँ पश्चिममे गण्डकी नारायणी तक चौवीस योजन-छियानवे कोस-नाम, ई 6150 वर्गकोस-25,000 वर्गमील-विस्तृत भूमि-दू कोटि एकर जनसंख्या छोट कोना भेल? विश्वसंघमे 76 गोट राष्ट्र अछि, ताहिमे 63 गोट जनसंख्यामे ओ 18 गोट विस्तारमे मिथिलासँ छोट अछि। संसारक एतेटा कोनो दोसर भूमिखण्ड, -उर्वराशक्ति, वन, जल, पशु आदि धनमे तथा बुद्धिक तीव्रतामे एकरासँ बढ़ल नहिं अछि। एकर हिमलाय संसारक सर्वोच्च पहाड़, अनेक सुखकर खनिज द्रव्यक आगार अछि; गण्डक, वाग्मती, कमला, त्रियुगा, कोशी ओ महानन्दा जल ओ विद्युतक भण्डार अछि। भूमि, पर्वत ओ नदीक एहि समस्त निधिक यदि उपयोग हो त कोन एहन ऐहिक सुख अछि जाहिस हमरालोकनि वंचित रही? भूमिस खयबालेल नाना प्रकारक स्वादु अन्न ओ फल; पहिरय लेल वस्त्रक बांग; पहाड़सँ सड़क,स वान्ह ओ घर बनयवालेल नाना तरहक पाथर; वनसँ काठ ओ नदीसँ खेत पटयबा ओ पीबयलेल जल तथा कारखाना, रेलगाड़ी, मोटर आदि चलयबालेल विजली एतयसँ अल्प आयासमे संसारमे अनतय कतहु नहि भेट सकै अछि।

तथापि हमरालोकनि निर्धन ओ दीन बनलछी, सतत दच्छिन पच्छिम तकैत रहै छी जे केओ आबथु गंगा गण्डक पारसँ दयालु, दीनबन्धु, हमरालोकनिक उद्धार करथु। एहन उद्धार करयवला नहि केओ भेटत से बूझि लिअ। तकर कारण ई नहि जे अनतय सबठाँ मिथिलाहिक सम निरुपाय, निर्मम ओ परस्परक ईर्ष्या-देषसँ जर्जर लोक भरल अछि। कारण ई जे सबकें अपन-अपन छोट पैध विपति छै, सबकें अपन-अपन निर्वाहक चिन्ता छै। एहन भाव हमरालोकनि अपना हृदयमे कथमपि नहि आनी जे हमर सहायक जे नहि भेल से हमरा प्रति उदासीन वा दुष्ट अछि। आनकें जे सम्पत्ति ओ सामर्थ्य प्राप्त छै सैह तँ हमरहु लोकमिकें प्रकृतिसँ भेटल अछि, आनसँ हम जै उपकारक इच्छा ओ आशा रखै छी सैह इच्छा ओ आशातँ आनहुकें हमरासँ छै। हम यदि ओकर आस नहि पुराय सकियै तँ ओ हमर आस नहि पुरौलक ताहि लेल ओकरा कोन अधिकारें दोष दियै?

दीन जखन लोक होइ अछि तँ ओकर विवेक क्षीण वा नष्टो भ जाइ छै।

दुर्दिन मे हमरालोकनिक धन गेल, विद्या बुद्धि सब गेल संगहि विवेकोजेना लुप्त भ गेल। एहन मन्द अवस्थामे कुकुर मुंह चाटय त केयो आन आबि ओइ दुष्ट स रक्षा करय ई खाहिश हयब स्वाभाविक। परन्तु से त भेल विकट अधोगति। एहिस उबरब कोना?

लक्षण एहि समाजक उबरयक हम देखै छियै। से थिक चारु दिसजे परस्परक ईर्ष्या-द्वेष ओ अहंकार पर; एकक दोसरकें हीन राखयक, ओकर अपमान करयक यत्नपर धीर परन्तु सबल प्रहार भ रहल अछि; सभक उन्नति ओ कल्याणक प्रति सहिष्णुता ओ प्रयास बढ़ि रहल अछि।

लोकक दृष्टि अछि स्थूल। स्थूले सुखटा ओकरा अबै छै। से यावत ओकरा प्राप्त नहिं हेतै ता ओकरा सन्तोष नहि हेतै। से कोनो बेजाय नहि। एतबे जे ओइ स्थूल सुखक निर्माण मे जे सूक्ष्म भाव कारण होइ छै तकरा नहि चिन्हलास लक्ष्यक प्राप्तिमे विलम्ब हयत। स्थूल वस्तु हेयनहि, ओकरा बिना संसारक सुख कतय? परन्तु सूक्ष्म कारण बिना ओ असम्भव। तें ओइ सूक्ष्म वस्तुक चिन्तन अनिवार्य।

से चिन्ता त कय सकै छथि विद्वाने, बूद्धिमाने। परन्तु अपना देशमे हिनका लोकनिक संख्या कते अछि?

एहि अल्प संख्याकें बढ़बय पड़त।

से कोना?

सयमे बारह गोटे हमरालोकनि साक्षर छी। ताहूमे अधिक गोटय अपन अक्षर-मिथिलाक्षर-नहि जनै छी। अपनालोकनिक पत्ता, टिप्पनि, उपनयन, विवाह, श्राद्ध ओ नाना पूजाक पद्धति, समस्त प्राचीन पोथी ओ अन्य लेखसब जाहि अक्षरमे अछि से एखन कय गोटे जनै छी? कायस्थ ओ ब्राह्मणहिक हाथमे यदि ई अक्षर एखनधरि जेना रहि गेल त सब वर्णक समानता कोना हयत? उच्च ओ निम्न वर्णक कारण विद्याहिक अस्तित्व ओ अभाव त भेल। ताहि विद्याक मार्ग-एतयक अक्षर-यदि दुइये तीनिये वर्ण लेल मुक्त रहतै त आन जे बहुसंख्यक वर्ण छै तकर अज्ञान कोन दय परयतै?

बीस पच्चीस वर्ष पूर्व यादव, कैवर्त आदिलोकनि जखन जनौ लेल, तेरहा श्राद्ध आरम्भ कयल त ब्राह्मण राजपूत आदि द्विजकें बर क्रोध भेल। जनौक प्रसार ओ श्राद्धक अवधिक संकोच लेल कते संघर्ष भेल, पुरान तागधारी बाबू लोकनि नवीन पर कते आक्रोश ओ अत्याचार कयल। से सब दुर्भाग अपना समाजक आब भेल। जकरा इच्छा जनौ पहिरओ, जखन इच्छा होइ श्राद्ध करओ। ककरहु कोनो बाधा नहि। एहि शुभ अवस्थाक कारण भेल जतबे यादव आदिक

गौरव ओ शौर्य ततबे ब्राह्मण आदिक प्राचीन विवेक ओ औदार्यक पुनरावर्तन।

एहि मिथिला भूमिक विवेक ओ औदार्य कतउ लुप्त होइ। पांच हजार वर्ष पूर्वक ऋग्वेद स आइ धरि एकर दीर्घ रेखा कतहु क्षीण, कतहु पुष्ट, परन्तु सदा अक्षुण्ण रहल अछि। एहिस पूर्व चारि पांच सय वर्ष धरि ई क्षीण रहल, आब देखै छी, फेर एकर शुक्लपक्ष आयल, फेर ई पुष्ट होअय लागल।

पुष्टिक ई क्रिया एकर आब शीघ्र सपन्न हेतै। ब्राह्मणकें आब देखै छी जे केयो जनौ लेअय, उपनयन, विवाह, श्राद्ध आदि वैदिक ओ धार्मिक कर्म द्विजवत् करय तकरा प्रति सहिष्णु ततबे नहि, सब संस्कृत पढ़य ताहि लेल; गरीबक, निम्न वर्गक जे एकमात्र भाषा मैथिली ताहिमे ओकरा संग गप्प करय लेल, ओकरा प्रतिष्ठा देवय लेल, ओही भाषा द्वारा ओकरा समस्त विद्या भेटौ तकर व्यवस्था लेल वेचारे आग्रहशील, आकुल; वेदक मन्त्रहो, चाणक्य ओकालिदासक वचन हो वा विधापतिक गीत हो, कतहु कोनो वर्णक नेनाक मुँहस सुनि आनन्दमग्न।

बर अन्धकारमे पड़ल छलहुँ हमरा सब। भोरक लक्षण आब देखयमे अबै अछि। कनेकाल मे उषा ओतत्पश्चात् सूर्यक उदय हयत। ताहि उदयमे अपन-अपन ओ एहि समस्त विपन्न मैथिल समाजक बुद्धि बढ़उ, कल्याण होउ ताहि लेल सब गोटय, सब वर्ण, सब वर्गक, अपन गायत्री मन्त्र सम्हारि सूर्यदेवक उपस्थापन हेतु तैयार होउ। पांच हजार वर्ष पूर्व मिथिला भूमिमे अपना लोकनिक पूर्वज जखन सर्व प्रथम अन्धकारमे पड़ला त अही कोशीक तटपर विश्वामित्र सभक बुद्धिक उन्नति ओ प्रतिष्ठा लेल गायत्री रचि सूर्यक उपासना कयल, समाजक से उद्धार कयल जे मिथिला सबकें हुनक नवीन सृष्टि प्रतीत भेल।

से विश्वामित्र अपन आब कतय! परन्तु जाहि महामन्त्रक प्रभावें ओ मिथिलाक नवीन सृष्टि कयल सेत नहि गेल अछि। ओकरा धरु सब गोटय, बुद्धिकें प्रखर करु, हृदय कें उदार ओ आत्माकें सबल कय आगू बढ़ू। दुःखस मुक्ति कियै नहि हयत? हमरा लोकनिक यत्न कहुउँ निष्फल हो, हमरा सब कि कुलोक छी! याज्ञवल्क्य छला पूर्वज, कहि गेल छथि सूर्यमे जे ओ पुरुष छथि सैह हम छी। एते उच्च एतेदीप्तिमान भ हमरा लोकनि कहउँ पतित रहि! से यदि होत हमरा लोकनिक विस्फुलिंग अग्निस शुष्क तृणक ई संसार प्रज्वलित भ शीघ्र दग्ध नहिं हयत?

की प्राचीन ओ उज्ज्वल अछि एहि समाजक गौरव! ऋग्वेदक दस मण्डलमे तीन, प्रथम तृतीय ओ चतुर्थ, एतयक ऋषि गौतम, विश्वामित्र, वामदेव ओ हिनका लोकनिक पुत्र-पौत्रक रचल; एहीमे विश्वामित्रक बनाओल प्रसिद्ध गायत्री मन्य; याज्ञवल्क्यक शुक्ल यजुर्वेद, वेदान्तक आदि ओ आधार ग्रन्थ ईशावास्योपनिषद् सहित शतपथ ब्राह्मण जाहिमे अछि वेतान्तक द्वितीय महाग्रन्थ वृहदारण्यकोपनिषद्; अनेक श्रौत, गुह्य ओ धर्मसूत्र; स्मृति ओ पुराण; जैन ओ बौद्धधर्मक प्राकृत ओपालि साहित्य; जैमिनीक पूर्व मीमांस ओ शबरक भाष्य; कपिलक सांख्य; गैतमक न्याय ओ कणादक वैशेषिक दर्शन; कुमारिलक वार्तिक ओ टीका; मण्डनक मीमांसा ओ वेदान्त वार्तिक; वाचस्पतिक भामती, उदयनक किरणावली; गंगेश-बर्द्धमान-पक्षधर-शंकरवाचस्पतिक नव्यन्याय; लक्ष्मीधर, हलायुध, श्रीदत्त, चण्डेश्वर आदिक निबन्ध; मुरारि, जयदेव, विद्यापति आदिक काव्य; जनक, हरिसिंग, शिवसिंह सम राजा; चाणक्य सम नीतिकुशल मेधावान् मनीषी!

एकेरा स्मरण करी। घमण्ड लेल नहि सत्कर्मक प्रेरणा लेल। इहलोक परलोक सब फेर सुधरतै। अधैर्य कथीक? सबने हेतै। गण्डकी, कोशी आदिक नहर स खेत पटतैक, पर्याप्त अन्न उपजतै, केओ किये भूखल रहत? हिमालयक पाथर स चलय लेल बढ़िया सड़क ओ रहय लेल नीक घर बनतै; जलविद्युतस अपन कलकारखाना, रेल, मोटर आदि सवारी चलतै; रोगीक आरोग्य लेल अस्पताल ओ घीया-पूताक साधारण स उच्चतम शिक्षा लेल स्कूल, कालेज ओ विश्वविद्यालय बनतै। एखन धरि नहि बनलै तें होइ अछि जे कहुँ नहि ने बनै। से कहुँ होइ। एखन धरि एहि वस्तु सभक खोज कहाँ केलियै जे भेटत? कोन देश, कोन समाज आलस्य, औदासिन्यमे सम्पन्न भेल अछि? कर्ममे चित्त ओ हृदयमे वैराग्य राखि चलू, कल्याण के छीनि सकत?

तत् सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो योनः प्रचोदयात्।



भारतक रक्षा

देश भक्ति बर बढ़ियाँ। परन्तु भक्ति कोन देशक? जाहिमे लोक गंजन अपमान उठबय? अल्पाहार, अनाहार, अनागार रहय? जतय साधु स असाधुक संख्या बरबेसी होअय? असाधु साधुकेँ सीदित करय? साधुत्रस्त रहय, दण्डित होअय? उद्दण्ड राजा बनि अनाचार, अत्याचारकेँ नीति कय कोलाहल मचबय, लोक स हाहाकार करबय?

देश थिक भूमि। केवल भू भूमि भेनेँ ई लोकक पूज्य नहि। पृथ्वी थिक पैध। बेस बहुत पैध वस्तु सृष्टिमे, ब्रह्माण्डमे दीप्त, गतिमान्, विशाल, लोकक दृष्टिमे अबै अछि। के ककरा पूजै अछि? प्रातःकाल सूतिउठि प्रथम एतयक लोक पृथ्वीकेँ समुद्रमेखला, पर्वतस्तनमण्डला, विष्णुपत्नी कहिंजे प्रणाम करै अछि सेहो फूसि। समुद्रक मेखला, पर्वतक स्तनमण्डल, ओ विष्णुक पात्नीत्व केवल बजबाक चमत्कार थिक। समुद्र थिक विशाल ओ गम्भीर। ओकर सौंदर्य ओकर भयमे विलीन अछि। पर्वत थिक उच्च ओ विशाल। ओकरा रूप अछि। परन्तु ओकर स्पर्श केहन कठोर? रत्नमण्डित सुवर्णक कर्णभूषण, कण्ठाभरण, कंकण ओ कटिबन्ध, सिन्दूरकृत मस्तक, रक्तवर्णाङ्कित हस्त ओ चरण, चम्पक कुसुम नील आदि नाना रंगक साड़ीयुक्त स्त्री यदि मनुष्यक पूज्य नहि त ऊबर खाबड़, अथाह समुद्र ओ उच्च गिरिश्रृङ्गबाली, विकट पृथ्वी ओकर स्तुत्य कोना हयत? परन्तु स्त्री ओ विकट ओकर पूज्य भेल अछि। कालरात्रिक अभेद्य अन्धकार सन कारी, रक्तनेत्र, मुण्डक माला, मुण्डहिक कटिवेष्टन, एक हाथमे खड्ग दोसरमे खप्परि, तेसरमे असुरक छिन्न रक्तक्लिन्न मस्तक, रक्तपान लेल बहिर्गत जिह्वा, पयर तर पीचल पति महादेव, ताहि भैरवि असुरनाशिनी भगवतीकेँ माता, जगन्माता, कहि लोक प्रणाम करै अछि, मिष्ठान्न ओ प्राणवानकेँ हुनक प्रसाद कय अमृत मानि खाइ अछि। जे मैथिल ओ भारतीय वेदक उषाकेँ कोमल, गौर, नवोढ़ बधू कहि ओकर सौन्दर्य स मुग्ध भऽ ओकरा देवकन्या कहल, देवता बनाय सहस्त्र वर्षधरि पूजल से कट-कट विकट ओठवालीनारीक रूपसँ प्रसन्न हयत, ओकरा माय कहि ओकर पयर पड़त ई अयुक्त, आश्चर्य नहि? रूपसँ भाव प्रबल अछि। रूपमे सुख अछि, भाव जीवन थिक। जीवन, तखन सुखा जीवन बिना सुख कतय? उषा रुप देखाओल, सुखदेल। भैरवि भाव, जीवन देअय अयली। रूपवती, प्रत्यह सूर्यक अग्रसरी उषाकेँ लोक विसरि देल, भयाओनि भैरविकेँ ठामठाम स्थापित कय हुनक दर्शन ओ बन्दन कयल।

भारतक रूप उषा सन सुन्दर अछि। एकर बन ओ गिरिगुहा साप, विच्छ, हुड़ाड़, बाघ आदि हिंस्र पशु सँ, घर ओ समाज मनुक्खसँ बेसी बनमानुखसँ भरल अछि। विकट रूप भइओ भैरवि जकाँ लोकक जान नहि बचाओत त की लेल एकरा के ओ भजत? भूमि, पृथ्वी, मही, अचला ओ अनन्ता भ' नहि; रसा, स्थिरा, धरा, धरित्री, धरणी, वसुमति, वसुधा, वसुन्धरा, विश्वम्भरा ओ सर्वसहा भ लोक ओ जीवन पूज्य हयत। भारतक भूमि धरणी ओ वसुमति थिक ठीक। तैं एतयक लोक एकर भक्ति करय चाहै अछि। बहुतक लेल ई रत्नगर्भा, धात्री भेल अछि। से सब एकरा पूजल। बड़ उचित कयल। बहुतक लेल ई केवल सर्वसहा भेलि। नाना अन्याय, अत्याचार, विपत्ति ओकरा आयल, एहि भूमिमे कनेको कम्पन नहि भेल। ओ एहि अचला, विरूपा हृदयहीना कैँ माय कोना कहत, एकर पयर कोना धरत, एकर सम्मान ओ रक्षा लेल कटिबद्ध, प्राणपण कोना हयत। मनुष्य सहस्त्र लक्ष विषय लेल मूर्ख अछि, अपन रक्षाक विषयमे ओ बहुधा सजग रहै अछि। भारतक भूमि ओकर नहि त ओ भारत-भूमिक नहि हयत।

देश द्रोहकैँ नीक के कहत? हत्याकैँ नीक के कहै अछि? हत्यामे घातक ओ एकरा एहि क्रूर कर्ममे उत्साह देनिहार दुनू प्राणदण्डक भागी होइ अछि। विवश भ आत्मरक्षा लेल हत्या केनिहार अदण्ड्य अछि। देशद्रोहुक सैह अवस्था। ओहूमे ओकरे नियम चाही। स्वतन्त्र भ स्वार्थ लेल देशक जे द्रोह, अहित करय से एवं ओकरा जे उत्साह देअय सब दण्ड्य। विवश भ आत्मरक्षा लेल जे एकर अहित करय से उदण्ड्य हो तखन वध दण्डक सिद्धान्त देशद्रोहमे लागत वधमे हत ओ घातक पर राजा विचार करैत अछि। एहिमे हानि हत प्रजाक, तैं राजा निष्पक्ष भऽ न्याय करत। देशद्रोहमे हानि राजाक, तैं ओकर बुद्धि एहिमे न्याय पर रहत से कठिन। परन्तु राजा होइ अछि प्रबल। अपनाकैँ ओ आनक न्यायमे नहि देत। ओ अन्याय करय त न्याय चाहनिहार बलशाली बनि ओकरा प्रति विद्रोह करय, ओकर दण्ड करय, न्यायक सैह टा उपाय। राजा अपना प्रति पीड़ितक विद्रोहकैँ राजद्रोह कहत; ताहि स प्रजामे ओकर रक्षा लेल उत्साह नहि आयत त एकरा देशद्रोह नाम देत जे प्रजा राजाक प्रति द्रोहकैँ अपना प्रति मानय, ओकर निराकरण लेल सयत्न होअय। राजा अपन समस्त विरोध कैँ देशद्रोह कहत, अपन भावकैँ देशभक्ति ओ अपन वृत्तिकैँ देशहित। अपन विरोधीक दमन लेल राजा वैदेशिकक मददि लेत त ओकरा राष्ट्रक ऋण कहत। विरोध शान्त होइत ऋणक समस्त द्रव्य ओ प्रजासँ लेत। विरोधी अपन सहायता लेल वैदेशिकक

सम्पर्क करय त ओ देशद्रोही कहाय जहल वा फाँसी जायत, अपन धनवित्तसँ हाथ धोयत।

भक्ति ओ द्रोहक बल ओ विजयमूलक एहि अर्थमे तत्त्व अछि। प्रजातन्त्र अधिक मतक शासन कहबै अछि। अधिक मत अधिक संख्याक अधिक बल भेल। एहि विचार-सरणि केँ उनटाउ। विजय हो अधिक बलेँ। अधिक बल अधिक संख्याक भेल। अधिक संख्याक अधिक मत। तकर शासन प्रजातन्त्र। अर्थात् विजयवान् बलवानक मत प्रजाकमत, ओकर शासन प्रजाक शासन। प्रजाहुक भाव किछु एहने देखै छी। राजकीय समस्त कर्मक आधार तखन बल भेल। एहेन अवस्थामे बल ओ संख्या लेल लोक यत्न करत। अल्प-बल, अल्पसंख्यक गुप्त भ अपन संख्या ओ बल बढ़ाओत, सबल, बहुसंख्य होइतहिँ विद्रोहक घोषणा करत। राजा ओकर दमन लेल सैन्यक संचालन करत। देशमे युद्ध हयत, अत्याचार ओ कष्ट आयत।

राजाक स्वार्थ ओ उपद्रव एवं पीड़ित प्रजाक विरोध ओ विद्रोह सब देशमे सतत चलैत अछि। कतहु कम, कतहु बेसी। राजाक सैन्यबल बृहत् होइ अछि। प्रजाक पीड़ा केहनो उत्कट हो केवल अपन भरोसे ओ राजासँ विद्रोह नहि करत, करत त खण्डित हयत। विद्रोही प्रजाक अवसर अबै अछि जखन ओकर नृशंस राजः दोसर राजा स संघर्ष मे पड़ै अछि। विद्रोही तखन गुप्त वा प्रकट भ वैदेशिक राजाक सहायता करत, संगदेत। वैदेशिक राजा चतुर ओ उदार भेल त शत्रुराजाक शमन, नाश कय ओकर प्रजाहिकेँ राजकाज चलबय देत, लोलुप ओ अल्पबुद्धि रहल त स्वयं सब हाथमे लेत।

भारतक राजालोकनिक व्यवहारसँ देश ओ विदेश दूनूठाँ रोष अछि। प्रधानमन्त्रीक दर्शन ओ चरण स्पर्श लेल लाखकलाख लोक मारि करै अछि। से हुनका मे प्रजाक अनुरागक लक्षण थिक ठीक। परन्तु ई अनुराग प्रधानमन्त्रीक महत्व लेल बेस, देशक रक्षाक उपाय नहि। राजाक दरस परस लेल लक्खा लोक आकुल भ दौड़ै अछि। बाल, वृद्ध, रुग्ण, ओ स्त्रीक चिन्ता नहि; कतहु केओ खसल, पीचल गेल, किकिआइ अछि, प्राण दै अछि, के सुनत? लक्ष कष्ठसँ राष्ट्रपिताक, राष्ट्रपतिक, प्रधानमन्त्रीक जय मूढ़ पीड़ितक चीत्कारकेँ दैन्यक महाघोषमे विलीन कय दै अछि। प्रधानमन्त्री अपना प्रति जनसमुद्रक एहि उद्गारकेँ देखि प्रसन्न होइ छथि। देशक मनस्वी एहिसँ उदास होइ अछि। ओ की करत? एकर निन्दा बाजल त लोक ओ प्रधान दूनू कहत, ई डाही अछि; अपना नहि केओ पूछै छै तँ महामन्त्री महापुरुषक सत्कार देखि जरै अछि। देशक प्रजा ओ राजामे

अविवेकक ई अन्धकार आसन्न विपत्तिक लक्षण थिक। अज्ञान लोक सत्कर्म स नहि, गौरव स अनुकूल हयत। भारतक वर्त्तमान राजा से खूब बूझल। ओ एतयक लोककेँ दिन राति भाषण, संवादपत्र, रेडियो सिनेमा आदि द्वारा कहल, विदेशमे भारतक वर्त्तमान राजाक प्रतिष्ठा सर्वोपरि अछि। लोक पर एकर असरि खूब भेल। जाहिठाँ पयर पर लक्ष खसै छल ततए दस लक्ष खसय लागल। भारतीय राजा अपन प्रजाक एहि भक्ति-कर्मक चित्र सिनेमा द्वारा विदेशक लोककेँ देखाओल, कहल, भारतक राजा अपन लक्षकोटि प्रजाक भक्ति-भाजन छथि। ओतहुक लोक पर एहि महाभक्तिक असरि भेल। ओहो भारतक राजाक सम्मान बढ़ा देल।

राजभक्तिक उत्साह भारतक प्रजामे एखन खूब अछि, घटैक लक्षण नहि। परन्तु विदेशक लोक आब हुनक सत्कार कय थाकि गेल। ओ हुनका हल्लुक करयमे लागल। इङ्गलैण्ड ओ अमेरिका पाकिस्तानकेँ पहलमान बनाय हिनका खिलाफ ठाढ़ कयल। चीन ओ रूस हिनक गौरब तोड़य लेल नाना उपाय करय लागल

देशक पूब ओ पश्चिम पाकिस्तान तालठोकै अछि, जखन-तखन झाँट लथार चलबै अछि। अमेरिका ओकरा पीठ पर अछि। ओ निर्भय अछि। उत्तरमे चीन भोट पर कब्जा कयल। भारतक राजा आठ वर्ष भेल तकरा सहर्ष मानि लेल। चीन आब भोट स दक्षिण हिमालय ओ भारत दिस तकै अछि। हिमालयकेँ कश्मीर स असाम तक ओ अपन नक्शामे दर्ज कयल। भारतमे तकर निन्दा भेलतँ चीनकराजा कहल, भारत ओ चीनक सीमा निश्चित नहि, मेलहिसँ निश्चय कय लेल जाय। बस, उत्तर सीमा खतम भ गेल। चीन सुविधा पबितहि खुलि कय ओकर विवाद ठानत। हिमालय-जातिक लोक बहुत अछि। भोट देशमे चीन अपन अधिकार सुव्यस्त कय कहत, हिमालयक लोक भोटिया थिक, ई भूमि भोटिया जातिक भेल। भोटियाक संगेँ ई भोट देशस मिलय।

भारत तखन की करत? भारतक राजा ताहि दिन लेल की तैयारी कयल? बल हिनक देखल गेल! सबसँ बलगर वायुयान पाकिस्तान दिस हुलकी देल, ओकर जहाज क्षणभरिमे एकरा मारि खसाओल। भारतक राजा कछमछ कय रहल। हिनका बुद्धि व्याधि भेल अछि। प्रजामे केओ हिनका विचार नहि देअय। राजा सर्वज्ञ छथि। प्रजा भेल से राजाक आज्ञा करय। ओकरा बुद्धि देअयक घमण्ड नहि करय। अपन बुद्धि हुनक यैह, अंगरेज जे सैन्यविधि भारतमे कायम कय गेल तकरा ई एखन धरि अक्षुण्ण राखल। अंगरेजक समयमे ओकरा डर छल

रूसस तें ओ भारतक पश्चिमोतर भागमे सैन्य बलक सर्वोपरि संचय कयल। पश्चिमोत्तरक व्यवस्था एखनहु भयानक अछिए। नवीन भय आब समस्त उत्तरापथकेँ चीनस उपस्थित अछि। ताहि लेल लखनउ, बनारससँ पूब सैनिकक एकटा गृह, शिक्षालय नहि बनल। लखनउ स सदिया तक पाँच सय कोसक लोक सैनिक कोना चलय सेहो नहि एखन धरि देखल, ओ केवल राजाक पयर पर खसै जनै अछि। चीनक सेनाक अवरोध ओ कोना करत? ओकर पयर पड़ि? सैह टा ओ कय सकै अछि। सैहटा ओकर राजा ओकरा सिखाओल अछि। यावत् भारतक राजा दिल्लीक राजभवनमे कायम छथि, ओतएसँ ''मेघदूतेँ'' प्रजातक जाइ छथि तावत् ई प्रजा हुनक चरण धरत, जाहि दिन वैदेशिक खड्गहस्त एतय उतरत ताहि दिन ओ ओकर धूप आरती करत, ओकर राजाकेँ राजा मानि ओकर अभिषेक ओ चुमाओन करत।

भारतक रक्षा एकर राजा ओ प्रजा ककरो अज्ञान ओ अहङ्कारेँ नहि, दुनूक सौमनस्य, संघटनेँ, दृढ़ ओ विशाल सैन्यवलेँ हयत। सौमनस्यक विघटन एतय राजाक कयल थिक। वैह एकरा फेर जोड़य। एहि भरोसेँ जुनि रहए जे एकर जीवन कहुना दिल्लीक राजभवनमे कहिए जायत। पाकिस्तानक सैनिक वायुयान ओकरा देखि गेल अछि। चीन सेहो तैयारीमे अछि। एहन नहि हो, भातक राजा गौड़क अधिपति लक्ष्मणसेन जकाँ नवद्वीपक प्रासादमे आलस्य ओ घमण्डमे पड़ल हो तखन दस टा सैनिक कतहुसँ धब्बद आबि राजधानी ओ एहि राष्ट्रपर विजय ओ अधिकार कय लेअय। एतयक राजा एतएक लोककेँ सत्वर बुझबओ, ई देश केवल भूमि नहि, ओकर धरणी वसुमती, विश्वम्भरा थिक। एकरहि रखने ओ स्वयं रहत, एकरा गेने ओकर जीवन, मान सब जायत। एखन एहि भूमिमे लोक अपन जननी देखत, एकरा माता कहि नतमस्तक हयत, एकर रक्षा लेल सन्नद्ध, आतुर हयत, एकर जय कहत, एकरा लेल प्राण देत!

(1959)

□□

Vijay ...

4. परिशिष्ट

(१) डॉ० लक्ष्मण झाक प्रकाशित ग्रंथ

(२) डॉ० लक्ष्मण झाक अप्रकाशित ग्रंथ

(३) स्तम्भ लेखकक रूपमे डॉ० लक्ष्मण झा द्वारा अंगरेजीमे लिखल आलेख जे इंडियन नेशन, पटनामे प्रकाशित अछि।

डॉ० लक्ष्मण झाक प्रकाशित ग्रंथ

अंगरेजी : (प्रकाशकः- मिथिला मंडल, दरभंगा)

1. मिथिला एण्ड मगध, 700-1100इ० (1948)
2. मिथिला ए युनियन रिपब्लिक (1951)
3. मिथिला इन इंडिया (1953)
4. मिथिला ए सोभेरेन रिपब्लिक (1954)
5. मिथिला विल राइज (1955)
6. द नौरदर्न बोर्डर (1955)
7. द भोटर्स इन मिथिला (1956)
8. द टीचर्स इन मिथिला (1956)
9. मिथिला सोशलिस्ट पार्टी
10. द वर्ल्ड युनियन (1956)
11. युनिभर्सिटी फॉर मिथिला (1956)

मैथिली :

1. मिथिला भाषा (1952)
2. मिथिलाक उद्धार (1955)
3. मिथिलाक मुक्ति (1956)

हिन्दी :

1. लण्डन के पत्र (1949).



डॉ० लक्ष्मण झाक अप्रकाशित ग्रन्थ

अंगरेजी :

नाम		रचनाक समय
1. होम एण्ड वर्ल्ड	-	1950-56.
2. पोलिटिक्स	-	1959.
3. फिलौस्फी	-	1960.
4. इकोनोमिक्स	-	1961.
5. वर्ल्ड ऑन फायर	-	1960-65.
6. गॉड एण्ड मैन	-	1966-71
7. मैन एण्ड नेचर	-	1971-72.
8. डेमोक्रेटिक डिक्टेटरशिप	-	1972-75
9. मेन एण्ड गॉड	-	1976-80
10. लाइफ एण्ड टाइम्स	-	1981
11. पोलिटिक्स एण्ड प्रौब्लेम	-	1981-82.
12. वाल्डरनेश एण्ड लाइट	-	1984.
13. ब्रेड फॉर बेडलेम	-	1985.
14. वार ऑन लाइफ	-	1985.
15. हेवेन इन हेयर	-	1985.
16. ह्वेयर टू गो?	-	1985-86.
17. वर्क एण्ड वेजेज	-	1986.
18. प्राइस ऑफ प्रोस्पेरिटी	-	1986.
19. गुडवाई	-	1986.
20. फ्रीडम : इट्स रुट्स एण्ड फेसेज	-	1987-88
21. टाइम टू डाई	-	1987-88
22. फियर ऑफ लाईफ	-	1988

23. क्राई हेल्प - 1989.
24. द विल्ड - 1989.
25. हिरोइन एण्ड लाइम लाईट - 1989.
26. ग्रेप्स आर साबर - 1989-90
27. नो नान्सेन्स राईम - 1990-91
28. थाउट्स एण्ड कमेन्ट्स - 1991-92

संस्कृत :

1. भाववेदः - 1962-63.
2. लोकवृत्तम - 1963-64.
3. धर्म सिद्धिः - 1964-65.
4. राजनीतिः - 1965-66.
5. ब्रह्म विहारः - 1966-68.
6. कलि कथाः - 1973-74.
7. धर्म कथाः - 1982-83.

मैथिली :

1. मिथिला - 1952-53.
2. मिथिलाक इतिहास - 1955-59
3. भारतक रक्षा - 1960
4. सज्जन चरित - 1963
5. लोक ओ वेद - 1968-71
6. प्राचीन कथा - 1980-81.

हिन्दी :

1. लण्डन - 1948
2. हिन्दी - 1968
3. ब्रह्म ओ ब्राह्मण - 1972-73

4. दुर्दशा	-	1974-75.
5. स्वराज्य ओभारत	-	1983.
6. मुसलमान कालीन मिथिला	-	1984.
7. कोशी	-	1984-85.
8. दोष ओ दुःख	-	1985.
9. ब्रह्मपाद	-	1986.
10. भारत क्या करे?	-	1986-87.

❑❑

Articles wrilten by Dr. Laksman Jha and Publishad by the Indian Nation, Patna during February 1963 to March 1972, as a ragular Columnist.

Articles	-	Day	-	Date - Month - Year
1. Fight the Enemy	-	Sat	-	2 - Feb. - 1963.
2. Never Backward	-	Sat	-	18- " - "
3. Victory In Sight	-	Sun	-	10- March -"
4. Railways For Defence	-	Sat	-	16- " - "
5. Dams In The Himalaya	-	Thu	-	4 - April - "
6. Sanskrit For India	-	Thu	-	18- " - "
7. Steel Plant At Bokaro	-	Fri	-	24- May - "
8. University For Darbhanga	-	Sun	-	26- " - "
9. New Asia	-	Tues	-	27- June - "
10. Socialism In Congress	-	Thur	-	29- June. - "
11. Conspiracy Against Character	-	Fri	-	26- July. - "
12. The west In Asia	-	Mon	-	29- " - "
13. Art of Treason	-	Sat	-	24- Ang - "
14. Food For Thought	-	Tues	-	27- " - "
15. World Government	-	Tues	-	24- Sep - "
16. Party and Power	-	Sun	-	29- " - "
17. Caste And Party	-	Sat	-	26- Oct. - "
18. The New world	-	Tues	-	29- " - "
19. Future OF Socialism	-	Thu	-	28- Nov - "
20. Source OF Discipline	-	Sat	-	30- " - "

21. Progress In People	Tues	24	Dec.	"
22. American Policy	Tues	31	Dec.	"
23. Spirit IN West	Tues	23	Jan.	1964
24. Indian Freedom	Mon.	17	Feb.	"
25. Downfill Company	Sun	23	Feb.	"
26. Death OF Brahman	Teus	25	Feb	"
27. Feast OF Death	Sun	22	March	"
28. Socialist Unity	Sat	28	March	"
29. Capitalism Grows UP	Mon	30	March	"
30. Return to Sanity	Mon.	20	Apri	"
31. Dangerans Build UP	Tues	21	April	"
32. Price OF Unity	Mon.	27	April	"
33. Money And Mission	Thu.	21	May	"
34. Face OF Heaven	Sat	23	May.	"
35. Secular Religion	Sat	11	Jul.	"
36. Fools OF Nature	Thur	23	"	"
37. Common Man's Burden	Tues	28	"	"
38. God wins Again	Tues	24	Aug	"
39. Foundation OF University	Tues	29	Sep	"
40. Better Than God	Thur	1	Oct.	"
41. The Burden OF wisdom	Sat.	24	Oct.	"
42. Verdict OF Power	Thurs.	29	"	"
43. Atom Bomb For India	Sat	31	Oct.	"
44. Higher Proffessions	Tues	24	Nov.	"
45. Cover OF Cowardice	Sun	29	Nov.	"
46. State OF Archaeology	Tues	22	Dec.	"

47. Primitive Protocol	-	Sat.	-	26	- Dec.	-	"
48. United Nations	-	Sat	-	30	- Jan	-	1965
49. Language For India	-	Thur	-	25	- Feb	-	"
50. Doctors In Distress	-	Friday	-	26	- "	-"	
51. Heart OF Khadi	-	Sat.	-	27	- Feb.	-	"
52. Paper Tiger	-	Thurs	-	29	- April	-	1965
53. Soul OF India	-	Mon.	-	24	- May	-	"
54. American Character	-	Thur.	-	24	- June	-	"
55. Sale OF Soul	-	Thus.	-	29	- "	-	"
56. Deluge Again	-	Sat.	-	24	- Jul.	-	"
57. Annexation of Universe	-	Mon.	-	26	- "	-	"
58. Virtue of Strenghth	-	Tues.	-	24	- Aug.	-	"
59. China and Pakistan	-	Fri.	-	24	- Sept.	-	"
60. Natural Territory	-	Fri.	-	29	- Oct.	-	"
61. Homelands For Races	-	Fri.	-	29	- Nov.	-	"
62. Balance OF Power	-	Wed.	-	29	- Dec.	-	"
63. World And Power	-	Tues.	-	25	- Jan.	-	1966
64. Man OF Straw	-	Wed.	-	23	- Feb.	-	"
65. Fruits OF Frustation	-	Thu.	-	24	- Mar.	-	"
66. Right Strategy	-	Sat.	-	7	- May.	-	"
67. Enemy Is Here	-	Sat.	-	21	- "	-	"
68. Atomic Politics	-	Wed.	-	29	- June.	-	"
69. Ethics OF Money	-	Thurs.	-	7	- July.	-	"
70. Cavement At Large	-	Thurs.	-	25	- Aug.	-	"
71. End OF Delusion	-	Thurs.	-	22	- Sep.	-	"
72. Wrath OF Nature	-	Thurs.	-	27	- Oct.	-	"

73. Odd Man Out	-	Thurs.	-	1-	Dec.-	"		
74. Troubled Water	-	Tues.	-	27	- "	-	"	
75. Sow on Sand	-	Tues.	-	19-	- Jan.	-	1967	
76. Cow And Man	-	Tues.	-	24-	Jan	-	"	
77. Stars OF Dark	-	Fri.	-	24-	Feb.	-	"	
78. Philanthropy By Design	-	Wed.	-	22-	March	-	"	
79. Tears For Sale	-	Sat	-	29-	April-	"		
80. Time For India	-	Fri.	-	26-	May.	-	"	
81. Indian Tangle	-	Mon.	-	26-	June.	-	"	
82. Visions OF Grief	-	Thurs.	-	27-	July.	-	"	
83. Fruits OF Aggression	-	Sat.	-	26-	Aug.-	1967		
84. Secular Schizophrenia	-	Sat.	-	30-	Sept.	-	"	
85. India Is Reborn	-	Sun.	-	26-	Nov.-	"		
86. Test OF Man	-	Thurs.	-	4	- Jan.	-	1968	
87. Democratic Fascism	-	Fri.	-	26-	"	-	"	
88. Wind, Whirlwind	-	Sat.	-	24-	Feb.	-	"	
89. Voice OF Conscience	-	Mon.	-	25-	March	-	"	
90. Politics and Poetry	-	Tues.	-	23-	Apr.	-	"	
91. Marx And Maxmuller.	-	Fri.	-	24-	May	-	"	
92. Socialism In Vedas	-	Fri.	-	31-	May	-	"	
93. Communist Obscurantism	-	Tues	-	25-	Jun.-	"		
94. India and Russia	-	Tues	-	3	- Sept.	-	"	
95. Shameful Tale	-	Sat.	-	2	- Nov.-	"		
96. Hospital Is Hell	-	x	-	20-	Nov.-	"		
97. House OF Cards	-	x	-	18-	Dec.-	"		
98. Soul on Hot Sand	-	Sun.	-	26-	Jan.	-	1969	

99. Political Path	-	x	-	23-	Feb.	-	"
100. Goodness And Unity	-	x	-	23-	March.	-	"
101. Einstein's Absolute	-	Thurs.	-	24-	April	-	"
102. Anxious Words On Himalaya	-	Mon.	-	26-	May-"		"
103. Passage To India	-	Tues.	-	1 -	July	-	"
104. Dust And Gravel	-	x	-	22-	July	-	"
105. Submen, Supermen	-	x	-	24-	Augeust	-	"
106. Science without Sense	-	x	-	23-	Sept.	-	"
107. Beautiful City	-	x	-	24-	Oct.	-	"
108. People And Government	-	x	-	21-	Nov.	-	"
109. Serpent And Swine	-	x	-	21-	Jan	-	1970
110. Modern Medicine	-	Fri.	-	30-	Jan.	-	"
111. Art OF Government	-	Mon.	-	23-	Feb	-	"
112. University And Party	-	x	-	24-	March	-	"
113. Age OF Science	-	x	-	19-	April	-	"
114. Desperate Remedies	-	x	-	14-	May.	-	"
115. Wrong Endeavours	-	x	-	21-	June.	-	"
116. Politics OF Passion	-	x	-	22-	July.	-	"
117. People And Press	-	x	-	21-	August	-	"
118. Freedom OF Jungle	-	x	-	20-	Sept.	-	"
119. Organised Corruption	-	x	-	21-	Sept.	-	"
120. Law And order	-	x	-	23-	Oct.	-	"
121. God And Man	-	Fri	-	27-	Nov.	-	"
122. Dom's Home	-	x	-	18-	Dec.	-	"
123. Thoughts On Election	-	Thurs.	-	4 -	Feb.	-	1971.
124. A Vast Den OF Brutes	-	Tues.	-	2 -	March.	-	"

125. Election	-	x	-	17-	March	-	"
126. East Bengal (i)	-	x	-	22-	April	-	"
127. East Bengal (ii)	-	x	-	21-	May.	-	"
128. World Community	-	Sun.	-	20-	June.	-	"
129. Urban And Rural	-	Wed.	-	28-	July	-	"
130. Country Is Captured	-	x	-	19-	March	-	1972.

□□